लेखक :—

रामसिंह वर्म्मा ।

नाट्य-ग्रन्थमालाका द्वितीय पुष्प।

सचित्र सामयिक नाटक

प्रकाशक
एस. आर. बेरी एण्ड कम्पनी
२०२, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रथम संस्करण १०००
सम्वत् १९८०
मूल्य सादी १)
„ रेशमी १।।)

प्रकाशक—

श्रीराम बेरी,

नं० २०१ हरिसन रोड, कलकत्ता।
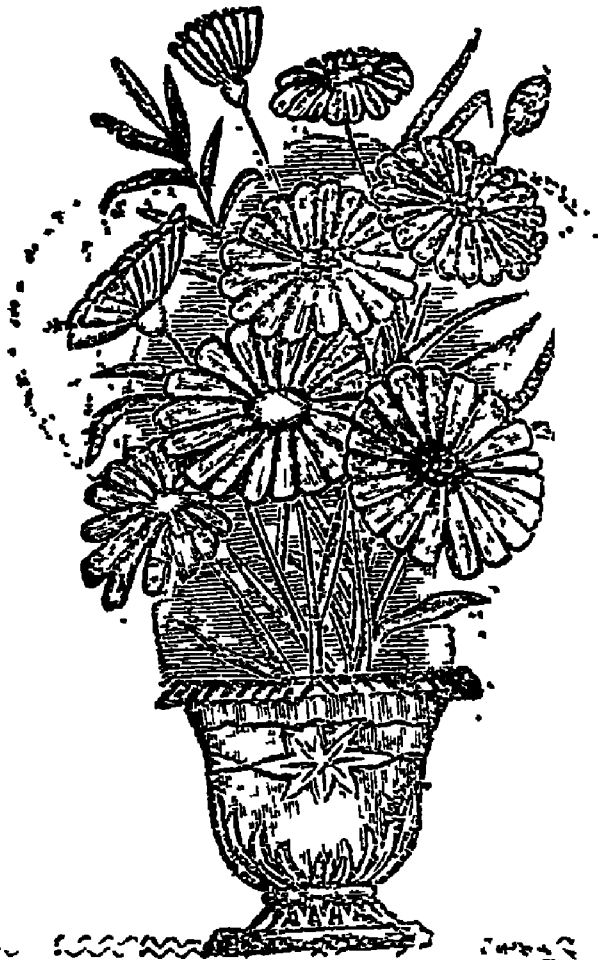
BAN... ...LI V... ...
Centr.l Library
Acc... No 4349
... 5349

मुद्रक—मुन्शी हरिहरलाल।
"श्रीहरी प्रेस"
२०१ हरिसनरोड, कलकत्ता।

डाक्टर रामभूषण चौधरी ।

अर्पण
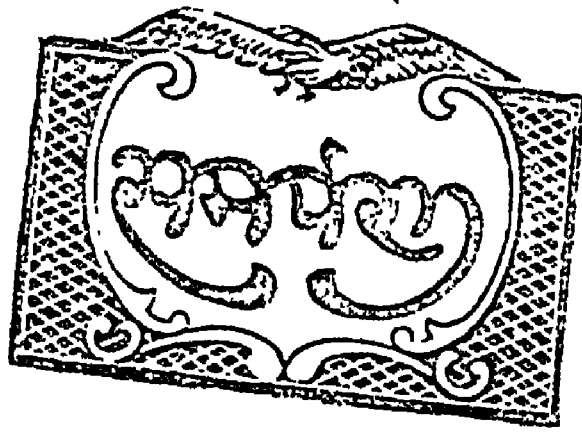
नाट्य कलाके प्रेमी, साहित्यानुरागी स्थानीय 'बजरङ्ग परिषद्'के सभापति, डाक्टर

रामभूषण चौधरी

के

करकमलोंमें सादर

समर्पित ।

"लेखक"

प्रेमोपहार

पात्र-परिचय।

पुरुष पात्र।

१, हीरालाल—एक कुलीन ब्राह्मण वंशीय धनाढ्य नवयुवक।

२, अभयचन्द—हीरालालका कपटी मित्र, रण्डियोंका दलाल।

३, वैसाखनन्दन—अभयचन्दका धनाढ्य मित्र।

४, रामदास—एक कुलीन ब्राह्मण वंशीय दरिद्र, पश्चात हीरालालका "स्वामि-भक्त" सेवक।

५, भड़चन्द बहादुर—एक वेवकूफ धनाढ्य, महाराजाकी पदवीका उपासक।

६, फटकचन्द—धोखेवाज डाकूर तथा अभयके दलका प्रधान कार्य्य कर्ता।

इसके अतिरिक्त सूत्रधार, नान्दी, सफरदे, मुसाहिव, मुसाफिर, वदमाश, सिपाही, इन्स्पेकृर, नौकर, अमीन, प्यादे, सरकारी वकील, और चपरासी इत्यादि,

स्त्री पात्रियां।

१, सरस्वती—हीरालालकी पतिव्रता स्त्री।

२, कमलावती—हीरालालकी आदर्श बहन।

३, मुन्ना वेश्या—परिचय व्यर्थ है।

४, लपेटी—राय भड़चन्दकी पुत्री।

५, सुन्दरी— राय भड़चन्दकी स्त्री।

६, यमुना—मुन्नाकी "स्वामि-भक्त" दासी।

इसके अतिरिक्त नटी, सहेलियां इत्यादि।

प्रस्तावना।

भारतका आदर्श "स्वामि-भक्ति" है। स्त्रियाँ अपने स्वामीके लिये धन, मान यहाँतक कि जीवन भी उत्सर्ग करनेके लिये प्रस्तुत रहती हैं। भारतवर्ष इस आदर्शकी खान है। इस शिक्षाका विद्यालय है। इस उज्वल लीलाका आनन्द निकेतन है। राजस्थानका प्रत्येक धूल-कण इस बातकी साक्षी दे रहा है, वायु अनुमोदन कर रही है, चिता-भस्म समर्थन कर रही है। उसी तरह दास भी अपने स्वामीके लिये सर्वस्व त्यागनेको प्रस्तुत रहता है। यदि सच्चा स्वामि-भक्त है, यदि वास्तवमें उसमें स्वामीके प्रति प्रेम है, यदि सचमुचही वह अपना कर्त्तव्य समझता है। तो स्वामीके लिये अपनेको उत्सर्ग कर देना—कोई बड़ी बात नहीं है। वह समझता है, यह जीवनही किस लिये, यदि उससे स्वामीका उपकार न हुआ। आज भी भामाशाहकी "स्वामि-भक्ति" जगत-प्रसिद्ध है। आज भी स्वामि-सेवाका उज्वल कर्त्तव्य पालन करनेके कारण हनुमान देवता माने जाते हैं, घर-घर उनकी पूजा होती है। आज भी राजस्थानकी भूमि घोषणा कर रही है, कि यदि "स्वामि-भक्त" भामाशाह न होते, तो राणा प्रतापका वह उज्वल सौभाग्य सूर्य, जिसने उनकी विजय-पताका फहरायी थी, जिसने उनके निराश जीवनमें आशाकी लहलहाती ज्योति जगा दी थी, जिसने उनके जीवनकी धाराही एक दूसरी ओर पलट दी थी—कभीका अस्त होगया होता।

परन्तु यह बहुत दिनोंकी बात होगयी, स्मृतिकी ओटमें छिपती जाती है, उसका आदर्श हृदय-पटलसे हटता जाता है। पश्चिमीय सभ्यताका प्रभाव और आदर्श-स्थापनका अभाव, उन गत घटनाओंको विस्मृति-सागरमें डुबोता जाता है। सुन्दर बात है, जो बाबू "रामसिंह"ने यह "स्वामि-भक्ति" नामक नाटक रचकर हिन्दी-भाषियोंके सम्मुख रखनेकी चेष्टा की है। आपका यह प्रथम प्रयास है। साहित्यमें आपका प्रथम प्रवेश है। अवस्थाके अनुसार उतना अधिक अनुभवका न होना भी एक स्वाभाविक बात है, तथापि आपका उद्देश्य सराहनीय है।

हम नाट्यकार नहीं, कवि नहीं,—ऐसी अवस्थामें इस नाटक पर अपनी कुछ सम्मति देना, और इसकी बारीकियोंके सम्बन्धमें कुछ कहना, या इस बातपर विचार करना, कि इसमें नाटकके गुण हैं या नहीं हैं, एक वृथा प्रयास है। पर साथही यह कहे बिना भी हम नहीं रह सकते, कि आपका उद्देश्य शुभ है। अभी आप साहित्य-क्षेत्रमें नये हैं। यदि आपको उत्साह मिला और आपने चेष्टा की, तो भविष्यमें आप और भी सुन्दर सुन्दर विषय लेकर साहित्य-क्षेत्रमें आ सकते हैं। आशा है, कि हिन्दी-संसार आपका उत्साह बढ़ानेकी चेष्टा करेगा।

चन्द्रशेखर पाठक।

नम्र-निवेदन ।

"स्वामि-भक्ति" को सभ्य सज्जनों, करता आदर सहित बखान ।
भूल चूक जो इसमें होवे, उसको कीजे क्षमा प्रदान ॥
विज्ञ नहीं हूं इन विषयोंसे, नहीं गया हूं इसके धाम ।
मैं हूं "बालक" वाचक वृन्दो, करता आदर सहित प्रणाम ॥

सज्जनो !

दीनबन्धु परम पिताकी पूर्ण कृपा और सच्चे सहायकों, इष्ट-मित्रों तथा परम आदरणीय बन्धु-बान्धओंकी दयासे मुझे आज अपनी क्षुद्र लेखनी द्वारा लिखित "स्वामि-भक्ति" नामक नाटक लेकर उपस्थित होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है । इसमें सन्देह नहीं कि प्रूफ देखने अथवा मेरी लेखनी द्वारा अनेक त्रुटियाँ रह गई होंगी । क्योंकि यह मेरा प्रथम प्रयास है, साहित्य क्षेत्रमें मैं बिलकुलही नया हूं । अतः माननीय पाठकजीके कथनानुसार साहित्यसे अनभिज्ञ रहना भी मेरी उन्नीस वर्षीय अवस्थाके अनुकूलही है । इनके लिये आप सबोंका क्षमा प्रार्थी हूं ।

नाटक साहित्यका प्रधान अंग है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्रसे नाटकका जल और मीन जैसा प्रगाढ़ सम्बन्ध है । विश्व-चित्रकारके चारु-चित्रोंका प्रतिबिम्ब उतारनेवाला, चरित-चित्रणमें विचित्र चतुरतासे चकाचौंध दिखानेवाला, असम्भवको भी सम्भव बनानेवाला यदि कोई है तो वह नाटकही है । जिस कार्य्यको बड़े-बड़े शूरवीर तपस्वी और राजा, महाराजातक सिद्ध नहीं कर

सकते, उसे नाट्य-कला सहजहीमें सिद्ध कर देती है। ईश्वरने भी सृष्टिकी रचना नाटककेही आधारपर की है। अस्तु यह कहन अत्युक्ति न होगा कि जिस देश व भाषामें नाटकका प्रचार नहीं, वह देश और भाषा सभ्य कहलानेका दावा नहीं कर सकती। खैर जो कुछ हो इस नाटकको शीघ्र तैय्यार करनेके लिये स्थानीय 'बजरंग परिषद्'के उत्साही कार्य्यकर्ताओंने मुझपर दबाव डाला। वे सभी मेरे परम-मित्र और श्रद्धाभाजन थे, मैं उनकी आज्ञा उल्लंघन न कर सका। साथही यह भी उक्त संस्थाके संचालकोंकी उदारताही है कि इसके प्रकाशित होतेही अपने यहाँ अभिनयार्थ चुन लिया है। अतः परिषद्के कार्य्यकर्ताओं तथा पात्रोंको अनन्त धन्यवाद है। अनन्तर प्रकाशक और प्रस्तावना लेखक एवं बाबू भानुमलजी अगरवाला, बलदेवप्रसाद खरे एवं शिवयत्नसिंहको जिनके द्वारा मुझे इस नाटकमें अच्छी सहायता प्राप्त हुई हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, और आशा करता हूं कि आपलोग इस बालकपर सदैव इसी प्रकारकी दया दिखाते रहेंगे।

कलकत्ता।
१-४-२३

रामसिंह वर्म्मा।
ताजकपुर, उन्नाव।
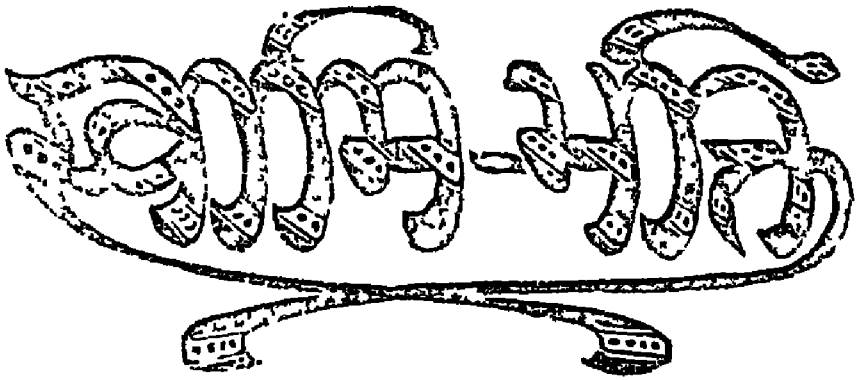
नाटक

प्रस्तावना

स्थान-नाट्यशाला ।

(सूत्रधारका स्वामिभक्तोंका गुणगान और वन्दना करते हुए प्रवेश)

गायन ।

स्वामीकी भक्ति करते हैं, जगतमें जो पुरुष नारी ।
रामको प्यारा था बजरंग, और सीता भी थी प्यारी ॥
सुकन्या, द्रौपदी, कुन्ती, अहिल्या, विपुला, सावित्री ।
धन्य इन देवियोंको, स्वामीकी भक्तिको उर धारी ॥
था स्वामी भक्त दुर्गादास, झाला और भामाशाह ।
इनके आचरणोंकी तारीफ, दुनिया करती है सारी ॥
गिनाऊं नाम किन किनका, हुए हैं जितने स्वामि-भक्त ।
सती शक्तिकी और भक्तिकी, है महिमा बड़ी भारी ॥
करूँ प्रणाम बारम्बार, उनके सत्य गौरवको ।
करी तारीफ़ कवियोंने, लिखत गुण शारदा हारी ॥

(नटीका प्रवेश)

नटी—नाथ ! आज आप इस तरह क्यों ईश्वराराधन त्यागकर चित्तको भक्तोंकी प्रार्थनामें लगा रहे हैं ?:—

क्यों नहीं करते हैं पूजन, उस निराओंकारका।
क्यों कर रहे पूजन हैं स्वामी, भक्तजन वेकारका ?

सूत्र०—नहीं प्रिये ! तुम भूल करती हो, यदि हमें सच्चा देशसेवक वनना है तो प्रथम अपने घरकी फिर ग्राम, नगर, तथा. प्रान्तकी सेवा करते हुए देशसेवामें अग्रसर होना चाहिये। कहनेका तात्पर्य्य यह है कि जगतपिता परमेश्वरकी सृष्टिका हमें स्वागत करना चाहिये। अतएव, उन महात्माओं तथा देवियोंका जिन्होंने अपना समस्त जीवन देश, समाज, और निज कर्त्तव्य-की वेदीपर वलिदान और दिया है, हमें जय जय कारके शब्दोंसे स्वागत करना एवं उनके चरित्रोंसे उपदेश ग्रहण करना चाहिये। यही कारण है, कि आज मैं उन सती देवियों तथा देश, समाज और स्वामि-भक्त सेवकोंके चरणोंमें प्रणाम कररहा हूँ।

नटी—अच्छा ! अभी इन वातोंको विश्राम दीजिये। देखिये आज यहाँ न जाने कितने धनीमानी सभ्य सज्जनगण पधारे हैं, शीघ्र इनके स्वागतका प्रवन्ध कीजिये।

सूत्र०—हां ! यह तो मैं भी देख रहा हूँ। परन्तु चिन्ता इसी बातकी है, कि इनका स्वागत करें तो किस वस्तुसे करें :—

पास पैसा जब नहीं, फिर किस तरह स्वागत करें।
देश तो कंगाल है, फिर किस तरह धीरज धरें॥
धन, धान्य जो कुछ था यहाँ, लूटा विदेशोंने उसे।
बरबाद हमको कर दिया, हम दाने २ को मरें॥

नटी—यह तो सत्य है, किन्तु आये हुए सज्जनोंका स्वागत तो अवश्यही करना होगा।

सूत्र०—तब तुम्हीं बताओ कि मैं किस वस्तुसे इन आगत सज्जनों का स्वागत करूँ?

नटी—नाथ! चिन्ता नहीं, यद्यपि यह आर्य्यावर्त विदेशियों द्वारा अनेकों बार लूटा जा चुका है, तथापि इस पवित्र देशमें धनकी कमी नहीं है।

सूत्र—हाँ! यह मैं मानता हूँ, किन्तु वह धन जिन अमीर उमराओंके पास है, वे उसको व्यय करना नहीं जानते। देशके दुःखियों और किसानोंके प्रति श्रद्धा त्याग, नूतन सभ्यताके पक्षपाती हो, शौकीनी एवं वेश्या-गमनमें अपना समस्त धन पानीकी तरह व्यय कर रहे हैं। फिर तुम्हीं बताओ, वे लोग किस तरह स्वागतके अधिकारी हो सकते हैं?

नटी०—नाथ! क्षमा करें, निःसन्देह इस समय यह अचेत निद्रामें पड़े शयन कर रहे हैं, किन्तु इनके भी जागनेका समय आ रहा है। देशकी वर्त्तमान स्थितिकी हुंकारने उनमेंसे कुछ मनुष्योंको उस अचेत निद्रासे जगा दिया है। जिनमें पूज्यवर त्याग मूर्त्ति पं० मोतीलाल नेहरू, देशबन्धु चित्तरञ्जन-

दास तथा सेठ जमनालाल बजाज आदिका नाम उल्ले-
खनीय है।

सूत्र०—परन्तु उन सज्जनोंमेंसे तो यहाँ कोई नहीं पधारे, फिर मैं
किसका स्वागत करूँ ?

नटी०—नाथ ! यद्यपि उन सज्जनोंमेंसे यहाँ कोई नहीं पधारे
तथापि उनसे श्रधा रखनेवाले तो अनेकानेक सज्जन
उपस्थित हैं। फिर तो आप अपने कथनानुसार ही इनका
स्वागत करनेको वाध्य हैं, क्योंकि आप प्रथम अपने मुखार-
विन्दसे ही कह चुके हैं कि भक्त जनोंका स्मरण और
स्वागत करना भी हमारा कर्त्तव्य है। अतएव अब मैं
आशा करती हूँ, कि आप भी इनके स्वागतके लिये
अवश्यही प्रस्तुत होंगे।

सूत्र०—हां ! प्रिये प्रस्तुत हूँ, सचमुच आज तुमने मेरी भूल सुझा
मेरा कर्त्तव्य मेरे सम्मुख रख दिया। बस जाओ, घरमें जो
कपड़े, लत्ते, गहने, जेवर हों उन्हें वेंच पुष्पादि तथा पान,
इलायची ला, इन सज्जनोंका स्वागत करो और यदि होसके
तो साथ ही साथ इनके भोजनका भी प्रवन्ध करो।

नटी—नाथ ! वास्तवमें इन आगत सज्जनोंके प्रति हमारा यही
कर्त्तव्य है, किन्तु आज तो इस समय इनका किसी अन्य
वस्तुसेही स्वागत कीजिये, जो उपदेशके साथही साथ
हास्यप्रद भी हो।

सूत्र०—क्या नाटक ?

नटी—हां ! किसी नाटककोही खेलकर इन आये हुए महानु-भावोंका स्वागत कीजिये ।

नाटक ऐसा खेलिये, उपदेशसे परिपूर्ण हो ।
शिक्षा ऐसी दीजिये, कि गर्व इनका चूर्ण हो ॥

सूत्र०—प्रिये ! बात तो तुमने बहुत ठीक कही, किन्तु आजकल नाटकका कुछ भी महत्व नहीं रह गया ।

नटी—किस प्रकार ?

सूत्र०—सुनो ! व्यापारिक ढङ्गसे काम करनेवाली थियेट्रिकल कम्पनियोंने सिर्फ पैसेके लोभसे नाटकके महत्वको नष्ट कर डाला ।

नटी०—यह कैसे ?

सूत्र०—ऐसे ! हमारी धर्म सुशीला सती देवियोंका पार्ट वेश्या-ओंको दे, उनके द्वारा नाज, नखरे एवं बुरे बुरे हाव, भाव तथा कटीले कटाक्ष करा उस पात्रोंके प्राकृतिक भावको नष्ट कर डाला। इधर हमलोगोंने भी प्रेमान्ध हो उनके कार्य्यकी श्रीवृद्धि कर अपने भी आचरणको प्रायः भ्रष्ट कर डाला ।

नटी—किन्तु नाथ ! भारतमें आज भी तो ऐसी अनेक संस्थायें हैं, जहां सिर्फ पुरुष ही पार्ट करते हैं ; और जिनका एकमात्र उद्देश्य देशोन्नति तथा मात्र-भाषाका प्रचारही होता है । तब आप भी इसी ध्येयको सम्मुख रख, किसी नाटकको इनके समक्ष उपस्थित कीजिये, ताकि इनका मन व्यापारिक कम्प-नियोंसे पृथक होजाय ।

सूत्र०—हां ! बात तो तुमने बहुत ठीक कही, किन्तु वे संस्थायें भी किसी कारणवश आजकल हताश होगई हैं।

नटी—नाथ ! वह कारण कौनसा है ?

सूत्र०—यही कि कुछ मनुष्य संस्थाओंका अभिनय फूटके वशीभूत हो सिर्फ इसीलिये देखने जाते हैं कि नाटकमें क्या २ त्रुटियाँ हुईं, जिससे पीछे उनको बुराई करनेका मौका हाथ लगे वे हमेशा इसी ताकमें रहते हैं कि यदि कोई पात्र अपने कार्यमें भूल करे तो तालियाँ पीटें और हुल्लड़ मचा अभिनयको सफलीभूत न होने दें।

नटी—नाथ ! कर्त्तव्यपरायण व्यक्तिके लिये इसकी कोई चिन्ता नहीं, कारण यह स्वभाविक है, कि अच्छे काममें अनेक बाधाओंका सामना करना पड़ता है। परन्तु वही पुरुष धन्य है, जो समस्त आपत्तियोंका सामना करता हुआ अपने कर्त्तव्य मार्गसे विचलित नहीं होता। दूसरे कवि "विलक्षण" के विलक्षण वाक्योंको स्मरण कीजिये।

सूत्र—वह क्या ?

नटी०—यही कि :—

गुणी जन मेरे दोषोंपर, न सहसा दृष्टि लायेंगे।
खुचरिया लोग खिचड़ी, डेढ़ चावलकी पकायेंगे॥
बुराई भी करेंगे कम, न होगी प्रीति औरों की।
कटीली केतकी पर, क्या न होगी भीड़ भौरोंकी॥

सूत्र०—बहुत अच्छा प्रिये ! अब मैं किसी नाटककोही खेलकर

इन आगत सज्जनोंका स्वागत करूँगा। परन्तु यह तो बताओ ? इस समय नाटकमें किस विषयका समावेश होना चाहिये, जो रंगमंचपर लाने योग्य और शिक्षाप्रद हो ?

नटी—प्राणेश ! जिन भक्तजनोंका आप गुणानुवाद कर रहे थे उन्हींमेंसे किसी भक्तके उत्तम चरित्रका सामयिक रूपमें दर्शन कराना अत्यन्तही लाभप्रद होगा ।

दिखावें चरित्र सीताका, या लावें द्रौपदी सन्मुख ।
बजावें भक्तिका डंका, दिखावें * शाह को सन्मुख ॥

सूत्र—प्रिये ! इन सती देवियों तथा स्वामिभक्त सेवकोंके चरित्रको सर्व साधारण न जाने कितनी बार देख चुके हैं ।

नटी—तब तो नाथ । उत्तम होगा, कि इन महानुभावोंके सन्मुख इसी विषयका कोई दूसरा नाटक उपस्थित किया जाय ।

सूत्र—किन्तु प्रिये ! चिन्ता इसी बातकी है, कि इस विषयका अभीतक कोई नवीन नाटक प्रकाशित नहीं हुआ ।

(नान्दीका प्रवेश)

नान्दी—सूत्रधार ! चिन्ता न करो, यह लो "स्वामिभक्ति" नामक नाटक, जिसको तुम्हारेही एक पात्र "रामसिंह वर्म्मा"ने लिखकर हाल ही में तैय्यार किया और कलकत्तेकी एस० आर० बेरी एण्ड कम्पनीने निज व्ययसे प्रकाशित किया है ।

---

* महाराणा प्रतापसिंहके स्वामि-भक्त सेवक भामाशाहसे हिन्दी साहित्य-सेवी भली भांति परिचित हैं ।

भाषा इसकी है सरल, सामयिक परिपूर्ण।
इसका तुम अभिनय करो, स्वागत हो सम्पूर्ण॥
स्वागत हो सम्पूर्ण, लोग शिक्षा भी पावें।
लोभ, मोहको त्याग, सभी अमृत पी जावें॥

वस! जाओ और इसे ही अभिनीत कर अपने प्यारे भाइयोंका स्वागत करो।

(पुस्तक देकर प्रस्थान)

सूत्र—प्रिये! अब विलम्ब न करो, क्योंकि विलम्ब होनेसे सज्जन अकुला जायेंगे। जल्द जाकर इस नाटकको खेलनेकी तैय्यारी करो।

नटी—जो आज्ञा प्राणेश!

(दोनों तरफसे सहेलियाँ हाथमें माला और फूल लियेप्रवेश करती हैं, सूत्रधार और नटीको माला पहनाकर सर्व साधारण पर फूल फेंकती हुई स्वागतका गाना गाती हैं।)

गायन।

सहेलियां—

स्वागत हम सब मिलके करतीं, आज तुम्हारा दर्शकगण।
हुआ कष्ट है बहुत आपको, क्षमा मांगती दर्शकगण॥
धन्य हमारा रंगमंच है, कीन्ह कृपा तम
स्वागत २ हम सब कर

किन्तु यही विनती है हमरी, भारत डूबा जाता है।
अब भी चेतो तजो ऐय्याशी, समय यही बतलाता है॥
अस्तु यही भिक्षा हम मांगें, भारतका उद्धार करो।
डूबा जाता देश तुम्हारा, जल्दी बेड़ा पार करो॥
हंसी, खुशीसे नाटक देखो, पर न भूलना दर्शकगण।
बुरे कामका बुरा नतीजा, सोचो समझो दर्शकगण॥

(प्रस्थान)

स्थान-महलका भीतरी भाग।

(सरस्वती अपने स्वामीसे बाहर न जानेके लिये प्रार्थना करती है—)

गायन

तुम विन पिया कल न आवे सगरो रैन ।
विरहा सतावे कुछ न भावे सगरी रैन ॥
दोहा-कहाँ विसारे जात हो, दासी करत पुकार ।
तुमही तो सर्वस्व मेरे, जीवनके आधार ॥
जिनके पति संसारमें, रहते हैं अनुकूल ।
एक नारि व्रत पतिव्रता, दोनों हैं सुखमूल ॥

हीरा--प्रिये ! तुम इतनी अधीर न वनो, मैं अपने मित्रोंसे भेंट-कर अभी आता हूँ, देखो ! दरवाजेपर मेरे परम मित्र वाबू अभयचन्दजी वहुत देरसे मेरी वाट देख रहे हैं, यदि मैं उनके

साथ न जाऊँगा, तो उनकी आत्माको कितना कष्ट पहुँचेगा ? इसलिये:—

शान्त सुख भोगो यहाँ, मैं जल्दही आजाऊँगा।
भेंट करने मित्रसे, मैं पासहीमें जाऊँगा॥

सर०—नाथ ! यह मैं मानती हूँ, किन्तु :—

एक दिनकी बात होती, तो नहीं मैं रोकती।
पर न देखो जाय ये, कैसे तुम्हें नहिं टोकती॥
किस तरह घनघोर बादल, छारहा आकाशमें।
किस तरहकी पवन बहती, मन्दी मन्दी पासमें॥
ऐसी भयङ्कर रातमें, जाकर बसोगे तुम कहाँ।
तुम न होगे गर यहां, तो मैं रहूँगी फिर कहाँ॥
इसलिये कर जोड़कर, मैं आपसे विनती करूँ।
छोड़ दो स्वामी मेरे, मैं आपके पैरों परूँ॥
यदि नहीं छोड़ोगे स्वामी, अन्तको पछताओगे।
आत्म-हत्या मैं करूँ, जीवित मुझे नहिं पाओगे॥

हीरा०—प्रिये ! तुम यह क्या कह रही हो बताओ बताओ, आज तुम्हारे हृदयमें इतनी शक्ति कहाँसे आगई, जो मेरा सामना करती एवं मुझे उपदेश देती हो ?

सर०—नहीं प्राणेश ! न मैं उपदेश देती और न सामनाही करती हूँ, बल्कि यह प्रार्थना करती हूँ कि मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गमें आपका वियोग सता रहा है, नाथ ! अब अधिक कष्ट न दो।

(बाहरसे आवाजका आना)

आवाज—मित्र हीरालाल ! आते हो या विलम्ब करते हो ? यहां खड़े खड़े तो मुझे करीब आध घण्टा होगया; परन्तु तुमने अभोतक आनेका नाम भी न लिया।

हीरा०—देखो ! प्रिये देखो ! उन्हें बाहर ठहरे करीब आध घण्टा होगया, एक मित्रके साथ ऐसा व्यवहार करना उचित नहीं, तुम शयन करो मैं अभी आता हूँ ।

सर०—नहीं प्राणेश ! मैं न जाने दूँगी ।

हीरा०—देखो ! मित्रतामें व्याघात न पहुंचाओ ।

सर०—व्याघात और मित्रतामें, नाथ यह आपका मिथ्या विचार है। वह मित्र नहीं बल्कि शत्रु है, जो अपने एक मित्रको रात्रिके समय उसके परिवारको रोता बिलखता छोड़, सिर्फ मनोरञ्जनके हेतु बाहर ले जाय, और उसके धनको व्यर्थ पानीकी तरह खर्च करा, उसे बुरे मार्गमें ढकेल दे। फिर आप स्वयं बुद्धिमान होकर ऐसे मित्रोंका विश्वास करते हैं ?

हीरा०—ऐसा. सोचना तुम्हारी सरासर मूर्खता है, और मैं भी अपने मित्रके प्रति ऐसे बुरे शब्द नहीं सुन सकता ।

सर०—तो नाथ ! क्या आपने भारतकी स्त्रियोंको बाजारू वेश्या समझ लिया है ? क्या आप यह सोचते हैं, कि उनके विचार मिथ्या हुआ करते हैं ? नहीं, नहीं; बल्कि यह विचार तो उस स्त्रीके हैं, जिसने पर पुरुषको देखनेकी कभी स्वप्नमें भी अभिलाषा नहीं की, और आपहीको अपना आराध्य देवता मानती आई है। नाथ ! मैं सत्य कहती हूँ, यही अभयचन्द

एक दिन आपको ऐसा धोखा देगा जो जीवन पर्य्यन्त स्मरण रहेगा।

हीरा०—नहीं प्रिये! जिसने मेरे साथ आजतक कोई भी विश्वासघात नहीं किया, जो मुझे हमेशा सुख ही देता आया, उस मित्रके प्रति ऐसे शब्द व्यवहार करना तुम्हारी मूर्खता एवं पागलपन है।

सर०—खैर ऐसाही सही, मैं आपसे वादा-विवाद नहीं करती; पर अन्तमें यही कहूँगी, कि मेरे अन्तिम शब्दोंको स्मरण रखना।

हीरा०—हां, हां; स्मरण है! मैं ऐसी कपोल कल्पित बातों पर विश्वासही नहीं करता।

सर०—तब कोई चिन्ता नहीं, आप प्रसन्नता पूर्वक पयान करें, यह दासी भी आपकी प्रतीक्षा करती करती अपने प्राण त्यागदेगी। जाओ, प्राणेश जाओ! परमेश्वर तुम्हारा मंगल करें!

(कमलाका प्रवेश)

कमला—भाभी जी! भइयाको रात्रिके समय तुम कहां भेजती हो?

हीरा०—(स्वगत) आह! यह दूसरी आफत कहाँसे कूद पड़ी (प्रगट) बहन! तू अपनी भाभीको समझा-बुझाकर शयन कर, मैं मित्र वैसाखके घर होकर अभी आता हूँ।

कमला—नहीं भइया, रात्रिमें जानेकी कोई जरूरत नहीं, कारण हमलोग अकेली यहाँ नहीं रह सकतीं।

हीरा०—नहीं रह सकती हो तो एक नौकर रख लो, मैं कोई
    कैदी नहीं, जो सन्ध्या होतेही घरमें पड़ा रहूं।

कमला—तो क्या हमलोगोंके लिये आपके हृदयमें स्थान नहीं ?

हीरा—है। पर कैदी बननेके लिये नहीं।

कमला—तो तुमसे कैदी बननेको कौन कहता है, यदि घूमना हो
    तो सन्ध्यासे पहिलेही घूम आया करो।

हीरा—सन्ध्यासे पहिले मुझे फुरसत नहीं, बस जुबानको लगाम
    देकर अपना काम धन्धा करो।

कमला—प्यारे भाई! हमलोगोंपर दया करो, देखो इतने कठोर
    न बनो।

हीरा—दया और स्त्री जातिपर जो मर्दोंको उपदेश दे ?

सर०—नहीं, नाथ; नहीं! स्त्रियाँ मर्दोंके चरणोंकी दासी हैं।
    वे दयाकी पात्री नहीं और न उपदेशही देने लायक हैं। आप
    खुशीसे पयान करें और आनन्दसे सैर सपाटे करें, मैं आपके
    कार्य्योंमें बाधा नहीं देती :—

दासी सहेगी क्लेश सब, जो आप आनन्दसे रहें।
बाधा न दूँगी मैं कभी, पर आप मंगलसे रहें॥

हीरा—तुम्हारी बाधाका यहाँ ख्यालही कौन करता है ?

परवाह मुझको है नहीं, इस ढोंग हाहाकारका।
जख्म होता है नहीं, इस दिल पर तेरे प्यारका॥
फिर यहाँ बाधा कि तेरे, परवाह करता कौन है।
मूर्ख है वह पुरुष जो, यह देखकर भी मौन है॥

कमला—नहीं भइया ! ऐसा न करो ।

(दौड़कर हीरालालका कुर्ता पकड़ना)

हीरा—बस चुप ! मूर्खा !!

(कमलाका हाथ पकड़ उसे धक्का देकर हीरालालका प्रस्थान, इधर दोनोंका विलाप करना)

गायन

सर०—कमला, वैरन भई रतियां ।

रंग, रूप, योवन, मद छाया,

फटत विरहसे छतियां ।

हुए विपरीत रीत तजि प्रीतम,

करत न मोसंग वतियां ॥

कमला—जरा धीर धरो भौजाई ।

पढ़े करम बस ग्रह चक्करमें,

सुधि बुधि भूले भाई ।

सर्वनाश हो अभयचन्द्का,

तन, नागन लिपटाई ॥

(प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

स्थान--महलका बाहरी भाग।

(हीरालालके साथ अभयचन्दका बातें करते हुए प्रवेश)

अभय—मित्र हीरालाल ! तुम बड़े आलसी आदमी हो, तुम्हारे दर-वाज़े पर मुझे खड़े-खड़े करीब एक घण्टा होगया, पर तुमने आनेका नामतक न लिया। इसीसे तुम्हारे घरमें आनेकी इच्छा नहीं होती।

हीरा—मित्र ! तुम समझे नहीं, आज मेरी स्त्रीने मेरे नाकों दम कर दिया था ; आखिरकार मैंने भी आज वह फटकार सुनाई, कि अब कभी सामने बोलनेका साहस न करेगी।

अभय—चलो मित्र, रोजकी झंझटसे तुम्हारी जान बची। (स्व०

मूर्ख, छोड़ा स्त्रीको तूने, अन्तको पछतायगा।
मित्र तेरा अब तुझे, वेश्याके घर ले जायगा॥
जाकर फंसेगा तू वहाँ, सर्वस्व खोकर आयगा।
मित्र तेराही तुझे, जूते वहाँ खिलवायगा॥

हीरा—फिर आज मेरी बहनने भी मेरे सामने बोलनेका साहस किया, उसे भी मैंने आज ऐसी लात जमाई कि वह भी अब कई दिनोंतक याद रक्खेगी।

अभय—सच है मित्र ! इन स्त्रियोंने मर्दोंको कोई खेलवाड़ समझ

रखा है। जब देखो, उनके कार्य्योंमें हस्तक्षेप किया करती हैं। इन्हें यह नहीं मालूम, कि स्त्रियाँ पुरुषोंके जूतियोंकी भी बराबरी नहीं कर सकतीं। (सामने देखकर) पर मित्र! देखो वह सामनेसे कोई भिखमँगा आरहा है, इसलिये चलो नहीं तो वह भी एक घण्टे माथा पच्ची करेगा।

(जानेका नाट्य करना, रामदासका प्रवेश)

राम—ठहरिये, गरीब परवर ठहरिये! मैं आपकी सेवामें कुछ निवेदन किया चाहता हूँ।

अभय—(हीरालालसे) मैं आपसे पहिलेही कहता था, कि भाग चलिये, किन्तु आपने न माना; आखिरकार माथापच्चीकी नौबत आही गई।

हीरा—यह तो ठीक है, पर सुन तो लो, यह क्या कहता है।

अभय—खैर, यह भी सही। (रामदाससे) अच्छा, क्या बोलना चाहता है?

राम—दयासिन्धु! आज तीन रोजसे मैं इस पापी पेटकी ज्वालासे दुःखित हो रहा हूँ, अभीतक कोई भी ऐसा मौका न मिला, कि किसी वस्तुसे अपनी क्षुधा निवारण करता। प्रचण्ड बाढ़ आनेके कारण मेरा घर, द्वार एवं गृहस्थीकी सारी सामग्री समुद्रकी भेंट होचुकी, तथा मेरे पूज्य माता पिता भी उसी बाढ़में पड़, न जाने किस ओर बह गये। नाथ! अब यही अभागा, दुर्भाग्यका मारा-पीटा, आपके सामने दो रोटीका सवाल कर रहा है।

अभय—तो क्या तुम यह कहते हो कि हमलोग गरीबोंको अपने यहाँ आश्रय दे दरिद्रताकी बाट जोहें ? नहीं, कदापि नहीं ; हम अमीरोंके यहाँ तुम गरीबोंका कोई काम नहीं। (हीरालालसे) चलो मित्र, नहीं तो यह चाण्डाल माथा खराब कर डालेगा।

(जानेका नाट्य करना)

राम—ठहरिये ! तो क्या आप यह कहते हैं, कि अमीरोंसे गरीबोंका कोई सम्बन्ध नहीं ?

अभय—हाँ ! हाँ !! एक बार नहीं हजार बार कहता हूँ, कि कोई सम्बन्ध नहीं।

राम—तो क्या उन किसानोंके प्रति तुम्हारी कुछ भी श्रद्धा नहीं, जो अपने खून और पसीनेको एक करके अग्निके समान धधकती हुई धूपमें अन्न बोते हैं, स्वयं रूखी रोटी खा सारे संसारका पेट भरते हैं। कहो ! कहो !! क्या उनसे भी तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं ?

अभय—नहीं, कभी नहीं।

राम—क्या कहा, नहीं ! अच्छा अगर वे अमीरोंको अपने परिश्रमसे पैदा किया हुआ अन्न देना बन्द कर दें, तो अमीर लोग क्या खायेंगे ?

अभय—बन्द कैसे कर देंगे ?

वे नीचताके अंश हैं, और नीच उनका काम है।
पैदा हुए इस कामपर, फिर क्यों तू लेता नाम है ?

राम—क्या कहा ? इसी कामके लिये पैदा किये गये हैं ! झूठ, बिलकुल झूठ। महाशय ! यह आपका मिथ्या विचार है, जिन्होंने अपनी खुशीसे अगाध परिश्रमके साथ अन्न उपार्जन किया, और जिन्हें तुम एक डाकूकी तरह लूटकर इतने अमीर बने, आज उनसे घृणा करते और कहते हो कि गरीबोंसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं !

अभय—हाँ, हाँ, स्वप्नमें भी नहीं है।

राम—अच्छा, तुम्हारी इस ऊँची अट्टालिकाके बनानेवाले कौन थे ?

अभय—वही फटे पुराने कपड़े पहननेवाले, एक एक रोटीके सवाल करनेवाले मुहताज तुम जैसे गरीब लोग।

राम०—अगर तुम्हारी इस आत्मामें शर्मका लेश मात्र भी अंश है, तो इस देशको और इस घरको त्यागकर भारतवर्षके वाहर अमीरोंके लिये नई दुनिया कायम करो। कारण इस समय यह देश गरीब है, और इसकी मान मर्य्यादा रखनेवाले गरीव ही हैं।

अभय—चल, चल भिखमंगा कहींका, आया है उपदेश देने। (हीरालालसे) चलो, मित्र चलो, मुझे इन वेवकूफोंसे बातें करते लज्जा लगती है।

(दोनोंका प्रस्थान)

राम—गया, गया, निष्ठुर अहंकारी गया। हाय !

फिरते हैं लोग आजकल, दुष्ट कुचालपर।

निज कर्म धर्म शर्मको, छोड़ा कुचालपर ॥
आती न इनको कुछ दया, गरीबोंके हालपर।
शर्म भी आती नहीं हैं, इनको अपनी चालपर ॥
फिरते हैं सेठ शाह बन, औरोंके मालपर।
पाते जो हजम करते, न देते निकालकर ॥

हे माता वसुन्धरे! देख देख, तेरी धनी सन्तान किस अहंकारमें चूर्ण हो अपनेको मतवाला बना रही है, और तेरे कोषको उज्वल करनेका विचार रखनेवाले दानवीर कर्णकी सन्तान आज एक रोटीके टुकड़े टुकड़ेको मुहताज हैं।

मर रहे भाई हमारे, देशके अकालसे।
इस तरफ है व्यर्थ खरचा, इस विदेशी मालसे ॥
चारों तरफसे देश अपना, होरहा कंगाल है।
देख लो भारत सपूतो, निज देशका ये हाल है ॥
इस तरह अपमान हो, यह क्या न अत्याचार है।
यदि न्याय है तो ऐ अमीरों, धिक्कार सौ सौ बार है ॥

हाय! अब मुझे भली भाँति मालूम हुआ, कि पराधीनताकी जञ्जीरोंसे जकड़ा हुआ भारत गारत होरहा है। अब इस देशमें हम गरीबोंकी सहायता करनेवाला कोई नहीं है।......

(कमलावतीका प्रवेश)

कमला—ई, है, भोले ब्राह्मण! भारत अभी गारत नहीं हुआ। क्या हुआ? यद्यपि कुछ मनुष्य धनके अहंकारसे चूर्ण हो, गरीबोंसे घृणा करते हैं, तथापि इस आर्य्यावर्तकी नारियां

अभीतक गरीबोंको दयाकी दृष्टिसे देखती हैं। आओ, आओ, मेरे साथ आओ ; मैं अपनी भाभीजीसे कहकर तुम्हें अपने यहाँ नौकरी दिलाती हूँ।

राम—धन्यवाद! भारतकी मान मर्य्यादा रखनेवाली देवी, तुम्हें अनन्त धन्यवाद। ऐ भारतके धनवानो! अगर यह देखकर भी तुम्हारी आँखोंमें आंसू नहीं आते, तो जाओ अपने घरमें चूड़ियां पहनकर आनन्द-शय्यापर शयन करो, और अपने कपड़े इन वीर नारियोंको दो, जो पुरुषोंके कपड़े पहनकर, शेरनियोंकी तरह मैदानमें आयेंगी और भारतको स्वतन्त्र कर उसके मान-मर्य्यादाकी रक्षा करेंगी।

देवियां भारतकी जब, मैंदानमें आजायंगी।
देखकर इन नारियोंको, सृष्टि भी थर्रायगी॥

(प्रस्थान)

तृतीय दृश्य

स्थान—मुन्ना वेश्याका कमरा।

(सजे सजाये कमरेमें मसनद और तकियोंके सहारे मुन्ना
बीबी बैठी है, उसके दोनों तरफ तबलची, सारंगीवाले
आदि बैठे हैं और परस्पर वार्त्तालाप एवं हँसी-
मजाक कर रहे हैं। इधर हीरालालको साथ
लिये अभयचन्द प्रवेश करता है, मुन्ना
उठकर स्वागत करती;
हीरलाल चौंक पड़ता है।

मुन्ना—अहा! सेठ अभयचन्दजी, आज बहुत दिनों बाद तश-रीफ लाये, कहिये आप राजी खुशी तो हैं?

अभय—हाँ! सब आपकी मेहरबानी है।

हीरा—(स्वतः) हैं! मैं कहाँ और किसके घरमें आगया! (चारों तरफ देखकर) यह तो मुन्ना वेश्याका मकान है, जो मेरी शादीके समय मेरे यहाँ नृत्य-गान करने आई थी। (प्रगट अभयसे) मित्र! तुम मुझे व्यर्थ यहाँ क्यों लाये? क्या दिल बहलानेके लिये कोई दूसरा स्थान नहीं था, जो एक बाजारू वेश्याका मुख दिखलाया? जल्दी चलो, यहाँ ठहरते मुझे शर्म मालूम होती है।

अभय—ठहरो भी, शर्म किस बातकी? क्या हमलोगोंने किसी-की चोरी की है? आये हो तो थोड़ी देर ठहरकर

इस सुन्दरीका मनोहर गान सुनकर अपने कानोंको पवित्र करो।

हीरा—(झिड़ककर) नहीं, मुझे अपने कानोंको पवित्र करनेको कोई ज़रूरत नहीं। शीघ्र चलो, मुझे देर होरही है।

तबलची—अजी जनाबे आली! ज़रा तशरीफ इधर तो लाइये।

हीरा—(गुस्सेसे) बस, अभयचन्द! अब मैं नहीं ठहर सकता।

अभय—(हँसते हुये) अहा! मित्रवर क्या आप क्रुद्ध हो गये, यह लोग तो आपके साथ हँसी करते हैं।

हीरा—लेकिन मुझे ऐसी हँसी अच्छी नहीं लगती।

मुन्ना—(तानेसे) अच्छी नहीं लगती, तो क्या मुझे अपने मुख-कमलका दर्शन कराने आये थे!

हीरा—(गुस्सेसे) मित्र अभय! यदि आप नहीं चलते तो अब मैं जाता हूँ, कारण मुझे ऐसी व्यंग बातें बर्दाश्त नहीं होतीं।

अभय—अरे ठहरो, ठहरो; मैं उसे मना किये देता हूँ। (मुन्नासे) देखो बीबी साहिबा :—

आपकी है शानो शौकत, आजकल बाजारमें।
दबदबा है धनसे इनका, आज कारोबारमें॥
धन्य तेरे भाग्य हैं, जो आपका दर्शन हुआ।
मुक्ति अब तू पागई, मन आपका अर्पण हुआ॥
इसलिये अब छोड़ दे, तू व्यंगका भी बोलना।
प्रेमसे आदर तू कर, अरु त्याग दे विष घोलना॥

.हांको मारी मरूँ ।

· · (मीठी तान,

गान त्याग यों फिरू ।

.खयां दरसनकी प्यासी,

,रको ढूँढ़त वनवन विचरूँ ।

नकी वतियां कासे करूँ । /

—

ज यह गाना हुआ ।

,नका दीवाना हुआ ॥

,नोहर गानेने तो मेरे मनको

मुन्ना—बहुत अच्छा जनाब! अब मैं इनसे कुछ भी न कहूँगी, लेकिन जरा ठहरनेके लिये तो जरूर कहूँगी।

अभय—अच्छा मित्र! आज इसीकी बात मानकर थोड़ी देर ठहर जाइये, सिर्फ दो एक गाने सुन हमलोग यहाँसे चल देंगे।

हीरा—अच्छा, यदि नहीं मानते हो तो यही सही।

अभय—हाँ मुन्ना बीबी! बैठो, और एक सुन्दर गाना गाकर हमारे मित्र बाबू हीरालालका चित्त प्रसन्न करो।

(मुन्नाका अपने सफ़रदोंको इशारा करना, उनका तबला तथा सारंगी बजाना एवं गानेका आरम्भ होना)

—गायन—

श्यामसुन्दरके नयननके प्रेम बाण लागे,
मैं तो विरहाकी मारी मरूँ।
बाँसुरी बजाके कान, मधुर मधुर मीठी तान,
खान, पान त्याग यों फिरूं।
बिसरी सुधि तनकी आज, अँखियां दरसनकी प्यासी,
नटवर चित. चोरको ढूँढ़त बनबन बिचरूँ।
कटै न रतियां, जरत छतियां, प्रेमकी बतियां कासे करूँ।

अभय—अहा! क्याही सुन्दर गाना है:—

कोकिलाके स्वरसे बढ़कर, आज यह गाना हुआ।
जितने बैठे हैं यहाँ, 'दिल उनका दीवाना हुआ॥

हीरा—(स्वगत) अहा! इसके मनोहर गानेने तो मेरे मनको

भी हर लिया। (चौंककर) मैं यह क्या कह गया! एक बाजारू वेश्याने मेरा मन हर लिया! नहीं, कदापि नहीं।

(नीची गर्दन कर सोचना)

अभय—(धीमी आवाज़में मुन्नासे) देखो बीबीजी! मैं किसी बहाने बाहर जाता हूँ, इसी बीचमें तुम अपना सब काम बना लेना। याद रखो, इनके फंस जानेसे तुम मालामाल हो जाओगी, पर साझेवाली बात न भूल जाना।

मुन्ना—अभयचन्दजी! आप भी क्या पागलोंकी सी बातें करते हैं। भला क्या मैं आपका उपकार भूल सकती हूँ?

अभय—बहुत अच्छा। (उठकर हीरालालसे) उठो मित्र, और इन नौकरोंको कुछ देकर विदा करो, कारण इन्होंने बड़ा परिश्रम किया है।

(हीरालालका पाँच पाँच रु० के नोट नौकरोंको देना और उनका लेकर जाना)

मित्र हीरालाल! अचानक मुझे एक बात स्मरण आगई।

हीरा—कहो, कौनसी बात तुम्हें इस समय स्मरण आई?

अभय—पासहीके मकानमें मेरे चाचाजी रुग्नावस्थामें पड़े हैं, उन्होंने कई बार मुझे बुला भेजा, किन्तु अवकाश न मिलनेके कारण जा नहीं सका। आज इधर आया तो यह बात भी अचानक स्मरण आगई, यदि आपको किसी प्रकारका कष्ट न हो तो मैं उनसे भेंटकर आऊँ और जो कुछ बने सेवा भी करता आऊँ।

हीरा—अच्छा, चलो मैं भी चलता हूँ ।

अभय—तुम वहाँ जाकर क्या करोगे ? सिर्फ थोड़ी देर ठहरो, मैं अभी आता हूँ ।

(प्रस्थान, इधर हीरालाल भी जाना चाहता है, देख कर मुन्नाका रास्ता रोकती है)

मुन्ना—बाबू साहब ! आप कहाँ जायँगे ? ठहरिये, थोडी देर ठहरिये, और इस अबलाकी बातें सुन लीजिये ।

कहूँ कर जोड़कर विनती, तरस खाओ तरस खाओ ।
चढ़ा है प्रेमका दरिया, उसे सन्मान दे जाओ ॥

हीरा—(गम्भीरतासे) तो क्या तुम यह चाहती हो, कि हीरालाल तुम्हारे साथ अकेला बैठकर बातें करें ? नहीं, कभी नहीं ; तुम इसकी स्वप्नमें भी आशा न करना, क्योंकि हिन्दू धर्म पराई स्त्रियोंके साथ अकेले बैठकर बातें करना मना करता है ।

मुन्ना—लेकिन प्यारे ! मैं तो पराई नहीं हूँ, तुम्हारे ऊपर तो मैं लगभग दो वर्षसे मर रही हूँ ।

हीरा—तब तुमने यह वेश्या-वृत्ति क्यों धारण की ?

मुन्ना—घरकी स्थिति सन्तोष जनक न होनेके कारणही मुझे वेश्या-वृत्तिकी शरण लेनी पड़ी । बताओ, बताओ, क्या इस प्रेमकी भिखारिनीको तुम अब भी प्रेम-भिक्षा न दोगे ? क्या इतने दिनों पश्चात भेंट होनेपर भी मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर हृदयकी धधकती हुई आग न बुझा सकूँगी ?

गायन

गजब सूरत तुम्हारी, मोहनी मूरत पै वारी हूँ।
छबीले छैल तुम हो यार, तुमपर बेकरारी हूँ॥
किया बरबाद अपने घरको, जानी यारोंको छोड़ा।
तुम्हारे वास्ते साहब, बनी दासी तुम्हारी हूँ॥
तड़फती रातदिन तुम बिन, तरस तुमको नहीं आता।
गनीमत है कि सूरत देखली, अब भी न न्यारी हूँ॥
नारायण अब न तरसाओ, मरी जाती हूँ ऐ प्यारे।
लगा सीनेसे सीना तब, कहो प्यारे मैं प्यारी हूँ॥

हीरा—नहीं सुन्दरी! तुम्हारी इच्छा कभी पूर्ण न होगी।

मुन्ना—क्या मेरी इच्छा पूर्ण न होगी? हाय! अब मैं किसी ओरकी न रही, सारा संसारही मेरे विपरीत होगया।

(रोनेका नाट्य करना)

हीरा—(स्वगत) हैं! यह रुदन कर रही है। अहा चन्द्रमाको भी लज्जित करनेवाला मुखकमल आज इसके रोनेसे मलीन हुआ जारहा है। कौन ऐसा वज्र-हृदयी मनुष्य होगा, जो ऐसी सुकुमार रमणीको रोते देख, इसपर दया न करेगा। (सोचकर) अगर मेरे जरा प्रेम करनेसे इस रमणीका उपकार हो तो इससे प्रेम करना मेरा कर्त्तव्य है (प्रगट पास जाकर) सुन्दरी! अपने मुखकमलको मलीन न करो, यह हीरालाल यथाशक्ति तुम्हारी आशा पूर्ण करेगा।

मुन्ना—क्या सचमुच मेरे नाथ मेरी आशा पूर्ण करेंगे? तब सौगन्ध खाइये कि मेरे सिवा इस जन्ममें आप किसीसे भी प्रेम न करेंगे।

हीरा—सुन्दरी! यह तुम्हारा हठ है, मैं ऐसी सौगन्ध नहीं खा सकता।

मुन्ना—तब कोई चिन्ता नहीं, आप सिर्फ थोड़ी देर कलेजा कठोरकर ठहरें, मैं अभी अन्दरसे पिस्तौल लाकर आपके सामने अपने प्राण त्यागूँगी और अपने प्रेमका अन्तिम परिचय दूंगी, उसे सहर्ष देखते जाइये।

(प्रस्थान)

हीरा—(चौंककर) गई! कहाँ गई? क्या पिस्तौल लाने? किसके लिये? क्या अपने लिये? तब क्या आज यहाँ एक हत्या होगी? और वह भी मेरे सामने? नहीं, नहीं; ऐसा कदापि न होने पायेगा, वह मुझसे प्रेम करती है और मैं अपनी प्रेमिकाकी हत्या न देख सकूँगा।

(मुन्नाका पिस्तौल लिये प्रवेश)

मुन्ना—(पिस्तौलका मुंह अपनी छातीसे लगाकर) लो प्राणेश! यह एक हत्या भी अपने साथ लेते जाओ......

हीरा—(रोककर) शान्त! सुन्दरी शान्त!! तुम्हें अपनी हत्या करनेकी कोई जरूरत नहीं, मैं सौगन्ध पूर्वक कहता हूँ, कि तुम्हारे सिवा इस जीवनमें किसीसे भी प्रेम

न करूँगा। आजसे यह हीरालाल तुम्हारा बेदामका गुलाम है।

सुन्ना—तो मैं भी इन श्रीचरणोंकी बिना दामकी लौंडी हू।

गायन

आओ हो बलमा मोरे, गरवाँमें लागूं तोरे।
सूरत पै वारी, मैं जाऊँ सावरिया तोरे॥
सुनो ऐ मेरे यार,
तुम हो प्राणाधार।
अब काहे छिपाते नजरिया, सजनवां मोरे॥

हीरा— सुनो ऐ मेरी प्यारी,
मानो बातें हमारी।
मैं तो खिद्मतमें हाजिर गुलाम, हूँ प्यारी तोरे॥

(गाना समाप्त होनेके पश्चात दोनोंका बैठना और परस्पर प्रेम वार्त्ता करना, इधर अभयचन्द्का प्रवेश)

अभय—(देखकर स्वतः) वाह बेटा! आखिरकार इस फन्देमें फँसही गये, चलो अच्छाही हुआ :—

मेरी दलाली बन गई, जब तुम फँसे इस कारमें।
मैं उड़ाऊ मौज, तुम रोया करो इस प्यारमें॥

(अभयका हीरालालके पास जाकर बैठना, उसी समय घड़ीमें दो का बजना, हीरालालका चौंकना)

अभय—मित्र हीरालाल! अब चलना चाहिये, कारण आज कुछ

ज्यादा देर होगई। बाबू वैसाख नन्दन वैठे हम लोगोंकी राह देखते होंगे।

हीरा—हाँ, हाँ; कुछ देरी तो अवश्य होगई है, परन्तु यदि तुम्हारा कार्य्य सम्पूर्ण होगया हो तो मुझे भी चलनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

अभय—हाँ, मेरा तो कार्य्य सम्पूर्ण होगया, सिर्फ अभी एकवार वैसाख बाबूके घरपर चलना बाकी है।

हीरा—बहुत अच्छा चलो, अब वहीं चलें (उठना)

सुला—(उठकर उदासीसे) तो अब किस दिन आपके दर्शन होंगे ?

हीरा—घबड़ाओ नहीं, मैं यहाँ नित्यही आऊँगा; तुम्हारी जुदाइ इस तनसे न सही जायगी। क्योंकि तुम्हारा प्रेम मेरी रग-रगमें चुभ गया है।

अभय—(स्वयम्) ठीक है।

प्रेम यदि है चुभ गया, तो अन्तमें खाजायगा।
देख लेना तुम इसे, यह अन्तमें रुलवायगा॥

सुला—तो कल अवश्य पधारियेगा, मुझ अभागिनीको सतानेकी चेष्टा न करियेगा। बाबू अभयचन्दजी! कल आप इन्हें अवश्य लेते आइयेगा।

अभय—हाँ! हाँ!! तुम किसी बातकी चिन्ता न करो, मैं कल इन्हें जरूर लेता आऊँगा। मित्र! इसे कुछ पुरस्कार देकर चले चलो।

(हीरालालका दस दस रुपयेके पांच नोट देना, मुन्नाका नीची गर्दन करके स्वीकार करना। आगे आगे हीरालालका जाना, इधर अभयका मुन्नासे बातें करना)

मुन्ना—क्यों ! कैसा काम वनाया।

अभय—हाँ, हाँ ; तुमने खूब उल्लू फँसाया। पर इस वातका हमेशा ध्यान रखना, कि यह चण्डूल हाथसे निकल भागने न पावे।

मुन्ना—अजीआप भी क्या कहते हैं ! अगर ऐसे ऐसे वेवकूफ मेरे हाथसे निकल जाया करें, तो मेरे वेश्या होनेको धिक्कार है।

अभय—शावाश ! मेरी प्यारी शावाश ! पर देखो साझेवाली वात न भूल जाना, और उस प्रेमवाले कौलको भी स्मरण रखना।

मुन्ना—नहीं प्यारे ! तुम्हारी किसी वातको भी मैं जन्मभर न भूलूँगी। (अभयका प्रस्थान)

ओ मूर्ख अभय ! क्या तू यह सोचता हैं कि मुन्ना तुझे प्यार करती है, और तुझे भी विना उल्लू वनाये छोड़ देगी ! ऐ मित्रके साथ दगा करनेवाले शैतान, ठहर ! किसी दिन तू भी मेरे हाथों तले पड़कर पिस जायगा। असली वेश्याओंकी चालोंसे तू अभीतक परिचित नहीं है, किन्तु कुछ दिनों वाद तुझे भी मालूम हो जायगा कि मुन्ना एक साधारण वेश्या नहीं है।:—

थोड़ेही दिनोंमें देख ले, तू भी वेश्यापना मेरा।
मैं वह खूबसूरत डाइन हूँ, जो पी जाऊँगी लहू तेरा॥

(प्रस्थान)

———
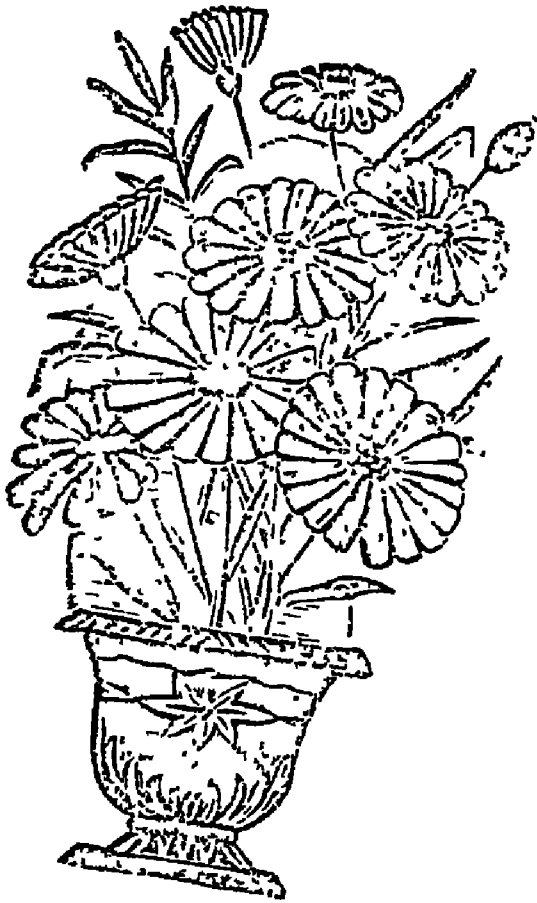
चतुर्थ दृश्य

स्थान—बाग।

(फटकचन्दका गाते हुए प्रवेश करना)

गायन

फटक—खूब पढ़ा और बना डाक्टर, बनना चाहता हूँ ज़रदार।
किस्मत नहीं कुछ यारी देती, बैठा रहता हूँ बेकार॥
फांकी बाजीमें कोई मुझको, जीत नहीं सकता है यार।
चोर, जुआरी, लुच्चे, गुण्डों, का हूँ मैं आला सरदार॥
बेरोजगारी मैं हूं यारो, हलुआ पूरी हैं तैय्यार।
रहता हूँ बस इसी फिकरमें, मोटी चिड़िया फंसे शिकार॥
जादूका अब हुनर भी मैंने, सीख लिया है लच्छेदार।
"भैरो बाबा" पड़ा शरणमें, कर दो मेरा बेड़ा पार॥

धत्त तेरे की! सारा ज़ीवन व्यर्थही खोया, लड़कपनसे पढ़ना आरम्भ किया और बीस वर्षकी अवस्थामें बी० ए० की डिग्री प्राप्त की, इसके बाद डाक्टरी पढ़ना प्रारम्भ किया, परन्तु मन न लगा, तो कालेजको तिलाञ्जलि देकर, बाहर निकलाही था कि, एक चटपटेदार यहूदीकी लड़की मेरे गले पड़ गई, उसके साथ भी कुछ दिन सुख-चैनसे रहने पश्चात् अपना दीवाला निकलते देख पल्ला छुड़ाया, और बनारस

मानकर ब्राह्मण वेष बना, कुछ दिन क्षेत्रमें भोजन किया, तथा इधर-उधर पाखंड रचकर कुछ रकम पैदा की। फिर यहाँ आया और लाइफ इन्शोरेन्स- कम्पनीमें नौकरी की, किन्तु उससे भी पेट न भरा। न जाने लोग नौकरीसे कैसे धनी बन जाते हैं, मेरा तो भाग्य फिरताही नहीं। अब क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, कुछ समझहीमें नहीं आता। कल-कत्तेकी जितनी जुआ चोरी है, वह सब पुरानी होगई, पीतल-के गहनेपर सोनेका पानी चढ़ा छोटे छोटे गाँवोंमें कभी कभी बेचता था। किन्तु शोक! आजकल उसकी भी पोल खुल गई। अब जो उसे लेते हैं, वे एकवार सुनारसे जांच करा लेते हैं। ऐसी दशामें वहाँसे भी नौ+दो=ग्यारह, होना पड़ता है। खून है मेरे "भैरो नाथ" बाबा को। यदि आप मेरी मुश्किल आसान कर देंगे, तो मैं जरूर आपको चार बोतल मदिरा चढ़ाऊँगा। (देखकर) एर हैं! यह सामनेसे बड़बड़ करता हुआ कौन आरहा है? चेहरेसे तो कोई शानदार मालूम होता है। ज़रा छिपकर सुनना चाहिये, यह क्या बकता है।

(ठग एक छिप जाता है, अभय गाते हुए प्रवेश करता है)

गायन

अभय—करूँ खुशामद मैं तो भाई, अपना काम बनाऊ जी।
करके चुपड़ी चुपड़ी बातें, ठग विद्या दरसाऊँ जी॥

जो कोई बनना चाहे राजा, उससे दाम धराऊँ जी।
लाख करें विनती जो मेरी, झट फटकार सुनाऊँ जी॥
करूँ दोस्ती मैं धनियोंसे, वेश्यागमन सिखाऊँ जी।
माल हड़प उनका सब कर लूँ, जूता लात खिलाऊँ जी॥
अन्त यही इच्छा है मेरी, अपनी ध्वजा फहराऊँ जी।
बनूँ अभयचन्द मैं अलबेला, गुण्डा राज चलाऊ जी॥

यारो! अगर दुनियांमें रहकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हो तो चाहे जैसे हो खुशामदकी लम्बी चोड़ी पटरियां बिछा दो। यदि किसीसे माल ऐंठना चाहते हो तो उसकी बड़ाइयोंका लम्बा चौड़ा पुल बांध दो, इसके बाद झूठका सिगनल डाउन कर, जाल फरेबका प्वायंट बदल धोखेबाजी की स्पेशल ट्रेन छोड़ दो, और फिर मुझसे पूछो यदि कि आप कहाँ जाते हैं?" मैं उत्तर दूंगा, "दुनियाको ठगने।" वर्त्तमान समयमें मेरे पास दो चण्डूल हैं, एक मुन्नी वेश्या और दूसरा हीरालाल। इतने दिनों उसके पीछे पड़नेका सारा कष्ट आज सफल होगया। उस मूर्खने मेरी चालाकीमें आ स्वयंही अपने लिये गढ़ा खोद लिया। और मेरा तीसरा चण्डूल कलकत्तेका सबसे बड़ा रईस राय रामचन्द्र बहादुर है, उसपर भी मुझे अपना हाथ साफ करना है। (हँसना) इस समय मेरे दोनों हाथोंसे रसगुल्ले टपक रहे हैं।

फटक—(स्वतः) तब क्या यही प्रसिद्ध गुण्डोंका सर्दार अभयचन्द है! फिर तो इसके दलमें मिल जानेमें मालामाल

हो जाऊँगा। (प्रगट) गुड मार्निंग बाबू अभयचन्दजी ! मैं आपहीका नाम सुनकर बड़ी आशासे आपके मकानपर जारहा था, किन्तु बाबा भैरोनाथकी दयासे रास्तेहीमें आपसे भेंट होगई।

अभय—(स्वतः) अररर ! यह कौनसी बला मेरे पीछे पड़ी ! (प्रगट) कहिये, आपको मुझसे क्या काम है ?

फटक—महोदय ! मैंने सुना है कि, आपके अधीन एक दल है, मैं भी उसी दलमें आपके अधीन रह, अपना जीवन बिताना चाहता हूँ।

अभय—(गौरसे देखकर) देखनेसे तो तुम एक भले आदमी मालूम होते हो, किन्तु एकबार तुम्हारी परीक्षा कर मैं अपने दलमें सम्मलित कर सकता हूँ।

फटक—महाराय ! प्रथम यह बतलाइये कि 'मेरी परीक्षा किस प्रकार करेंगे ? जलते हुए तेलके कड़ाहमें तो नहीं डालेंगे ?

अभय—नहीं, नहीं, आप भय न करें। मेरे दलके पीछे सी० आई० डी० के बागड़ बिल्ले बेतरह पड़ गये हैं, अतएव जल्द किसीपर विश्वास करना अपनी मूर्खताका परिचय देना है।

फटक—हाँ, हाँ; मैं इसके लिये आपसे पहले प्रस्तुत हूँ ! आइये, चलिये। (स्वतः) जय मेरे सर्वस्व भैरोनाथ बाबाकी; मैं आपको कलही मदिरा चढ़ाऊँगा।

(दोनोंका प्रस्थान)

पञ्चम दृश्य

स्थान—हीरालालका मकान।

(सरस्वतीका एक कोचपर वैठे पति-वियोगमें विलाप करते नजर आना)

गायन

पिय तोहिं कौन सौतिन विरमाये।
रात अँधेरी भयावन लागे, निज दासी विसराये।
घन गरजत, दामिनि द्युति दमकत, दादुर शोर मचाये॥
इकलो भवन डर पावत मोहे, अजहु नाथ नहीं आये।
"नारायण" हूँ चरणकी दासी, नाहक मोहे कलपाये॥

कमला—भाभी जी! तुम इतनी अधीर न वनो, भइया आतेही होंगे।

सर—क्या कहा कमला! वे आते होंगे? इसी आशामें जागते-जागते तो सुबह होगई, किन्तु अभीतक उन्होंने आनेकी कृपातक न की।

कमला—अच्छा! थोड़ी देर और धैर्य्य धारण करो, मैं अभी रामदासको उनके वुलानेके लिये भेजती हूँ। रामदास! रामदास!!

(रामदासका प्रवेश)

राम—कहो देवी ! क्या आज्ञा है ?

कमला—देखो, भइयाको बाहर गये करीब १० घण्टे होगये, पर वे अभीतक नहीं आये। इसलिये तुम अभी ४०२ मछुआ बाजार स्ट्रीटमें बाबू वैसाखनन्दनके मकानपर जाओ, वहीं भइया भी मिलेंगे, उन्हें शीघ्र बुला लाओ।

राम—बहुत अच्छा देवी ! मैं अभी जाता हूँ।

स्व—लेकिन देखो लौटनेमें विलम्ब न करना।

राम—नहीं मालकिन ! आप निश्चिन्त रहें, मैं उन्हें साथ लेकर अभी आता हूं। (प्रस्थान)

स्व—कमला ! अब मुझे मालूम हुआ, कि पुरुष कहाँतक निर्दयी होते हैं। जो अपनी अबला स्त्रियोंको रोती बिलखती छोड़ रातभर बाहर रहते हैं, बताओ ऐसे मनुष्यों द्वारा भारतका क्यों न सर्वनाश होगा ?

कमला—भारतका सर्वनाश कैसे होगा भाभी जी ?

स्व—अच्छा सुनो :—

गायन

नारिका पति है सर्वाधार।
पतिसे ही पत है पतिव्रत की,
बिन पति विपति हज़ार।
लोक, लाज, कुल, कान त्यागकर,
जो करते व्यभिचार ॥

ऐसे नारि पुरुष जग जन्मे,
हैं पृथ्वी पर भार ।
घर की त्रिया छोड़ करैं,
जो पर नारीसे प्यार ॥
कैसे होंगे ऐसे प्राणी,
भव सागरसे पार ।
करैं कुसंग कुशल फिर चाहैं,
किस विधि हो उद्धार ॥
अन्त समय सिर धुन पछतावैं,
बुरा कहै संसार ।
पतिसे नारि नारिसे पति,
जब विमुख करत व्योहार ॥
नित प्रति बढ़ी वेश्या जगमें,
बहु कुलवन्ती नार ।

कमला—हाँ, वेश्या और वेश्यागामियोंकी वृद्धि होनेका एकमात्र यही कारण है। परन्तु भाभी जी! रामदासको गये बहुत देर होगई, वह अभीतक नहीं आया।

सर—कमला! यह मेरा दुर्भाग्य है। जब मुझपर मेरे करतार ही रूठ गये, तो संसारमें ऐसा कोई नहीं जो मेरी सहायता कर सके। हाय विधाता! मैंने पूर्व जन्ममें कौन-से अपराध किये थे, जिसके फल स्वरूप आज मुझे यह दण्ड दे रहे हो? (रोना)

कमला—भाभी जी ! रोओ मत, तुम्हारे रोनेसे मेरा हृदय फटा जाता है ! अच्छा, थोड़ी देर और ठहरो, मैं स्वयं वैसाखके घर जा उन्हें बुला लाती हूँ ।

सर—अरी कमला ! यह तू क्या कहती है ! इस प्रातः-कालके समय तू कहाँ जायगी ! मैं सुनती हूँ । :—

रहते उधर बदमाश बहु, उनके सदा यह कार है।
दूसरोंकी मां बहनपर, करते सदा व्यभिचार हैं॥

इसलिये तुम्हें ऐसी जगह जानेकी कोई जरूरत नहीं, मुझपर जो दुःखके पहाड़ गिरे हैं, मैं उन्हें किसी-न-किसी प्रकार सहन कर लूँगी ।

और दुःख जो आयेंगे, उनको भी सहती जाऊँगी।
पर भेजकर कमला तुझे, मैं सुख कभी नहीं पाऊँगी॥

कमला—नहीं भाभी जी ! तुम किसी बातकी चिन्ता न करो, तुम्हारी कृपा और ईश्वरकी दयासे बदमाश हम अबलाओंका कुछ नहीं बिगाड़ सकते ।

धर्म अपने साथ है, और कर्म भी मम हाथ है।
है सचाई हाथ जिसके, ईश्वर भी उसके साथ है॥

आप कुछ भी चिन्ता न करें, मैं भइयाको अभी बुलाये लाती हूँ ।

(प्रस्थान)

सर—हाय ! सारा संसार मेरे विपरीत होगया, एक कमला मुझे मेरे पास सान्त्वना देनेके लिये थी, वह भी मेरी शुभकामनाके लिये मेरे मना करनेपर भी अपनी जिद्दसे चली

गई। हे परमात्मा! तू उस अवलाकी रक्षा करना, कहीं ऐसा न हो, कि उसे वदमाशोंके हाथ पड़कर कष्ट सहना पड़े।

कर दया उसपर प्रभो, फँस न जावे वह कहीं
कष्टके पड़नेसे प्रभुवर, मर न जावे वह कहीं॥
यदि हुआ ये सत्य स्वामी,मैं भी जी सकती नहीं।
रक्षा करो अवलाकी गिरधर,कष्ट सह सकती नहीं॥

(रामदासके साथ हीरालालका प्रवेश)

(देखकर); कौन, मेरे प्राणनाथ! यह दासी आपके चरणोंमें प्रणाम करती है।

हीरा— कड़े स्वरमें) क्यों! क्या हुआ, इतनी व्याकुल क्यों होती हो? कहो कमला कहाँ है?

सर.–(रोती हुई) नाथ! वह भी आपहीको खोजनेके लिये गई है।

हीरा—तो क्या मैं कहीं मर गया था?

राम—मालिक! सचमुच यह काम बहुत बुरा हुआ। (सरस्वतीसे) अच्छा, तो क्या वह बैसाखहीके घर गई हैं?

सर—हां! अभी १५ मिनट हुए उन्हींके घरका नाम लेकर गई है।

राम—अच्छा कोई चिन्ता नहीं! (हीरालालसे) मालिक! कृपाकर जवतक मैं न आऊँ तबतक आप वाहर जानेका कष्ट न कीजियेगा।

हीरा—बहुत अच्छा, तुम जाओ।

राम—(स्वगत) अहा! अपने स्वामीकी यह दूसरी सेवा है। परमेश्वर तू इस निर्बल शरीरमें साहस पैदा कर ताकि मैं संसारको अपनी "स्वामि-भक्ति" का परिचय दे सकूं।

(प्रस्थान)

सर—(नम्रतासे) प्राणनाथ! बताओ बताओ, क्या इस अवलाके प्रति तुम्हारे हृदयमें कुछ भी प्रेम नहीं?

हीरा—है! पर केवल नाम मात्र।

सर—क्या कहा, नाम मात्र! स्वामी :—

अपराध लाखों सर्वदा, मेरे क्षमा करते रहे।
प्रेमसे हंसकर सदा, मन मेरा हरते रहे॥
हा! आज फिर मुझ किङ्करीको, कौनसे अपराधमें।
हे नाथ क्यों हो तज रहे, शोक-सिन्धु अगाधमें॥

हीरा—इस लिये कि:—

मन मेरा मोहित हुआ है, एक सुन्दर नारपर।
एकही था प्रेम, सो लट्टू हुआ उस नारपर॥

सर—नाथ!

है तुम्हारी भूल यह, लट्टू हो जो उस नार पर।
है तुली वेश्या जगतमें, नर्क पापाचार पर॥
नहिं जानते हो तुम अभी, क्या विष भरा उस प्यारमें।
छोड़ दो स्वामी मेरे, वहु पाप है व्यभिचारमें॥

हीरा—आह!

व्यर्थ तेरा जायगा बकना भी, उसके प्यारमें।
है फालतू रोना तुम्हारा, प्रेमके सञ्चारमें॥

(बाहरसे आवाजका आना)

नेपथ्यसे—हीरालाल! हीरालाल!!

हीरा—कौन? मित्र अभयचन्द, क्या इतनी जल्दी आगये?

नेपथ्यसे—हाँ जल्दी आओ, यहाँ मोटर तैय्यार है।

हीरा—अच्छा ठहरो, मैं अभी आता हूँ। (सरस्वतीसे) मैं अब बाहर जाता हूँ, तुम अन्दरसे दरवाजा बन्द कर लो।

सर—नहीं नाथ! ऐसा न करो, देखो तुम्हारी बहन कमला अभी बाहर गई है। न जाने उसपर कौनसा संकट आया हो, तुम्हारे न रहनेसे उसे उस संकटसे कौन मुक्त करेगा?

हीरा—संकट कैसा! क्या यहाँ कुछ डाका पड़ता है? वह अपने मनसे गई तो उसका फल भोगे। मुझे देर होती है, मैं अब ज्यादा देर नहीं ठहर सकता।

सर—अच्छा प्राणेश! दया कर मेरे प्रश्नोंका उत्तर तो देते जाइये।

हीरा—अच्छा, जल्द पूछो, क्या पूछना चाहती हो?

सर—प्रथम यह बताइये, कि अब उस प्रेमकी अधिकारिणी कौन है?

हीरा—मुन्ना वेश्या, जिसके रूपपर आज सारा कलकत्ता लट्टू होरहा है।

सर—हाय! हाय!! तो क्या उस प्रेमकी अधिकारिणी एक बाजारू वेश्या है। नाथ :—

अनुचित तुम्हारा काम यह, कहता यही संसार है।
ऐसेही व्यभिचारसे, भारत भी गारत आज है॥

हीरा—आह!

सूंघैं न हम भी क्यों भला, जो ... है संसारका
देखूँ न रंगत क्यों भला, प्रभु ... (प्रस्थान) दूर

सर—(पल्ला पकड़कर) नहीं प्राणेश ...
रहे हैं।

हीरा—(क्रोधसे) अरी मूर्खा! तुझे ...
शर्म नहीं आती। (झटककर) ...
किसी काम न आयगा।

सर—नाथ! यह ...
मैं कहाँ जाऊँ ...

हीरा—मैं कहाँ बताऊँ ...

सर—क्या उस प्रेमपर ...

हीरा—बिलकुल नहीं।

सर—हाय! मेरा परमेश्वर?

हीरा—रूठा हुआ।

सर—मेरा भाग्य?

हीरा—फूटा हुआ।

सर—मेरा प्रेम?

बस ! अब ऐसे हजारों कष्टोंका सामना करते हुए भी मैं महाराजा
सावित्री और पद्मिनी आदि सती देवियोंकी ,
रहूँगी, और संसारको यह स्पष्ट दिखला दूँगी कि
कर्त्तव्य और धर्म क्या है ।

कर्त्तव्य क्या स्त्रीका है, यह विश्वको दिखलाऊँगी ।
धर्मपर अपने अचल हो, मैं सती कहलाऊँगी ॥

(प्रस्थान)

षष्ठ दृश्य।

स्थान—राय बहादुर भड़चन्दकी बैठक।

(राय भड़चन्द बहादुरका अपने मुसाहिबोंके
साथ बैठे नजर आना।)

भड़—(सबोंसे) क्यों, भाइयो! देखा मेरा कितना प्रताप है, सरकार बहादुरने बातकी बातमें मुझे राय बहादुरकी उपाधि दे दी। (हँसना)

प० मु०—महाराज देगी क्यों नहीं! अगर सरकार आपको राय बहादुर न बनाती तो उसे सरसोंके फूल भी देखने पड़ते और सम्भव था कि कुछ दिनोंमें दिवाला भी निकल जाता।

दू० मु०—सच है, हमारे महाराज रूपमें रूद्र, गुणमें ज्ञानानन्दके समान हैं।

ती० मु०—जरूर चेहरेमें चन्द्रमा, धनमें कुवेर, वीरतामें भीमके अवतार हैं।

चौ० मु०—हाँ! हाँ!! धीरतामें धर्मराज, चरित्रमें चक्रवर्ती दशरथ, ज्ञानमें गोसाईंजी और ध्यानमें मुझसे भी बढ़कर हैं।

प० मु०—हमारे महाराज बड़े दानी भी तो हैं।

दू० मु०—अवश्य! राजा बलि और कर्णभी इनके सामने कुछ नहीं थे।

भड़—(हँसते हुए) अरे ! तुम सबोंने मुझे पहलेहीसे महाराजा कहना शुरू कर दिया ।

दू० मु०—हूजूर तो महाराजा हैं ही ।

भड़—तो क्या सचमुच में महाराजा भी हूँ ?

दू०मु०—हां महाराज ! मैं बिलकुल ठीक कहता हूँ ।

भड़—लेकिन सरकार बहादुर तो यह नहीं मानेगी ।

ती०मु०—मानेगी क्यों नहीं, महाराज ! उसने आपको रायबहादुर तो बनाही दिया है , बस अबकी बार डबल प्रमोशन देदेगी ।

दू मु०—हाँ ! हाँ ! इसी लिये बदमाश कुल अभूषण बाबू अभय चन्दजी आपको पहलेहीसे युअर हाइनेस (Your Highness) कहकर सम्बोधन करते हैं ।

भड़—क्या कहा ! बाबू अभय चन्दजी भी हमको महाराज कहते हैं । (हँसना) जिसके भयसे आज सारा बङ्गाल थर-थर कांपता है, क्या सच मुच वे भी मेरा सम्मान करते हैं ?

सब मु०—जी हाँ महाराजा ! (नौकरका प्रवेश) ।

नौकर—महाराजाकी जय हो, एक शरीफ सज्जनके साथ बाबू अभय चन्द बाहर खड़े हैं !

भड़—(हंसते हुए) क्या तुम भी मुझे महाराजा कहते हो ? अच्छा जाओ, उन्हें यहां जल्दी भेजदो । (नौकरका जाना,) मुसाहबोंसे) देखो ! उनके आतेही तुम लोग खड़े होकर पहले मेरी बाद .उनकी जय जय कार बुलाना, जिससे मेरा रुआब कम न हो ।

(फटकके साथ अभय चन्द्का प्रवेश)

सव मु०—(खड़ेहोकर) राय भड़चन्द् वहादुरकी जय, जय वावू अभय चन्द्जी की जय।

अभय—गुड मार्निंग माई डियर महाराजा।

भड़—(हँसते हुए) क्या आप महाराजा कहकर मेरे साथ मज़ाक करते हैं ?

अभय—मजाक और आपके साथ ? नहीं, नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। आप जानते हैं कि मेरेहो भयसे गिलाससे लेकर वाल्टी तकका पानी कांपा करता है, च्यूँटीसे मच्छड़ तक, वकरेसे हाथी तक, जड़से फल तक, थरथराते हैं। मेरेही जरासे चित्कारसे फाल्गुनमें पत्ते झड़ने लगते हैं। अलीपुर चिड़ियाखानेकी सारी चिड़ियाएँ चांय चांय करने लगती हैं। मेरे व्याख्यानोंसे सारा देश और समाज मटिया मेट हो जाता है। फिर ऐसी जर्बदस्त शान रखने वाला एक गुण्डोंका सर्दार क्या कभी आपके साथ मज़ाक कर सकता है ?

प०मु०—वावू साहव ! ज़रा आपका भी कुछ परिचय हमारे रायसाहवको दे दीजिये।

भड़—हाँ, हाँ, कुछ इनकी भी तारीफ कर जाइये।

अभय—आप हमारे पुराने मित्र, और गुण्डा दलके एक प्रधान कार्य्य कर्त्ता हैं। आप अङ्गरेजी भाषाके एक अद्वितीय विद्वान और गुप्त बीमारियोंके सुयोग्य डाक्टर हैं। किन्तु इनमें

खूबी इस बातकी है कि केवल औरतोंका ही इलाज करते हैं, मर्दोंकी चिकित्सा भूलकर भी नहीं करते।

भड़—(हँसते हुए) तब तो आप बड़े अच्छे आदमी हैं। अच्छा होता यदि आप मेरे ही यहाँ निवास करते।

अभय—तो इसके लिये इनको भी इनकार नहीं है।

दू० मु०—अच्छा, बाबू साहब! आप हमारे हुजूरको महाराजा कब बनायेंगे?

अभय—आजही, अगर मेरा काम बन जाय तो इन्हें महाराजा बनानेसे मुझे कभी भी इनकार नहीं।

भड़—(हँसते हुए) आप बड़े दयालु और धर्मात्मा हैं, मैं आपको प्राणोंसे भी बढ़कर मानता हूँ।

अभय—(स्वतः) यह तो आपकी और मेरी सूरतसेही टपक रहा है।

प० मु०—जी हाँ महाराज! आप बाबू साहबको अपनी स्त्रीसे भी ज्यादा मानते हैं?

दू० मु०—इसमें क्या सन्देह! हमारे महाराजका प्रेम आपके प्रति, कुतुबमीनार और जुम्मामस्जिदसे भी ज्यादा ऊँचा है।

ती० मु०—चीनकी दीवारके समान चौड़ा, धौलागिरिके समान लम्बा और हाथीसे भी ज्यादा मोटा है।

प० मु०—और यदि इतनेपर भी हमारे हुजूरको बाबू साहब महाराजा न बनावें तो यह सारा गुल-गपाड़ाही समझना चाहिये।

चौ० मु०--और इन्हें भी चाहिये कि शीघ्र आप युवराज बन जायें, क्योंकि हुजूरके कोई नाती-पोता न रहने कारण वह स्थान हमेशाही खाली रहेगा।

फटक—नहीं, नहीं ; गुल-गपाड़ेकी कोई बात नहीं, आप महाराजा बनाकर स्वयं युवराज बननेको तैय्यार हैं।

अभय—अच्छा, इन बातोंको तो आपलोग अपने मुँहमें वापस लीजिये, (भड़चन्दसे) माई डियर भड़चन्द बाबू.....

भड़—ऐं ! यह क्या दादा ! सब किरकिरा कर दिया, इतना बड़ा महाराजा बनाकर एक बारमें, एक दमसे बाबू बना दिया।

(रोनेका नाट्य करना)

फटक--यारो !

ऊंचेसे नीचे गिरे, तो रोना इनके साथ है।
काम है मम बन रहा, रक्षक भी भैरो नाथ है॥

अभय—डोंट माइण्ड माई डियर महाराजा ! दुनियांके बड़ेसे बड़े और छोटेसे छोटे कामोंको करनेकी चाभी तो मेरे पास है, मैं उस चाभीको अपनी स्त्रीके हवाले भी नहीं करता। क्योंकि उसी चाभीके प्रतापसे बड़े बड़े गुण्डे, लुच्चे, शोहदे तक मेरेसे बन्धुत्व करनेको लालायित रहते हैं। फिर महाराज बनानेके लिये तो मैं एक लाख रुपयेसे ज्यादा लेताही नहीं, चाहे वह अपना सिर भी मेरे पैरोंमें पटककर मर जाय।

भड़—ऐं ! एक लाख और वह भी एकबार ! नहीं, नहीं, मैं बड़ा गरीब आदमी हूँ, इतनी रकम मैंने अभीतक कमाई भी नहीं।

फटक—राय साहब ! महाराजा बननेके लिये लाख रुपया मिट्टीके बराबर है, यह जिसको एक जमीन्दारी दे देते हैं, वही लाख रुपया चटपट इनके चरणोंमें पटक जाता है। सुनिये, जिस दिन आप महाराजा बनकर अत्याचारकी तलवार अपने हाथमें पकड़ेंगे, उसीदिन लार्ड कर्जन और जेनरल डायरको भी आपके सामने लज्जित होना पड़ेगा। इतनाही नहीं वरन यहाँके सारे बदमाश दल आपका हर समय स्वागत करेंगे।

भड़—(हँसते हुए) क्या ऐसी बात है, तो मैं लाख रुपया अभी देनेको तैय्यार हूँ।

सब मु०—हिप, हिप, हुर्रे !

अभय—(स्वतः) शाबास, मेरे मिट्टीके शेर ; शाबास। (प्रगट मुसाहिबोंसे) एकबार बोलो महाराज भड़चन्द बहादुरको जय।

सब मु०—जय महाराज भड़चन्द्र बहादुर के० सी० आई० ई० प्रबल प्रतापी इम्परर औफ मछुआ बाजारकी जय।

भड़—(हँसते हुए चन्देकी बहीपर सही करने पश्चात वापस देना) देखिये ! सही तो मैंने कर दी, लेकिन सरकारके भी खातेमें मेरा पवित्र नाम दर्ज हो जाना चाहिये।

फटक—कुछ परवाह नहीं, आपके पास रुपये आनेपर सरकारको झख मारकर अपने ब्लेक बुकमें आपका पवित्र नाम दर्ज करनाही पड़ेगा।

प० मु०—हाँ, महाराज! इसकी आप कुछ भी चिन्ता न करें और आजही राजमुकुट बननेका बयाना भी दे दें।

दू० मु०—और साथ-ही-साथ राज-पोशाकके बननेको भी, क्योंकि आपको इसकी बड़ी जरूरत पड़ेगी।

भड़—(हँसते हुए) तो क्या आजसे मैं महाराजा बन गया?

अभय—हाँ महाराज! अब हिज़ हाईनेसकी पदवी आपके सिवा दुनियांमें किसीको भी नहीं मिल सकती।

फटक—(स्वगत) यारो!

फंस गया है किस तरह, अब तुम भी इसका साथ दो।
नामपर तुम इसके भाई, अब भी गोबर पाथ दो॥

(प्रगट) अच्छा अब हम लोग जाते हैं, और आपके महाराजा होनेकी डुग्गी पिटवाते हैं।

भड़—तो एकबार आप लोग मेरी जय जयकार कहके जाइये, क्योंकि अब मैं महाराजा बन गया हूँ।

(हँसना)

(दोनोंका जय जयकार करते हुए प्रस्थान)

भड़—क्यों जी, तुम सब हमसे अब भय करते हो या नहीं?

प० मु०—हाँ महाराज! आपका चेहरा देखतेही हमलोगोंके होशोहवास गुम्म हो जाते हैं।

भड़—(हँसते हुए) तब तो मैं अपनी इच्छानुसार जिसको चाहूँ उसे फाँसी भी दे सकता हूं।

दू० मु०—हाँ! दे तो सकते हैं, लेकिन आपकी आज्ञासे भूकम्प,

प्रलय, महामारी, दुर्भिक्ष, मलेरिया तथा देश ऊजड़ इत्यादि बहुत जल्दी हो सकते हैं।

भड़—(हँसते हुए) तुम लोग बहुत ठीक कहते हो, आज तो नहीं लेकिन कुछ दिनों बाद में अपना प्रताप जरूर आजमाऊँगा।

ती० मु०—देखिये महाराज! अब आप हिज़ हाईनेस होगये, अगर आपको अपना प्रताप आजमाना है तो पहले अपनी बहू-का घमण्ड चूर्ण कीजिये।

चौ० मु०—हाँ! हुजूर उसके मुँहमें कालिख लगा गधेपर चढ़ा सारे शहरमें गाजे बाजेके साथ निकलवाइये।

भड़—अच्छा तो मैं उसे फाँसीका हुक्म देता हूँ।

प० मु०—नहीं महाराज, ऐसा करनेसे सब कामही चौपट हो जायगा, कारण जब वह आपके चरण पकड़ लेगी तो आप कुछ भी न कर सकेंगे। इसलिये कोई ऐसा इन्तजाम कीजिये कि वह भी आपकी तरफ हो जाय, उसके मर जानेसे आप एकदम रडुआ हो जायेंगे।

भड़—(हँसते हुए) तुम लोग बहुत ठीक कहते हो।

दू० मु०—हाँ हुजूर! अब आप महाराजा बन गये, अस्तु किसी तिगड़मसे अपनी बहूको देश-सेवाका झूठा बहाना बता अपने पक्षमें कीजिये, नहीं तो बना बनाया घर चौपट होजायगा।

भड़—(हँसते हुए) ठीक ठीक तुम लोग जैसा कहोगे, मैं वैसा

ही करूंगा। (हँसना) तुम लोग हमारे मन्त्री और हम महाराजा। (हँसना)

ती० मु०—हाँ महाराज! अब चलिये भोजनका भी समय होगया।

भड़—हाँ! हाँ! चलो, आज हम लोग एक साथही भोजन करें क्योंकि हम महाराजा बन गये।

(हंसते २ सबका प्रस्थान)

सप्तम दृश्य

स्थान-मार्ग

(एक मुसाफिरका गाते हुए प्रवेश)

गायन

मुसाफिर—नर तन को पाके प्राणी, आपा न भूल प्यारे।
यह मोक्षकी डगर है, आवागमन मिटा रे॥
था जिस लिये तू आया, चित्तसे उसे भुलाया।
दिल मोहमें फँसाया, मूरख हुआ है क्या रे॥
किसको पिता कहै तू, किसको कहै तू माता।
वसुधा हैं सबकी जननी, जग जिसके है सहारे॥
किसको बहन कहे तू, है कौन तेरा भ्राता।
स्वारथका सब है नाता, धनके लगे किनारे।
अर्धाङ्गिनी जो तेरी, सन्तान धनकी चेरी।
सीता सती सी नारी, कोई हो तो पार तारे॥
है कौन मित्र तेरा, दीपक तले अन्धेरा।
तू किसका मित्र बनता, मन मित्र कहाँ बिसारे॥
ब्रह्माने सृष्टि रचकर, तनमें ही सब दिखाया।
प्रगटे विराट, "भानु" अस्टांग योग धारे॥

(प्रस्थान)

———

अष्टम दृश्य।

स्थान—वैसाखका मकान।

(कमला डरसे चारों ओर देखती हुई वैसाखनन्दन के साथ प्रवेश करती है)

कमला—ख्वाजा! तुम मुझे यहाँ क्यों लाये? यहाँ तो मेरे भाई साहब नहीं हैं!

वैसाख—सुन्दरी! तुम्हारे भाई साहबको यहाँ से गये, करीब आध घण्टा होगया।

कमला—तब तुमने मुझसे क्यों कहा, कि वे यहींपर हैं?

वैसाख—सिर्फ तुमसे कुछ बातें करनेके लिये।

कमला—अच्छा कहो, क्या बात करनेके लिये तुमने मुझसे झूठा बहाना किया?

वैसाख—सुन्दरी! मेरे बहाना करनेका एक मात्र यही कारण था, कि मैं तुम्हारे रूप पर मोहित होगया हू। और अब तुम्हें अपनी अर्धाङ्गिनी बनाना चाहता हूँ।

कमला—(चौंककर स्वतः) हे परमेश्वर! मैं किस आफतमें आ फँसी।

शीघ्र दो शक्ती मुझे, इसको मैं उत्तर दे सकूँ।
लाख देवे कष्ट यह, पर धर्मको मैं रख सकूँ॥

वैसाख—क्यों चुप क्यों होगई? उत्तर क्यों नहीं देती?

कमला—हाँ! तूने क्या कहा था, अर्धाङ्गिनी?

वैसाख—हाँ प्यारी! अर्धाङ्गिनी।

कमला—बस, जुबान सम्हालकर बातें कर, प्यारीका शब्द भूलकर भी जुबान पर मत लाना, नहीं तो पछताना पड़ेगा।

वैसाख—देख! इस मकानके अन्दर किसीके भी आनेकी सामर्थ्य नहीं, क्योंकि मकानके सब दरवाजे मेरे हुक्मसे बन्द कर दिये गये हैं, अब यहाँसे छूटकर तुम किसी प्रकार भी न जा सकोगी।

कमला—हे ईश्वर! अब मैं क्या करूँ। (वैसाखसे) अरे मूर्ख! तुझे अपने मित्रकी बहनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार करते लज्जा भी नहीं आती? क्या मित्रकी बहन तेरी बहन नहीं हुई?

शर्मकर जालिम तू, अपने कार्य्योंको देख कर।
कर निगाहें मत बुरी, निज मां बहन अवलोक कर॥

वैसाख—अच्छा! इन ढकोसलोंको बन्द करो, और यह बताओ कि तुम्हें मेरी बात स्वीकार है या नहीं?

कमला—कौन सी बात?

वैसाख—यही कि शीघ्र मेरे साथ शादी करले और आनन्द मना।

कमला—जा जा कामी कुत्ते, इसकी कभी स्वप्नमें भी आशा न करना।

वैसाख—देख! मैं फिर भी कहता हूँ, यहाँ तेरी सहायता करनेवाला कोई नहीं है।

कमला—ओ जालिम! यदि मनुष्य सहायता करने वाला नहीं

तो क्या हुआ, वह अन्तर्यामी परमात्मा तो है, जो हर समय प्राणी मात्रकी रक्षा करता है।

वैसाख—तो क्या तू मेरे साथ शादी न करेगी?

कमला—शादी! और तुझ जैसे नीच प्रकृत मनुष्यके साथ, जो दूसरोंकी मां बहनको, अपनी मां बहन नहीं समझता।

वैसाख—तो बस! मरनेके लिये तैय्यार हो जा।

कमला—अरे नीच! मैं इस मृत्युके लिये पहलेहीसे तैय्यार हू, क्योंकि आर्य्य ललनायें धर्मके आगे मृत्युको तुच्छ समझती हैं। परन्तु तबतक ठहर, जबतक कि यमराज मेरी जिन्दगी-का परचा खोलकर न देख लें!

वैसाख—अरी पगली, क्यों वृथा दुःख उठाती है? आखिरकार तो मुझे किसी-न-किसीके साथ शादी करनीही पड़ेगी?

कमला—ओ पापी! मैं जन्मभर कुँवारी रह जाऊँगी, पर तनमें प्राण रहते तुझ जैसे कुलांगारसे शादी कभी न करूँगी।

वैसाख—क्योंरी नादान छोकरी! तू कुलांगार किसे बताती है?

कमला—निःस्सहायोंके उत्पीड़क तुझे! जो पराई बहू, बेटियों-का धर्म हरनाही अपना कर्त्तव्य समझते हो, जो एक विवश निःसहाय अबलापर जबर्दस्ती अपना अधिकार जमाना चाहते हो :—

शर्म आती है नहीं, तुमको तुम्हारे कामपर।
धिक्कार सौ सौ बार है, तुमको तुम्हारे नामपर॥

मूर्ख!

काट डालो बोटी बोटी, जो मेरी शमशीरसे।
तब भी हट सकती नहीं, यह धर्म नौका तीरसे॥

बलाख—आह! अब मैं भी देखता हूँ, तेरी कौन सहायता करता है? तेरा धर्म कितना जबर्दस्त है, जो तुझे मेरे चँगुलसे छुड़ाता है। बस, अब मैं पहले तेरे साथ बलात्कार कर तेरा धर्म भ्रष्ट करूँगा, ततपश्चात तेरी हत्या करूँगा।

मौत तेरे सर है आई, देखले हुज्जत न कर।
मान जा मेरी कही, देखले नाहीं न कर॥

(बढ़ना)

कमला—बस, सावधान! भलाई इसीमें है कि जहां खड़े हो वहीं रुक जाओ। अगर इस आशासे एक कदम भी आगे बढ़ाओगे तो अपने किये हुए पापों-की सजा पाओगे।

हाथ जो मुझपर उठाया, अन्तको पछतायगा।
श्राप जो दूँगी तुझे, तो नाश ही हो जायगा॥

बैसाख—अरी बाहरी श्राप और सजा देने वाली पटाखा! देख, इधर देख, बैसाखने तो तुझे भ्रष्ट करनाही विचारा है। आओ मेरी जान ......

(लपकना)

कमला—(बचकर) हे परमात्मा! शीघ्र इस दुष्टसे मुझ अबला की रक्षा करो।

जिस तरह प्रभु आप आये, द्वारिकासे दौड़ कर।
उस तरह रक्षा करो, अब काम अपना छोड़कर॥

वैसाख—अरी हठीली ! अब ईश्वर वन्दना छोड़कर अपने धर्मकी रक्षा कर...

(कहकर वैसाखका कमलाके हाथ पकड़ उसे जमीनमें गिराना, उसी समय रामदासका हाथमें पिस्तौल लिये हुए आना, और वैसाखपर पिस्तौल तानना, उसका डरकर गिरना, रामदासका उसकी छातीपर अपनीलात रखना, एक हाथसे वैसाख पर पिस्तौल तानना, और दूसरे हाथसे कमलाको उठाना)

(पृष्ठ संख्या ६२ देखिये)

स्थान—मुन्ना वेश्याका कमरा।

(फर्श पर गद्दा बिछा है, तकियेके सहारे हीरालाल तथा अभयचन्द मुन्ना बीबीके अगल बगल बैठे हैं! सामने दोनों तरफ सारंगीवाले तथा तबलचीये बैठे हैं। सामने बीचोबीच पानदान, इत्रदान तथा शराबादिकी बोतलें और गिलास रखे हैं। मुन्ना गाना गा रही है, दोनों आशिक लट्टू हो रहे हैं, बाकी नौकर अपना अपना काम बजा रहे हैं)

गायन

लगा बिरहका बान मेरे तन।

नित्त प्रति फुलवन सेज बिछाऊँ,

तड़फ तड़फ योंही रैन विताऊ।

चपला चमकत गरजत घन,

पिय बिन डपत मन॥

वालि उमर योवन मद माती,
लिख लिख भेजूं पिया पर पाती।
तुम परदेश छाय रहे,
किस सौतनके कारण ॥

अभय—वाह! वाह!! क्या अच्छा गाया।

हीरा—मुन्ना! न जाने क्यों मेरा हृदय तुमसे अलग होनेको नहीं चाहता, बारम्बार तुम्हारी ओर झुका जाता है।

मुन्ना—मेरे अहोभाग्य! जो दासीपर इतनी कृपा हुई।

अभय—(स्वतः) और इस घरका सारा खर्च तुम्हारे सिर पड़ा। (गिलासमें शराब लेकर) अच्छा! अब सब बखेड़ोंको विश्राम दो, पहले यह अमृत पान करो तब आनन्दसे पुनः एक और गाना होने दो।

हीरा—हाँ! हाँ! होने दो।

मुन्ना—(अभयके हाथसे गिलास लेकर हीरा लाल से) अच्छा पहले आप यह अमृत पान करें तब मैं एक गाना सुनाऊं, जिससे गानेका पूरा आनन्द मिले।

हीरा—प्यारी! सच मुच तुम्हारे सामने मुझे कुछ कहनेका साहस नहीं होता, नहीं तो यह शराब हिन्दू धर्मके अत्यन्त विरुद्ध है

इतनी बुरी यह वस्तु है, मानत सकल अशुद्ध।
धर्मके ग्रन्थोंमें देखा, इसका छूना है विरुद्ध ॥

किन्तु तुम्हारा रूप, चाल, ढाल, तथा प्रेम देखकर मुझे विवश होना पड़ता है।

कल न पड़े दिन रात मुझे, मनको तुमने धस मोह लिया।
देखे बिन नाहीं चैन पड़े, जबसे तुमने यह दरस दिया॥

अभय—(स्वगत)

कल नहीं पड़ती अगर तो, अब भी कच्चा देखना।
फँस गया है किस तरह, उल्लूका बच्चा देखना।

मुन्ना—बजी बस कीजिये! मेरी तारीफोंसे कहीं मजलिस न गूंज उठे।

नवलची—इसमें तारीफकी कौन सी बात है, बाजार की मिठाई जिसने पाई उसने खाई।

अभय—(स्वगत) और जिसने खाई उसको मौत भी तो आई।

हीरा—प्यारी! अब एक बार पुनः एक सुन्दर गाना होने दो। कारणः—

नयन तुम्हारा कर चुके, रम्यरूप रस पान।
अब तो आतुर हो रहे, कुछ सुनने को कान॥

मुन्ना—बहुत अच्छा! गाती हूं, सुनिये! (लहरा बजनेके बाद गाना आरम्भ होता है)

गायन

मैं योवन पर मतवाली, चलती हूं चाल निराली।
झुक रही फलोंसे डाली, दो जुल्फ हैं नागन काली॥
अब मेरा योवन गदराया, रङ्ग, रूप, तन छाया।
आशिक फिदा हजारों मुझपर, खिली पानकी लाली॥

आफताव शरमिन्दा होता, देख मेरे रुख सारे।
मार नयनके वाण कराई, जेब बहुत सी खाली ॥

अभय—वाह ! वाह ! क्या सुन्दर राग है, कमाल कर दिया।

(मुन्ना अपने नौकरोंको इशारा करती है वे धीरे धीरे प्रस्थान करते हैं)

मुन्ना—प्यारे ! आज मैं तुमसे एक वात कहनेवाली हू !

हीरा— कहो ! जल्द कहो !! वह कौनसी वात है ?

मुन्ना...यहीं कि :—

कठिन है प्रेमका मारग, न इसमें मन लगाओ तुम।
वना मत प्रेममें अन्धे, अभीसे लौट जाओ तुम ॥

हीरा—क्यों प्यारी ! क्या सच्चे प्रेमकी परीक्षा चाहती हो ? अच्छाः—

हो अगर इच्छा तुम्हारी, काट सर आगे धरूं।
खोलो जवां प्यारी मेरी, जो तुम कहो सो मैं करूं ॥

मुन्ना—यही कि.:—

प्रेम पर जो जान देते, वे पुरुष ही और थे।
प्राणोंकी वाजी खेलते , वे वीर वर ही और थे ॥

हीरा—हां प्यारी ! तुम्हारा कहना अक्षरसः और सत्य है।

थे पुरुष वे और तो, मेरा भी प्रेम निहार लो।
हाथमें लेकर कटारी, मांस पिण्ड निकार लो ॥

मुन्ना—(कटार निकाल कर देना।)

यदि सत्य कहते हो अभी, तो जाओ अपने द्वार पर।
लो रक्तसे इसको भरो, तुम निज प्रियाको मारकर ॥

हीरा—बस केवल इतनी ही सी बात ? (कटार लेकर)

वह तो है बलिदान अब, तेरे तनिकसे धारपर ।
हो सैकड़ों मेरे यहाँ तो, वार दूँ इस प्यारपर ॥
(हीरालाल जाना चाहता है, मुन्ना रोकती है ।)

मुन्ना—तो बस करो प्यारे अभी, यह केवल परीक्षा मात्र थी ।
पर चाहिये कुछ धन मुझे, यह तो रचना मात्र थी ॥

अभय—(स्वतः हँसते हुए ।)

छोड़ा गया ये तीर है, अब जल्दही चुभ जायगा ।
इस प्रेममें है तू फँसा, तो अन्तमें पछतायगा ॥

मुन्ना—प्यारे ! चुप क्यों होगये ? यदि इस प्रश्नसे आपको कुछ दुःख हुआ हो, तो क्षमा करना । दूसरे मुझे ज्यादा जरूरत भी नहीं है । व्यर्थ मेरे लिये तकलीफ न उठाना ।

हीरा—नहीं प्यारी ! इसमें तकलीफकी कौन सी बात है । मैं आजही घरपर जाऊँगा और किसी-न-किसी प्रकार तुम्हारे लिये काफी रकम लेता आऊँगा ।

मुन्ना—जैसी आपकी मरज़ी ! हाँ तो अब मुझे इजाज़त दीजिये, ताकि मैं कुछ भोजन करके आराम करूँ ।

हीरा—बहुत अच्छा ! चलो, हमलोग भी चलें ।

(सबका प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य।

स्थान—मार्ग।

(अभय चन्दका गाते हुए प्रवेश)

गायन

मैं कैसा मुँह का काला हूँ, दुनियां में मतवाला हूं।
देखो यारो जल्दी मुझको, हल्दी, मिर्च मसाला हूं॥
जिसको चाहूं उसे फसाऊं, किस्मत का मैं आला हूं।
नाम "अभय चन्द" कैसा मेरा, आखिरको झपताला हूं॥
देखो यारो बचके रहना, आफत का परकाला हूं।
दुनियाँ के सारे रगड़ोंका, मैं ही गड़-बड़ झाला हूं॥
नित्य फसाऊं चण्डूलों को, मैं भी क्याही निराला हूं।
मौज उड़ाऊं इस दुनियां में, अग्नि ज़िम उजियाला हूं॥

(हँसते हुए) आखिकार मैंने भी धोखे बाजीकी स्पेशल ट्रेन छोड़ दी, मूर्ख भड़चन्द बहादुर भी मेरे पञ्जेमें आगया। झटपट बिना सोचे विचारे एक लाखके चन्दे पर सही कर दी। आखिर हूँ मैं भी तो एक ही काइयां, किन्तु यार कुछ दूर जाने पर ट्रेनने अपनी चाल धीमी कर दी, देखा तो चक्का पटरीसे बाहर हो गया था। यानी उस बेवकूफके बच्चेने रुपयेके लिये कलका वादा कर दिया। लेकिन परवाह नहीं, मैं भी वह भीमका अवतार हूं कि

उस ट्रेनको जरूर खींच खांच कर जंकशन तक पहुचाऊंगा। क्या कहूँ यारो! खींचते खींचते पसीना भी आ गया। अब जरा आराम भी कर लूँ, लेकिन नहीं, इसी बीच मुझे एक बड़ा कार्य्य और भी सम्पन्न करना है। साढ़े पांच सौ की दलाली पर बाबू वैसाखके हाथ एक शिकार सौंपना है। आप लोग शर्माइये नहीं, उससे हम लोगोंका भी मनोरञ्जन होगा। बस आजही रात हीरालालके घरमें दल-बल सहित घुस कर सुन्दरी कमलावतीको बाँध-बूँध चम्पत होना है। बाद फिर ट्रेनको खींच खांच कर कल सुबह १० बजे तक राय साहबके घर तक पहुँचाना है। और उसे भी कपोल-कल्पित महाराजा बना नगदी एक लाख रु० फाँसना है। (हँसना) लोग मुझे ठग, जुआ-चोर और बदमाश कहते हैं, किन्तु यदि आप लोग मुझसे पूछें तो मैं साफ कहूँगा, कि कहनेवाले पूरे बेवकूफ हैं। पूछिये कैसे, मैं उत्तर दूँगा, "यदि सभी धर्मात्मा बन जायेंगे तो यमराजका सहायक कौन बनेगा!" फिर तो आज कल राजा राम और हरिश्चन्द्रका भी राज नहीं है, कि हम लोग मन-मानी न कर पाते, यहाँ तो इस समय एक स्वार्थी नौकर-शाहीका राज है। फिर ऐसे राजमें यदि हम लोग अत्याचार करें तो हमारी निन्दा करने वाले बेवकूफ नहीं तो क्या वे लोग धर्मात्मा हैं? (हँसते हुए प्रस्थान)

———०———

तृतीय दृश्य।

(सरस्वती और कमला अलग-अलग पलंगपर सोई हैं। हीरालाल चारों ओर देखता हुआ धीरे धीरे आता है, और सरस्वतीके पलंगसे चाभीका गुच्छा उठा, बड़ी सावधानीसे तिजोरी के पास जाकर उसे खोलता है। नगदी, जेवर तथा रुपये निकाल, उसे उसी प्रकार बन्द छोड़ देता है)

हीरा—(दबी आवाज में) बस! अब मेरी और प्यारी मुन्नाकी इच्छा पूर्ण हो गई, अब वह मुझसे कभी रुपयेका सवाल न करेगी। अहा!

मिलगया सुख का समय, आनन्द मनानेके लिये।
खुल गये अब प्रेम फाटक, स्वर्ग जाने के लिये॥

(देख कर) सोओ! ऐ बेवकूफ औरतो आनन्दसे सोओ, लेकिन जागनेके पश्चात अपने करमपर अच्छी तरह रोओ। अब मैं सदाके लिये यहाँसे पृथक होता हूँ, और शीघ्र जाकर प्यारीको प्रसन्न करता हूं।

(प्रस्थान)

(कुछ देरके बाद चार बदमाशोंका मुँहमें नकाब डाले सावधानीके साथ प्रवेश)

अभय—(कमलाको दिखाकर) यही है, इसे जल्द उठाकर भाग जाओ, बिलम्ब करनेसे काम बिगड़ जायगा।

(सबका मिल कर कमलाको उठाना, कमलाका चौंकना, बदमाशों का उसके मुँहमें कपड़ा ठूँसना, उसी समय "आह" की आवाजका निकलना, सरस्वतीका जागना और व्याकुल होना, इधर कमलाका छटपटाना)

सर—अरे हत्यारो! तुम लोग कमला को कहां ले जाते हो......

(कहकर अभयका हाथ पकड़ना, उसका झटका खाकर गिरना, इधर बदमाशोंका कमलाको लेकर भागना, सरस्वती का व्याकुलतासे उठकर टेलीफोनके पास जाना, उनको हैण्डिल घुमाना और डाके की खबर थानेको देना तथा सहायताके लिये कुछ सिपाहियोंको बुलाना। बाद हैण्डिल रख देना और रामदास को पुकारना, रामदासका आँखें मलते आना)

सर—(रोती हुई) रामदास! भारी अनर्थ होगया! बता, बता अब मैं क्या करूं?

राम—(व्याकुलता से) क्या अनर्थ होगया माता जी?

सर—हाय! कमला डाकुओं द्वारा लूटी गई। बता रामदास अब उस बेचारीकी कौन रक्षा करेगा? (रोना)

राम—क्या लूटी गई! हाय! निद्रा तेरा सर्वनाश हो और आँखें तुम सोनेके पहलेही क्यों न फूट गईं जो मुझे स्वामी-की इस सेवासे वञ्चित किया? हाय!

इस नींदने किस जातिको, पाताल पहुँचाया नहीं।
इस नींदने किस जीवको, है अन्त रुलवाया नहीं॥

जो पड़े हैं इसके पाले, उनने खोये प्राण हैं।
इस पापिनीने कब किसे, दुनियामें भरमाया नहीं ॥

सर—(रोती हुई) हाय विधाता! अब मैं किसके भरोसे इस संसारमें जीऊँगी।

है सहारा इस जगत में, एक प्राणाधार का।
दूजा सहारा हैं मुझे, प्रभु सृष्टि पारावारका ॥
तीजा सहारा है मुझे, कमलावती के प्यार का।
चौथा सहारा हैं मुझे, सेवक तेरे ही कारका ॥

राम—स्वामिन! आप किसी बातकी चिन्ता न करें, रामदासके जीते जी उस स्वर्णमयी देवीका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।

दासके रहते न, माँ तुम, सोच को स्थान दो।
जब मिटाऊँ शत्रु को, तब तुम मुझे स्थान दो ॥
बाँध कर मैं शत्रु को, तेरी ननद ले आऊँगा।
उजड़ा हुआ यह घर तुम्हारा, जल्दही बसवाऊँगा ॥
जो न लाऊं मैं उसे, तो अन्न भी नहिं खाऊँगा।
या तो पाऊं मैं उसे, या अन्त में मर जाऊँगा ॥

आज्ञा दीजिये, मैं अभी उन लुटेरोंका संहार कर उसे छुड़ाये लाता हूं।

सर—नहीं रामदास! इस अन्धकारमयी रात्रिमें तुम उसे कहाँ खोजते फिरोगे? दूसरे डाकुओंकी संख्या भी कुछ कम नहीं है, अकेले तुम उनका सामना नहीं कर सकते।

राम—मालकिन! मुझे उन डाकुओंके खोजनेमें कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, कारण आज सारा दिवस उन्हीं बदमाशोंकी फिराकमें था, जिससे उनके मकानका पता मुझे मालूम होगया है। दूसरे डाकुओंकी संख्या ज्यादा है, इसकी तो मैं स्वप्नमें भी परवाह नहीं करता। आपके आशीर्वाद और ईश्वरकी दयासे मैं यमराजको भी कुछ नहीं समझता।

(पुलिसके साथ इन्सपेक्टरका प्रवेश)

इन्स०—क्या हीरालालका मकान यही है?

राम—जी हाँ। जल्द मेरे साथ आइये, डाका इसी घरमें पड़ा है, और डाकू हीरालालकी बहनको लेकर अभी गये हैं। अस्तु शीघ्रता कीजिये, विलम्ब करनेसे सब कामही चौपट हो जायगा।

सर—किन्तु रामदास! मैं इस समय घरमें अकेली हूँ, अच्छा होता, यदि मकानकी रखवालीके लिये कुछ पुलिस यहीं छोड़ जाते।

राम—बहुत अच्छा मालकिन! इन्सपेक्टर साहब! कृपाकर दो कानस्टबलोंको छोड़ बाकीको लेकर मेरे साथ आइये, मैं उन दुष्टोंके मकानका पता अच्छी तरह जानता हूं, आपको ज्यादा कष्ट न करना पड़ेगा।

इन्स०—बहुत अच्छा।

राम—ओ दुष्टो!

सेवक के जीते जी नहीं, उसको सताने पावोगे।
छिपके बच सकते नहीं, फिर कहाँ ले जावोगे॥

(दो कानस्टबलोंको वहीं रहनेका इशाराकर बाकीको साथ ले इन्सपेक्टर और रामदासका प्रस्थान)

——०——
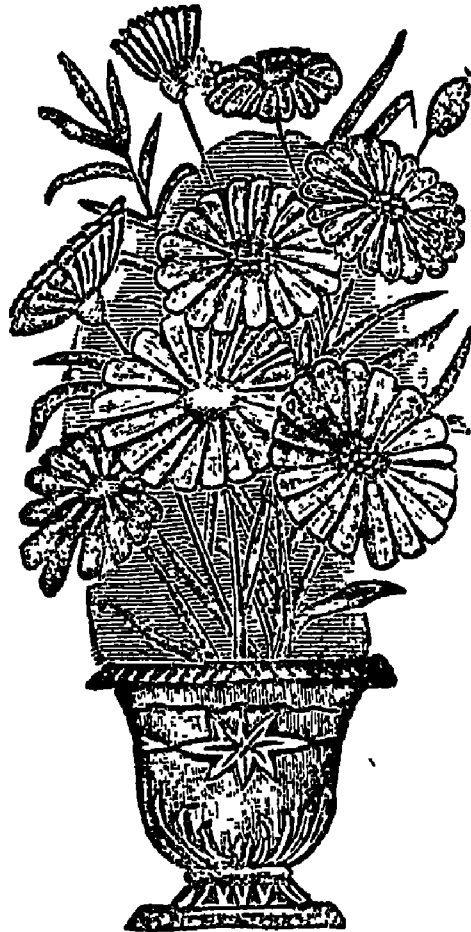
चतुर्थ दृश्य

स्थान-भड़चन्द बहादुरका मकान।

(लपेटीका गाते हुए प्रवेश)

—गायन—

लपेटी—दिलको बिना विचारे, किसके सपुर्द कर दूँ।
नाजुक बदन यह मेरा, क्या खुर्द-वुर्द कर दूँ॥
यह कमसिनीका आलम, अनोखी शान शौकत।
उभरा हुआ यह यौवन, किसके सपुर्द कर दूँ॥
हैं तलबगार लाखों, नहिं जाँनिसार कोई।
किसका करूँ भरोसा, किसके सपुर्द कर दू॥

हेमन्त ऋतुमें जिस प्रकार वनमें कीचड़ होता है, गुलाबमें कांटा होता है, उसी प्रकार प्रेममें भी एक-न-एक बाधाका समावेश होता है। यदि सुन्दर आकाशमें छोटे छोटे मेघोंके टुकड़े न दिखाई देते, तो प्रेम कैसा मनोहर और सुन्दर होता। हाय! इस समय आकाशमें न जाने बादल कहाँसे आगया, जो मेरे हृदयको हताश बना रहा है। हे ईश्वर! अब मैं कबतक अपनेको मनुष्योंकी आँखोंसे बचा रखूँगी? दिन पर दिन चेहरा सूखा जाता है, आईनेमें ही देखनेसे मालूम होता है। लोग मुझको देखकर सन्देह

करते और कहते हैं कि लपेटीका चेहरा खराब होता जाता है। माँ पूछती है, लपेटी तेरी आँखें क्यों धँस गईं? मुँह क्यों पीला पड़ गया? शरीरमें मांस क्यों नहीं है? इस प्रकार वह नित्य मुझसे सवाल किया करती हैं। परन्तु मैं शर्मके मारे उन्हें क्या जवाब दूँ? पिता कुछ देखतेही नहीं, यदि माँ मेरी बाबत कुछ कहती हैं तो उसे यही कहकर टाल देते हैं कि मेरी लपेटी अभी बच्ची है। अभीसे उसके लिये वर-की तलाश करके क्या होगा? हाय! मेरा जीवन योंही नष्ट हुआ जाता है। यह उमड़ी हुई जवानी, यह खिला हुआ योवन, ढला जाता है, मेरे पिता इसे किसीको भोगने नहीं देते। पके फलके मानिन्द इसे टोकरीमें रखकर सड़ा रहे हैं। हाय! अब मुझसे नहीं सहा जाता।

(सुन्दरीका प्रवेश)

सुन्दरी—अरी लपेटी! क्या तूने कुछ खबर सुनी है?

लपेटी—कैसी खबर! अब मैं कुछ भी खबर अबर नहीं सुनना चाहती, तुम अपनी खबर अपने ही पास रक्खो।

सुन्दरी—अरी! तू तो बिलकुल बेहया होगई, तुझसे कोई बात करने आवे तो तू आसमानमें ही चढ़ी जाती है, कुछ कारण भी तो बता?

लपेटी—माँ! जाओ दिक मत करो, न तो मेरे पास कोई कारण है, और न मुझे किसीकी बातेंही अच्छी लगती हैं। मैं तो आपही अपनी ज्वालासे मरी जाती हूँ।

सुन्दरी (चौंककर) ऐं ज्वाला ! (ओंठ पकड़कर) मेरी सोने-की चिड़िया, मेरी प्यारी बोलती मैना, बता तो तुझे किस बातको ज्वाला सता रही हैं, तू क्यों इतनी सूखी जा रही है।

लपेटी—माँ ! क्या कहूँ, कहते लज्जा आती है। (देखकर) ओहो ! पिताजी आ रहे हैं, अब मैं जाती हूँ।

(प्रस्थान)

(भड़चन्द बहादुरका हँसते हुए प्रवेश)

भड़—महिलाओ ! देखो अब मैं महाराजा बन गया हूँ (हँसना) इसलिये अब तुम सब जाग जाओ, देखो तुम लोगोंके न जागनेसे हमारी सरकारकी उन्नति कभी न होगी। बहिनो ! तुम लोग आनन्द शैय्या छोड़कर उठो और उठकर भारतका उद्धार करो।

सुन्दरी—बहन किसे कहते हो जी ?

भड़—तुमको, लपेटीको, संसारकी सभी स्त्रियोंको बोलता हूं, कि बस अब सब जाग जाओ।

सुन्दरी—जागें क्या ! क्या हमलोग सोईं हैं ?

भड़—हां बहिनो ! तुम सब घोर निद्रामें सोई हो, अब तुम्हें मेरे साथ मोटरपर बैठ, बड़े बड़े साहबोंके यहाँ उनकी पूजा करने एवं देशके बड़े बड़े बदमाशोंसे जान पहचान और शेक-हेण्ड करना होगा। देखो ! तभी हमलोग भारतवर्षके प्रधान नेता गिने जायगे।

(हँसना)

सुन्दरी—अजी चलो भी! मैं गोरे चमड़ेवालों और बदमाशोंसे हाथ मिला अपने पवित्र हाथको कलुशित न करूंगी। क्या तुम्हें और कोई बातेंही नहीं करनेको मिलतीं, जो नित्य ऐसी बेतुकी बातें किया करते हो?

भड़—देखो! अब मैं महाराजा होगया हूँ, तुम्हारी बातें सुन सुन कर मेरे बदनमें ज्वाला उठने लगती है।

सुन्दरी—ओहो! अब आप महाराजा होगये, और इधर आपकी लड़की स्वयंही ज्वाला ज्वाला कहकर आपके नामपर तड़पा करती है। सोलह वर्षकी लड़की होगई, कुछ खबरही नहीं लेते।

भड़—हत्तेरे की! आखिर उसे कौन सी महामारी होगई।

सुन्दरी—जवान लड़कीको घरमें रखनेसे जो होता है, वही हुआ! क्या चेहरा देखने ही से मालूम नहीं पड़ता?

भड़—(हँसते हुए) कुछ परवाह नहीं, मैं अभी बाबू अभयचन्दजीके मित्रको उसके पास भेज देता हू वे बड़े भारी डाक्टर हैं, उनकी डाक्टरी बड़ीही सुन्दर है। उनके एकबार देखतेही वह एकदम भली चँगी हो जायगी।

सुन्दरी—अजी! अभयचन्द किसका नाम है?

भड़—अरी चुप, चुप, ऐसे बड़े आदमीके नामके आगे श्रीमान् लगा कर तथा नामके बाद जी शब्द जोड़कर बातें किया कर, नहीं तो बना बनाया: सारा घरही चौपट हो जायगा।

सुन्दरी—अजी, रहने भी दो, पहले यह बतलाओ, कि वह है कौन?

भड़—वह एक बड़े भारी गुण्डा दलके सर्दार हैं, उनके भयसे रास्तेके चलनेवालोंसे लेकर म्युन्स्पेल्टीके मेम्बरतक थरथर काँपते हैं। उन्होंने अपने प्रवल पराक्रमसे न जाने कितने मनुष्योंको सिर्फ १००००० या ५०००००० ही लेकर जमींदार वा महाराजा बना दिया। उनके आगे इस सरकारकी कुछ भी नहीं चलती। समझी?

सुन्दरी—तो क्या! तुम्हें भी उसीने महाराजा बनाया है?

भड़—हाँ! उसी महापुरुषने मुझे महाराजकी उपाधिसे विभूषित किया है। (हँसते हुए) अब मैं महाराजा होगया। प्यारी, देखो! उन्होंने मुझपर कितनी कृपा की जो एक लाखमें ही महाराजा बना दिया। (हँसते हुए) वे बड़े दयाके भण्डार हैं।

सुन्दरी—क्या कहा! एक लाख रुपया, और क्या तुमने उसे दे दिया?

भड़—नहीं, नहीं; रुपये तो मैंने अभीतक नहीं दिये, किन्तु उसके पवित्र हैण्ड नोटपर सही अवश्य कर दी है। आज रुपया देनेको मैं वादा भी कर चुका हूं, (हँसते हुए) क्योंकि मैं कलसे महाराजा होगया हूँ।

सुन्दरी—अजी जाओ भी! मैं उस निगोड़ेको एक कानी कौड़ी भी न देने दूँगी।

भड़—(हँसते हुए) प्यारी! ऐसा न कहो, महाराजा होना बहुत अच्छा है, फालतू रुपया रखकर क्या होगा। (हँसना)

सुन्दरी—अजी ! आग लगे ऐसे महाराजा बनने और बनानेवालेके मुँहमें । रास्तेका भिखारी, कोकिनखोर, बदमाश जन-साधारणको धोखा देनेवाला इन्हें महाराजा बना देगा !

भड़—हैं, हैं ; यह तू क्या बकती है, मिस्टर अभयचन्द बड़ेही अच्छे आदमी हैं, उनका सम्मान यहांके बड़े बड़े बदमाश अफसरोंमें है । देखती नहीं ! कलकत्तेमें जितने मेहतर हैं, उनके सर्दार मिस्टर रेले उनका इतना स्वागत करते हैं कि म्युन्स्पेल्टीकी कूड़ा गाड़ीभी उनको सन्ध्या समय हवा खाने के लिये भेज देते हैं और तुम उनका अनादर करती हो !

सुन्दरी—हाँ, हाँ ; एकबार नहीं, हजार बार करती हूँ । रुपया लेने और देनेवाले दोनोंको झाड़ू मारती हूँ ।

भड़—देखो प्यारी ! ऐसा मत करो, रुपया नहीं देनेसे सारा कामही चौपट हो जायगा ।

सुन्दरी—आग लगे ऐसी प्यारीके प्यारमें, चौपट हो जायगा तो यहाँ डर किसे दिखाते हो, मैं तो एक पाईभी न दूँगी । और दूसरे जितने रुपये बेंकमें जमा हैं अगर तुमने उनमेंसे एक पाई भी निकाली तो सारे घरमें आग लगा दूँगी ।

भड़—(हँसते हुए) तो क्या तुम मेरे महाराज होनेसे डाह करती और गुस्सा होती हो ? देखो ! तुमने मेरे महाराजा बननेमें अगर स्वप्नमें भी बाधा पहुँचाई तो मैं फौरन फाँसीका हुक्म दे दूँगा । (हँसते हुए) अरे तू ! तो मेरी अर्धाङ्गिनी है, फिर गुस्सा क्यों करती हो ।

(नौकरका प्रवेश)

नौकर—महाराज की जय हो। फटकचन्दके साथ बाबू अभय-चन्दजी आपको बैठकमें बुलाते हैं।

भड़—देखा प्यारी! वे आ गये, लाओ-लाओ, जल्दी रुपये लाओ, नहीं तो मेरी महाराजकी पदवी बिलकुल छिन जायगी। और मैं दिवालिया कहलाने लगूँगा।

सुन्दरी—दिवालिया कहलाओगे तो मैं क्या करूँ? उसे देनेके लिये मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। (प्रस्थान)

भड़—कैसी घूरती है, मानो मुझे कच्चाही चबा जायगी! ऐं! इतना घमण्ड! अच्छा रह, मैं तुझे कलही फांसीका हुक्म दे दूँगा। (बाहरसे आवाजका आना) महाराज भड़चन्द बहादुर आते हैं या नहीं?

भड़—अरे भाई। अन्दर ही न चले आओ। (हँसते हुए) इस महाराजकी पदवीका जो बाधक होगा, उसे बिना कुछ सोचे विचारे, एक दम फांसीका हुक्म सुना दूँगा।

(दोनोंका प्रवेश)

दोनों—गुड मौर्निंग महाराजाधिराज भड़चन्द बहादुर!

भड़—हाँ! हाँ!! आप घबड़ाइये नहीं, मैं अभी आपको एक लाख का चेक कंगाल बैंक औफ इण्डिया लिमिटेडके नाम काट देता हूँ।

(चेक निकाल कर लिखना और फटकचन्दको देना उसका मुस्कराते हुए जेबके हवाले करना)

सभय—अच्छा ! तो अब हम लोग जाते हैं......

भड़—लेकिन ठहरिये, बाबू फटकचन्दको आज यहीं छोड़ जाइये ; क्योंकि मेरी बेटी लपेटीको न जाने किस महामारी ने धर दबाया है। वह रातदिन ज्वाला-ज्वाला कहकर चिल्लाया करती है। इसलिये उसकी दवाई कराना बड़ा जरूरी है।

सभय—ज़रूर, ज़रूर, आप इन्हें लेजाइये और अपनी बेटीसे इनका शेकहेण्ड भी करा दीजिये ! यह उसे बातकी बातमें आराम कर देंगे, अच्छा तो अब मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

भड़—डाकृर साहब ! उसे कोई ऐसी दवा पिलाइये कि वह चटपट चँगी हो जाये। देखिये ! मैं आपको अच्छा इनाम भी दूँगा।

फटक—(हँसते हुए) मैं उसे ऐसी दवा पिलाऊँगा, कि वह जन्म भर ज्वालाका नाम ही न लेगी। आइये चलिये ! देखें उसको क्या रोग हो गया है।

भड़—हाँ ! हाँ ! चलिये !

फटक—(हँसते हुए) यारो ! घरमें घुसनेका तो श्रीगणेश हुआ, अब बाबा "भैरो नाथ"का ही भरोसा है।

(दोनोंका प्रस्थान)

—०—
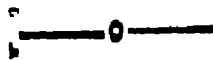
पञ्चम दृश्य

स्थान-अभयचन्दका मकान ।

अभयचन्द, वैशाखनन्दन तथा दो और बदमाश मुंहपर नकाब डाले कुर्सियों पर बैठे हैं ! सामने जमीन पर बेहोश कमला पड़ी है । एक बदमाश गुलाब जल की शीशीसे कमलाके मुंहपर गुलाब जल छिड़कता है, कमला होशमें आकर चारों ओर देखती है ।

कमला—अरे ज़ालिमों ! आखिरकार तुम मुझे यहाँ लेही आये, बताओ-बताओ, तुम सब कौन हो ?

अभय—सुन्दरी ! क्या तुम हम सबोंका परिचय जानना चाहती हो ?

कमला—हाँ ! प्रथम मैं तुम सबोंका परिचय जानना चाहती हूं ।

वैसाख—अगर हमलोग अपना परिचय न दें तो ?

कमला—तो मैं यही समझूँगी, कि तुम सब मनुष्य नहीं बल्कि मनुष्यके रूपमें भेड़िये हो ।

अभय—क्या ऐसी बात ?

कमला—हाँ, हाँ ; ऐसी बात ।

अभय—अच्छा तो ले देख ! मैं तेरा पूर्व परिचित तेरे भाईका मित्र "अभयचन्द" हूं । (प्रकट होना)

कमला—(चौंककर घबड़ाते हुए) अरे हरामज़ादे अभय ! तू मित्र

के नामको क्यों कलंकित करता है। अरे तू मित्र नहीं बल्कि एक विषधर सर्प है।

कौन तुझको मित्र कहता, तेरे इस बदकार पर।
धिक्कार दुनियां दे रही, तुझको तेरे इस कारपर॥
फिर क्यों कलङ्कित कर रहा, उस मित्रताके सारको।
मित्रताका है भरोसा, मित्र मय संसार को॥

वैसाख—और इधर देख! यह तेरा पुराना आशिक "वैसाख" भी यहाँ मौजूद है। उस बार तो मेरे पञ्जेसे बच गई थी, परन्तु इसबारकी स्वप्नमें भी आशा न करना।

(प्रकट होना)

कमला—अरे ओ, निर्लज्ज वैसाख! क्या तुझे उतनेपर भी शर्म न आई? अच्छा बता, बता; यह दो बाकी हरामज़ादे कौन हैं, जो अभीतक बोलनेका नामतक नहीं लेते?

दोनों—सुन्दरी! हम दोनोंही तुम्हारे भाईको कैद करने वाले हैं।

(प्रगट होना)

कमला—(चौंककर) क्या कहा! भाईको कैद करनेवाले? तो क्या तुम सबोंने उन्हें भी यहाँ बाँध रखा है?

वैसाख—हाँ, सुन्दरी! वे भी इस मकानके तहखानेमें अपने जीवनकी घड़ियाँ बिता रहे हैं।

कमला—अरे हत्यारो! व्यर्थ उस बेचारेको क्यों सता रहे हो? मैं तुम सबोंके हाथ जोड़ती हूँ, उसपर रहम करो।

वैसाख—सुन्दरी ! हम लोग उसपर रहम कर सकते हैं ; केवल तेरे एक चीज देनेपर।

कमला—मेरे पास तो ऐसी कोई चीज नहीं, और अगर है तो वह भाईसे बढ़कर अज़ीज़ नहीं। माँगो क्या माँगते हो ?

मेरे भाईका जो इस, तनसे कुछ उपकार हो।
आनन्दसे ले लीजिये, जिस चीजकी दरकार हो ॥

अभय—सुन्दरी ! किसी चीजकी जरूरत नहीं, केवल तेरे एक "हाँ" परही तेरे भाईका उद्धार है।

कमला—अच्छा तो मैं "हाँ" कहती हूँ।

दया कर दो बिचारे पर, समय है कुछ भलाईका।
"हाँ" मैं हूँ कह रही, तुम दे दो हुक्म रिहाईका ॥

वैसाख—परन्तु ऐ सुन्दरताकी खान ! क्या तुम इस "हाँ" का मतलब जानती हो ?

कमला—"हाँ" इसका मतलब यही है कि मैं आजसे आप लोगोंको गालियाँ देना बन्द कर दूँगी।

प० चद०—नहीं ! नहीं !! इस "हाँ" का मतलब यह है, कि तुम हम सबोंकी वेश्या बन आनन्दसे जीवन बिताओगी।

कमला—क्या तुम सबोंकी यही इच्छा है ?

सब—हाँ सुन्दरी ! हम सबोंकी यही इच्छा है।

कमला—तो अब इस इच्छाको मरोड़कर बाहर फेंक दो, और उस जिह्वाको काट डालो जो एक विवश असहाय अबलाके प्रति ऐसे शब्द निकालती है।

दू० बद०—बस बस ज्यादा न बढ़, अपनी जुबानको लगाम दे ;

कमला—अरे जालिमों! जबतक मेरी जुबानके टुकड़े टुकड़े न हो जायगे...

तब तक मेरी यह बात, कभी बन्द न होगी।

दम बन्द हो लेकिन, जुबाँ बन्द न होगी॥

बैसाख—देख! हम सभी तेरे लिये फूलोंकी सेज सजायेंगे।

कमला—अरे मूर्खों! उस सेज पर अङ्गारे डाल दो, उसे उठाकर नरकमें फेंक दो।

कितनोंने खोये धर्म अपने, ऐसी सेजोंके तले।

आज भी शमसान है, फूलोंकी सेजोंके तले॥

अभय—मैं पूछता हूँ, क्या तू हम लोगोंकी बात न मानेगी?

कमला—और मैंभी पूछती हूँ, क्या तुम सब मुझे इसी लिये यहाँ लाये हो?

सब—हाँ! हाँ!! इसी लिये।

कमला—अरे नरकके कीड़ो! क्या तुम सबोंको कोई दूसरा काम नहीं है, जो दूसरोंकी बहू बेटियोंको सताना ही अपना कर्तव्य समझ रक्खा है?

बद—सुन्दरी! हम लोग उपदेश लेनेकी इच्छासे तुम्हें यहाँ नहीं लाये हैं।

कमला—हे परमेश्वर! देख देख, तेरी इस पवित्र सृष्टिमें यह कैसा घोर अत्याचार हो रहा है? और तू अभी तक शेष शय्यापर आनन्दसे शयन कर रहा है।

वैसाख—तो क्या तू मेरी बात न मानेगी ?

कमला—तनमें प्राण रहते कभी नहीं।

अभय—अरी पगली ! वृथा क्यों हठ करती है, तेरे केवल उसी "हाँ" पर तेरा और तेरे भाईका उद्धार है। नहीं तो तेरा भाई अवश्य मारा जायगा।

कमला—मूर्ख !

यदि वे मरेंगे तो मैं भी मरूंगी।
मगर तेरी बातोंपर "हाँ" न करूँगी ॥

अभय—तो याद रख, आज तू भी यहाँ क़त्ल की जायगी।

कमला—अभय ! तू किसे डर दिखाता है ? क्या तू नहीं जानता, कि हिन्दूकी लड़कियाँ मरनेसे भय नहीं करतीं ? क्या तुझे यह ज्ञान नहीं, कि पति शोकातुर हिन्द-ललनायें जलती हुई चितामें कूदकर पतिका साथ देती हैं ?

अभय—(गुस्सेसे) मित्र वैसाख ! उठो, और इस हरामज़ादीका धर्म भ्रष्ट कर अपनी बहुत दिनोंसे लगी हुई इच्छा पूर्ण करो, मैं तुम्हें इसके लिये पूर्ण अधिकार देता हूँ।

(प्रस्थान)

कमला—

हे परमेश दयामय सागर, रक्षा करो हमारी नाथ।
दुष्ट वार यह करता हमपर, तुम हो मेरे दीना नाथ ॥

वैसाख—(हँसकर) सुन्दरी ! इसबार तुझे मेरे पञ्जेसे कौन छुड़ायेगा ?

कमला—वही! जिसने प्रथमवार तुझ जैसे नीचके पञ्जेसे छुड़ाया था।

वचाया जिसने गजको था, वही मुझको वचायेगा।
सुनेगा टेर जब मेरी तो, प्यारा "राम" आयेगा॥

वैसाख—वस, वस, अब इन धमकियों को रहने दो और आकर गले लग जाओ...

(कहकर उसके ऊपर लपकता है, उसी समय "खबरदार" की आवाज आती है, सब डर जाते हैं। पिस्तौल लिये चार कानस्टवलों तथा इन्सपेक्टरके साथ रामदासका आना। कानस्टवलोंका दोनों पर पिस्तौल तानना तथा इन्सपेक्टरका वैसाखको गिराकर उसकी छाती पर लात रख पिस्तौल तानना। इधर रामदास का कमलाको उठाना उसका वेहोश हो रामदासके कन्धेमें गिरना।

कर लो बन्दी पापियों को, पाप का अब अन्त हो ।
आजसे भारत निवासी, शूरवीर महन्त हो ॥

षष्ठ दृश्य ।

स्थान-भड़चन्दका बगीचा ।

(फटकचन्दका हँसते हुए प्रवेश)

फटक—हा ! हा ! हा ! बात-की-बातमें मेरी किस्मतका सितारा चमक उठा । रास्ते रास्ते ठोकर खाकर "बाबा भैरो नाथ"की दया और समयके उलट-फेरसे अब मैं एक दम डाकृर बन बैठा हूँ । आज कल मैं महाराज भड़चन्द बहादुरके खानदानका एक प्रतिष्ठित डाकृर हो गया हूँ, और छिपे छिपे उसी पाजीका दामाद भी बन बैठा हूँ । क्या कहूँ यारो ! जिस दिन घरमें डाकृर बन कर जानेका श्रीगणेश हुआ, उसी दिन वहाँ बड़े अचम्भेकी बात देखी । (हँसना) भाई ! कहते बड़ा आनन्द आता है, कि श्रीमतीको तीन मासका पेट था । आप लोग हँसते क्यों है ? सुनिये ! मैंने भी इस विषयमें उस साहसका काम किया, कि आप लोग सुनकर दंग होजायँगे । यानी सिवा आप लोगोंके आजतक मैंने किसी के सामने जाहिर नहीं किया । बाद चिकित्सा करते करते हम दोनोंमें पवित्र प्रणयका सञ्चार हो गया । हाय ! जितने दिन वह यहां रहेगी, उतने दिन भाई मैं तो बाहर जा ही नहीं सकता । फिर तो आजकल मेरे पास पैसेकी भी कमी

नहीं। अगर मेरे कहनेपर आप लोगोंको विश्वास न होतो यह देखिये, एक लाखका चेक मेरी जेबकी शोभा बढ़ा रहा है। वाहरे मेरे "भैरोनाथ" बाबा तुम्हारी ही कृपासे "आगया है बेंक औफ कंगाल मेरी जेब में।"

(लपेटीका प्रवेश)

लपेटी—अजी! कौन कंगाल तुम्हारी जेबमें आगया ?

फटक—(स्वगत) हाय ! हाय !! अब क्या जवाब दू । (प्रगट) प्यारी ! कुछ नहीं ऐसे ही व्यर्थकी बातें सोच रहा था।

लपेटी—आखिर क्या सोच रहे थे, कुछ मुझे भी तो बताओ ?

फटक—किसी बेवकूफने आज मेरे साथ.दिल्लगी की थी।

लपेटी—कैसी दिल्लगी ?

फटक—पाकेटमें जूता।

(लपेटीका मुसकराना)

लपेटी—अच्छा बाबू साहब ! आज मेरे सरमें दर्द हो रहा है ; शिर एक दम चक्कर खा रहा है।

फटक—(फुर्तीसे देखते हुए) कुछ परवाह नहीं। (स्टैटिसकोप निकालकर) आओ देखें ! तुम्हें कौनसी महामारी होगई है ?

लपेटी —ऐसा इलाज मैं नहीं कराती।

फटक—(पाकेटसे शीशी निकालकर) तब यह शीशी लो, और नाकमें लगाकर सूँघो. दर्द अभी भाग जायगा।

लपेटी—अजी शीशीसे मेरा दर्द नहीं जायगा, एक बार मैं बागीचे की सैर करूँगी ?

फटक—तो जाओ ! खूब सैर करो, कहो तो मोटर भी मँगवा दूँ ?

लपेटी—नहीं मोटरका कोई काम नहीं, सिर्फ तुम्हें ही मेरे साथ चलना होगा ।

फटक—(चौंककर) मुझे ! और तुम्हारे साथ घूमने ?

लपेटी=हाँ ! हाँ ! मेरे साथ घूमने ।

फटक—अरे कोई देखेगा तो क्या इज्जत रह जायगी ?

लपेटी—अजी ! इसमें इज्ज़तकी कौन सी बात है, मियाँ बीबी राजी तो क्या करे काज़ी ।

फटक—(स्वगत) अरी मेरे बापकी नानी, तू इतना क्यों होती है दीवानी । (प्रगट) तो क्या तुम्हें अकेले जानेमें डर लगता है ?

लपेटी—हां ! वहां मुझे अकेले जानेमें डर लगता है ।

फटक—तब तो मैं भी नहीं जाऊँगा ।

लपेटी—क्यों ?

फटक—क्योंकि वहाँ कोई भूत होगा ।

लपेटी—अजी ! वहाँ भूत ऊत कोई नहीं है ।

फटक—तब पहले यह बतलाओ कि तुम जाओगी कहाँ ?

लपेटी—इडनगार्डेन ।

फटक—अररर ! इतनी दूर तुम पैदल जाओगी ? नहीं, नहीं : मैं अभी फिटिन गाड़ी मँगाये देता हूँ ।

लपेटी—सुनो भी तो ! पहले यह बताओ कि तुम मेरे साथ चलोगे या नहीं ?

फटक—(स्वगत) वाहरे मेरे "भैरो नाथ" वावा! हो तुम भी एक ही काइयाँ, मेरा यहां तक आदर!

लपेटी—जवाव क्यों नहीं देते? हां! हां! मुझे मालूम होगया...

फटक—अरे क्या खाक मालूम होगया, कुछ वताओ भी तो?

लपेटी—यही कि तुम मुझे प्यार नहीं करते, (रूठ जाना)

फटक—ना, ना; मेरी प्यारी! मैं तुझे ऐसा प्यार करता हूँ, कि अगर मेरा वस चले तो विना नमक मिर्च लगाये, कच्चा ही खाजाऊँ। पर एक वात तो सुनो!

लपेटी—वह क्या?

फटक—यही कि प्रथम एक मजेदार चुटकीला गाना यहींपर सुनाओ, जिससे मुझे विश्वास हो जाय कि तुम वहाँ भी सुनाओगी।

लपेटी—अच्छा सुनिये।

गायन

करूँ तन मन निसार, बांके दिलदार यार।
चलो गार्डनमें गाना, सुनाऊँ मजेदार॥
शादी रचाऊँगी तुमसे ही प्यारे,
तुमको ही दिलका किया है मुख्तार।
सुखसे कटेंगी जवानीकी रतियाँ,
नई दुलहिनके योवनको लूटो वहार॥

(दोनोंका प्रस्थान)

———

सप्तम दृश्य

स्थान—मुन्ना वेश्याका शयनागार।

(सजे हुए कमरेके कोनेमें एक सुन्दर कोचपर हीरालाल शयन
कर रहे हैं, इधर मुन्ना व्यग्र हो गाना
गारही है)

गायन

मैं तो योवनकी अनवट दिखाऊँ, दिल लुभाऊँ।
मोहनी जाल डालूँ, सोनेकी चिड़िया फसाऊँ, दिल लुभाऊँ ॥
करूँ लाखोंको घायल हो मायल दे पैसा,
मैं जेवर छना-छन्न वनाऊँ ॥
जुल्फोंके फन्देमें नखरेके धन्धेमें,
लकड़ीके पुतले वनाऊ ॥
ऐसा जादू करूँ उनको चौकड़ी चलना भूलाऊँ।
खेलू कोई ऐसा दाँव, करूँ ओ घात,
गलेमें हाथ, हँसके वात,
थोड़े दिनोंमें तमाशा दिखाऊँ ॥

(अभयका प्रवेश)

अहा, अभयचन्दजी! आइये, वड़े मौकेपर आगये, मैं अभी
आपहीका इन्तजार कर रही थी।

अभय—क्यों न हो, यह सब आपकी मेहरबानी है।

मुन्ना—देखिये, अभय बाबू! अब कोई दूसरा इन्तजाम करना पड़ेगा,क्योंकि जब देखो तब यह मेरेही यहाँ पड़े रहते हैं, ऐसी दशामें न तो मैं दूसरा चण्डूलही फँसा सकती हूँ, और न इनके पास कुछ है ही जो ले सकूँ। इसलिये अब इनके साथ रहनेको जी नहीं चाहता।

अभय—(स्वगत) भला अब क्यों चाहने लगी ?

माल मता जब साफ हुआ, यह हुए कुड़क बँगाली।
"जी नहीं चाहत संगमें इनके" ऐसी चाल निकाली॥

(प्रगट) तब इसमें चिन्ता किस बातकी, इन्हें जल्द यहाँसे रफू-चक्कर करो।

मुन्ना—हाँ! सोचती तो मैं भी यही हूँ, पर रफू-चक्कर करूँ तो कैसे करूँ ?

अभय—(हँसते हुए) इसका उपाय बिलकुल सहज है, आजही इनके जागनेपर तुम रुपयेका सवाल करो, यदि कुछ भी इधर-उधर करें तो निकाल बाहर करो।

मुन्ना—और अगर दे दें तो ?

अभय—तब तो और भी अच्छा होगा, लेकिन देंगे कहाँसे ? अब उन्हें अपने घरपर चोरी करनेका मौका भी नहीं मिल सकता, कारण आजकल इनके घरमें पुलिसके बागड़-बिल्लों-का कड़ा पहरा है।

मुन्ना—परन्तु अभय बाबू! मेरी इस इच्छाके साथ-ही-साथ एक

और भी इच्छा है, इस मूर्खको यहाँसे निकालनेके पहले किसीका कर्ज़दार भी बना दूँ, ताकि इसे यह हर समय याद रहे कि "घरकी रोटी छोड़कर. बाजारकी पूड़ी और कचौड़ी खानेका बड़ा भयंकर परिणाम होता है।"

अभय—(स्वगत) यारो ! कहो क्याही मार्केकी बात है ! (प्रगट) यह तो और भी ठीक है। इनके इधर-उधर करनेपर तुम उधार का सवाल करना, इधर मैं उधार लानेपर राजी होजाऊँगा। उसी समय तुम इस उल्लूके पट्ठेसे हैण्डनोट लिखवा लेना, बाद मैं कुछ व्यंगकारक बातें सुना दूँगा, इसके गुस्सा होतेही निकाल बाहर करना। (हँसना) कहो बीबी साहबा ! मैंने कैसी युक्ति बताई कि दोनों हाथसे मोतीचूरके लड्डू झड़ रहे हैं।

मुन्ना—हाँ प्यारे ! युक्ति तो तुमने बहुतही सुन्दर बताई।

अभय—तो बस ! अब इसके पास जाकर कुछ सेवा करो और जागने पर अपना मुख कुछ मुर्झाया हुआ बना लेना। बड़ी पूछ-ताछ करनेपर अन्तमें रुपयेका सवाल करना, तबतक मैं भी बाहरसे आऊँगा और तुम्हारी हाँ-में-हाँ मिलाऊँगा।

(प्रस्थान)

मुन्ना—ओ, मित्रके साथ दगा करनेवाले हरामखोर अभय ! ठहर, फतिंगे जब मरनेपर आते हैं तो उनके पर जम आते हैं। इस हिसाबसे तेरा भी इस घरसे कका-लिह्ला है। तेरी यह आशा कभी वर्णन होगी कि मुन्ना तुझे तेरी दलालीके रुपये देगी

और तेरे प्रेमकी भिखारिनी बनेगी, बल्कि तुझे भी आज तेरीही बताई हुई युक्तिसे निकाल बाहर करूंगी। क्या तू यह अभीतक नहीं जानता कि वेश्यायें प्रेमकी चाहनेवाली नहीं, धनकी चाहनेवाली होती हैं। हाँ! अब चलू और प्रथम इस पाजीकी खबर लूँ ततपश्चात दूसरा वार तेरेपर होगा।

कहकर हीरालालके पास जाना, सिरहाने बैठ पंखा झलना और ठण्ढी ठण्ढी हवाके लगनेसे हीरालालका आखें मलते उठना तथा मुन्नाका चेहरा देखकर व्याकुल होना।

हीरा—प्यारी! आज तुम्हारा मुखकमल क्यों मलीन होरहा है।

किस लिये इस मुखकमलपर, है घटा छाई हुई।
क्यों किस लिये प्यारी कहो, है आँख शरमाई हुई॥

मुन्ना—प्यारे!

कुछ बात ऐसी आपड़ी, जिससे घटासी छा गई।
कुछ रञ्जके पड़नेसे प्यारे, आँख भी शरमा गई॥

हीरा—परन्तु प्यारी! कुछ कारण तो अवश्य होगा।

मुन्ना—प्यारे! क्या कहूँ —

बीती जो आफत मेरेपर, सुनाई नहीं जाती।
फूटी हुई तकदीर कभी, बनाई नहीं जाती॥

हीरा—(व्याकुलतासे) प्यारी! यह क्या कह रही हो?

कुछ बात साफ साफ बताओ जबानसे।
क्या गजब तुम पै है टूटा आसमानसे॥

मुन्ना—प्रियत्तम !

बात ऐसी है कठिन, जो सही जाती नहीं।
इसलिये प्यारे न पूछो, कुछ कही जाती नहीं॥

हीरा—नहीं प्यारी !

मैं सुननेको तैय्यार हू, चाहे जैसी जवर हो।
तुम कह दो गर मेरे, मरनेकी खवर हो॥

मुन्ना—नहीं प्यारे ! बात सिर्फ इतनी ही है, कि आज मुझे ५०००) रु० की बड़ी ज़रूरत है, किन्तु आपसे कहते मुझे शर्म आती थी ; इसी लिये उसे इतना भयानक बतागई। परन्तु जब आपने न माना तो अन्तमें विवश होकर मुझे कहनाही पड़ा।

(रुपयेका नाम सुनकर हीरालालका माथे पर हाथ रख सोच करना, मुन्ना का भी मुँह दूसरी ओर फेर लेना तथा अभयचन्दका आना)

अभय—(देखकर स्वगत) ठीक है ! चिता बनकर तैय्यार होगई है, अब सिर्फ इसमें अग्नि लगानेकी जरूरत है। चलू ! और मैं भी अपनी चतुराईसे इस दुष्टको इसके घर छोड़नेका फल चखाऊ, और अपना रास्ता भी निष्कंटक बनाऊँ। (पास जाकर) कहो, मित्र आनन्द तो है ? (उत्तर न पाकर) परन्तु यह क्या !

हंसी खुशीको त्याग लगाया, कैसा रगड़म-रगड़ा है।
तुम भी चुप, यह भी चुप, कैसा झगड़म-झगड़ा है॥

हीरा—मित्रवर! तुम जानते हो, कि इस समय मेरे पास एक पैसा जहर खानेको भी नहीं है। आज तक जो रकम मैं घरसे लाया वह सीधे इन्हींके आगे रख दी, पासमें एक छदाम भी नहीं रक्खा, परन्तु आजकल घरमें भी पुलिसका पहरा होनेके कारण लाचार होगया हूं। ऐसी दशामें तुम्हारी मुन्ना ने मुझ से ५०००) रू० का सवाल किया है। तुम्हीं बताओ! इस सवालको मैं किस प्रकार हल कर सकता हूँ? यही कारण है, कि मेरा मन कुछ उदास सा हो गया है।

मुन्ना--हाँ बाबू साहब! बात तो यही है; परन्तु यदि मैं यह जानती कि इस सवालसे इनको इतना कष्ट होगा, तो मैं ऐसा सवाल कभी करतीही नहीं!

मैंने ऐसी बातको नहिं स्वप्नमें आश्रय दिया।
हाय मेरे भाग्यने ही मुझको निराश्रय किया॥

(रोनेका नाट्य करना)

अभय—(हसते हुए) अरे! तो तुम रोती क्योंहो, तुम्हारे सवाल से इनको कुछ भी कष्ट नहीं हुआ, कारण अगर यह लाना चाहें तो इनके लिये ५०००) कोई बात नहीं है!

हीरा—(चौंककर) क्या कहा, अभयचन्द! यह रकम लाना मेरे लिये बड़ी बात नहीं?

मुन्ना—हां! यह तो मैं भी कहती हूँ कि इतनी छोटी रकम लाना आपके लिये कोई बड़ी बात नहीं!

हीरा—क्यों प्यारी! क्या तुमभी इस समय यही कहती हो?

अच्छा बताओ ! मैं इस रकमको कहां से लाऊ जब कि घरके चारों ओर पुलिसका पहरा है और मांगनेसे कोई देता नहीं !

अभय—देता क्यों नहीं, पहले किसीसे माँगो भी तो ।

हीरा—दीजिये ! मैं प्रथम आपहीसे ५०००) रु० उधार मांगता हू ।

अभय—(स्वतः) अररर ! यह तो आखिरकार मेरेही सिर पर पड़ी ! "मियांकी लाठी और मियांका सर" मेरा ही उपदेश और मेरे ही ऊपर चलाया गया ।

हीरा—क्यों, सोचने क्या लगे, उत्तर क्यों नहीं देते ?

अभय—मित्रवर ! तुम्हारी इस बातके लिये मुझे अत्यन्त खेद प्रगट करना पड़ता है कि इस समय मेरे पास भी रुपयेका टोटा है । हाँ! यदि आप चाहें तो मैं किसी अन्य व्यक्तिसे उधार दिला सकता हूँ ।

हीरा—नहीं अभयचन्द ! मुझे उधार रुपये नहीं चाहिये । क्योंकि मैंने जीवन-पर्य्यन्त किसी अनजान आदमीसे रुपये उधार ले अपने सिर तगादेका भार नहीं लिया है ।

मुन्ना—(तानेसे) अजी जाने भी दो, ये भला मेरे लिये क्यों उधार लेने लगे ।

हीरा—(स्वगत) आह ! अब यह ताना नहीं सहा जाता, (प्रकट) अच्छा लाओ, दूसरेहीका उधार सही ! मैं तगादा भी सहनेको तैय्यार हूँ ।

अभय—(स्वगत) फँसा बेटा ! (प्रकट) परन्तु हीरालाल ! बिना हैण्डनोट लिखाये रुपये देगा कौन ?

हीरा—(स्वगत) हाँ ठीक है, मित्रता इसीका नाम है।
(प्रकट) अच्छा, जैसी तुम लोगोंकी इच्छा।

मुन्ना—यमुना, अरी ओ जमुना।

(यमुना दाईका आना)

जमुना—क्या आज्ञा है मालकिन?

मुन्ना—अन्दरसे कलम, कागज और स्याही ले आ।

हीरा—(स्वगत) हा! संसार खूब आँखें पसारकर आजकी इस कार्रवाईको देख ले।

प्यार जो इनसे बढ़ाया, वह अन्तमें पछतायगा।
छुरी चलती है यहाँ, वह अन्तमें मर जायगा॥

(यमुनाका लाना, अभयका लेकर हीरालालको देना, हीरालालका लेकर लिखना, अभयका रोकना)

अभय—अजी ठहरो भी तो! पहले यह बताइये कि आप लिखते कितना हैं?

हीरा—पाँच हजार।

अभय—वाह! भाई वाह! रुपये देनेवाला क्या आपका मुँह ताकेगा? अगला क्या विना सूद लियेही रुपया गिन देगा?

हीरा—(चिढ़कर) तब कितना लिखूँ!

अभय—साढ़े सात हजार!

हीरा—(चौंककर) क्या कहा, साढ़े सात हजार! पाँच हजार-का सूद अढ़ाई हजार।

अभय—और नहीं तो क्या कौड़ी छदाम।

BVCL 05349
8-23

हीरा—लेकिन मैं ऐसा व्यर्थ सूद देनेको तैय्यार नहीं।

मुन्ना—(तानेसे) अजी जाने भी दो, इस तरह रुपया लेनेवालेका कलेजा दूसराही होता है।

हीरा—(स्वगत) आह! यह बाणोंसे भी तीखे व्यंग नहीं सहे जाते। (प्रकट) अच्छा साढ़े सात हजारही सही।

(लिखकर मुन्नाको देना, उसका लेकर अपने पास रखना)

मुन्ना—(गलेमें हाथ डालकर) प्यारे! अब मैं उम्मीद करती हूं कि इस कामसे आपको कुछभी कष्ट न हुआ होगा ?

हीरा—(हाथ हटाकर) बस बस, अब मुझे मालूम हुआ कि वेश्याओंका प्रेम केवल रुपयोंका ही होता है।

अभय—रुपयोंका नहीं तो क्या यह तुम्हारी स्त्रीका प्रेम था।

हीरा—(गुस्सेसे) अरे मित्रघाती! तू न बोल, तेरे बोलनेसे मेरा शरीर जल उठता है।

मुन्ना—इसमें जलनेकी कौनसी बात है! अभयचन्द तो सोलह आने ठीक कहते है।

हीरा—(चौंककर) क्या कहा मुन्ना? यह नालायक ठीक कहता है, और क्या तुम्हारा प्रेम सचमुच रुपयेका ही था?

मुन्ना—नहीं तो क्या गृहस्थ स्त्रियोंकी तरह स्वच्छ था?

हीरा—(माथेपर हाथ मारकर) आह! मैंने बड़ा धोखा खाया जो तुझ पिशाचिनी और ऐसे विश्वासघाती मित्रपर विश्वास किया! ओ हरामजादे! क्या तूने इसीके स्वार्थको पूर्ण करनेके लिये मेरे साथ इतनी गहरी मित्रताकी थी?

मुन्ना—(तानेसे) नहीं तो क्या ये तुम्हारे दामाद या बहनोई लगते थे ?

हीरा—मुन्ना ! मुन्ना !! देख ! मेरी ओर देख ! सिर्फ तेरे ही लिये मैंने अपनी स्त्री और बहनको छोड़ा तथा घरको बरबाद किया और तू आज ऐसा बर्ताव करती है।

मुन्ना— जा जा, किसी मूर्खको यह बात पढ़ाना।
मेरा तो सदा काम है, मूर्खों को फँसाना॥

हीरा—परिणाम कुछ अच्छा नहीं, इन नारकियोंके प्यारका।
जख्म होता है भयङ्कर, इस पापिनी तरवारका॥

मुन्ना—खबरदार हीरालाला ! अब अगर एक बात भी मेरे खिलाफ निकाली तो याद रक्खो जूतियोंसे खबर ली जायगी। बस सीधे अपने मुँहमें कालिख पोतकर यहाँसे जल्द चले जाओ ! बोलो, जाते हो या मैं लूँ जूता ?

हीरा—जाता हूँ मुन्ना ! जाता हूँ ! तुझे जूता उठानेका कष्ट न करना पड़ेगा। (कुछ दूर जाकर) शोक ! महाशोक !!

देखलो भारत सपूतो, इस घोर अत्याचारको।
देखलो जननीके बच्चे, इस अधम पापाचारको॥
देख लो इस पापिनीको, देखलो इस यारको।
अन्तमें मुझकोभी देखो, आया यहाँ व्यभिचारको॥
भाइयो ! बस छोड़ दो, इस नाशमय आचारको।
प्रेमसे स्थान दो, हृदय में अपनी नारको॥

(प्रस्थान)

अभय—(हँसते हुए) कहो प्यारी ! कैसी बला टाली, अब तो तुम्हारी इच्छा पूर्ण हुई ?

मुन्ना—(स्वगत) तबतक नहीं, जबतककि तुझेभी निकाल बाहर न करूँ (प्रकट) हाँ ! प्यारे अब मेरी इच्छा पूर्ण होगई ।

अभय—तो प्यारी ! अब अपने प्रेम वाला कौल पूरा करो और कुछ रुपये दो, कारण एक जरूरी काम है ।

मुन्ना—प्यारे ! प्रेम तो मैं तुमसे सदाही करती हूँ, परन्तु शोक इस बातका है कि इस समय मेरे पास भी रुपये नहीं है ! अब उसी हैण्डनोटके जरिये उस बेवकूफसे रुपया वसूल करूँगी और काम चलाऊँगी ।

अभय—(चौंककर) क्या कहा ? मुझे रुपये न मिलेंगे ?

मुन्ना (तानेसे) हां ! आशा तो ऐसी ही है ।

अभय—(चौंककर) मुन्ना ! मुन्ना !! तो क्या मेरे साथ भी तू हीरालालके ऐसा वर्ताव किया चाहती है ?

मुन्ना—(कड़ी आवाजमें) नहीं तो क्या तुम मेरे भाई लगते हो?

मैं तुम्हारी बहन थी, या तुम्हारी सास थी।
क्यों रहे करते दलाली, क्यों तुम्हारे पास थी ॥

अभय—समझा ! समझा !! नरककी पिशाचिनी तुझे अच्छी तरह पहचाना ।हाय ! तेरेही कारण न जाने कितना पाप कमाया। अन्तमें तूने मेरे साथ भी दगा किया,मेरीही बताई हुई तरकी-बसे मेरे ऊपर वार किया ।

मुन्ना—तो बस ! आप भी यहाँसे रफू-चकर होजाइये, नहीं तो

जूतियोंकी पूजा आपपर भी होने वाली है। (कहकर कोच-के पास जाना और ऊपरी भागपर बैठना)

अभय—(क्रोधसे) पापिनी जाता हूँ ! पर याद रख मैं हीरालाल नहीं हूँ, विना वदला लिये चैन कभी न लूँगा ।

मुन्ना—जा, जा, दलाल कहींका ! आया है रण्डियोंसे प्रेम करने।

अभय—(क्रोधसे) ओ पिशाचिनी ! सावधान ! अभयचन्द विना तेरी हत्या किये यहाँसे न हटेगा ...

(कहकर छूरा निकाल मुन्नापर लपकना. मुन्ना काभी कोचसे पिस्तौल निकालकर अभयपर तानना अभयका डरना ।)

स्वामि भक्ति

सुभा—त्याग दे यह भावना, कहतो हूँ खैर है।
पापी उठाया हाथ जो, मस्तकपै फैर है॥

प्रथम दृश्य

स्थान— मार्ग ।

(हीरालालका अपने करम पर सोचते हुए प्रवेश)

गायन

न सोची कुछ भी भली बुरी,
दो डगर बनाई है इस जहाँमें ।
प्रथमही भूला सुगम डगर को,
अब आके निकला हूँ हा ! कहाँ मैं ॥
सितम का फन्दा डाला मुझपर,
भावी बस उस सितमगरीने ।
परी मैं समझा, थी कालि नागन,
फिरा भटकता यहाँ वहाँ मैं ॥
पतिव्रता है ओ मेरी नारी,
सकल मोहनी प्राण पियारी ।
अमृत छोड़ पिया विष मैंने,
खाया धोखा यह क्या किया मैं ॥

हाय! हीरालाल अब तू कहींका न रहा, सारा संसार ही तेरे विपरीत होगया। बोल! बोल! अब तू किसकी शरणमें जायगा? तुझ पापीको अपने यहाँ कौन आश्रय देगा? हाय! मैंने इस लोक और परलोकके लिये कुछ भी न किया। हीरालाल! तू सचमुच नरपिशाच है, तुझे ऐसे ऐसे कार्य्योंका भीषण प्रायश्चित भोगना पड़ेगा।

हा! विधाता कैसी गफलतमें पड़ा था आजतक।
वेश्याके झूठे प्यारपर सुख नींद सोया आजतक॥
जीवनके सारे मूल्य भी मैंने न जाने आजतक।
ज्ञानका पर्दा हटा रोगी बना था आजतक॥

(सोचना) अब मैं क्या करूँ? कहां जाऊँ? घरकी सती साध्वी सरस्वतीको रोती विलखती छोड़, वेश्यागामी बना। उनके अमृतमय उपदेशोंको अपने पैरों तले ठुकराया, धर्मसुशीला प्यारी बहन कमलाकी बातें न मानीं। हाय! उनकी आत्माको मेरे द्वारा कितना कष्ट पहुँचा होगा। आज वही कष्ट श्राप रूप धारणकर मुझे भक्षण करने आ रहा है। (चौंककर)। देवी सरस्वती! क्षमा कर, मैंने तुझे बहुत कष्ट पहुँचाया। क्या तुम अपने इस अधम, नीच, और पापी पतिको क्षमा न करोगी? नहीं, नहीं; तुम आवश्य करोगी, क्योंकि तुम्ही भारतकी उज्वल सती देवियां हो, तुम्हारे लिये तो नीचसे नीच पति भी देवता तुल्य है। परन्तु हाय! अब मैं कौन सा मुँह लेकर तुम्हारे पास क्षमा

माँगने जाऊँ ? (चौंककर) यह देखो ! मेरी बहन कमला मुझे भक्षण करने आरही है। क्षमा कर, स्वर्गकी पवित्र देवी क्षमा कर, मेरे कारण तुझे न जाने कितने कष्टोंका सामना करना पड़ा, मैं बड़ा पापी, अत्याचारी और नार पिशाच हूँ। जो घरकी स्वर्गमयी देवियोंको छोड़ वेश्यासे प्रेम लगाया। अपने "स्वामि-भक्त" सेवक रामदाससे रुष्ट हो उस कपटी-मित्र अभयचन्दसे प्रीति जोड़ी। हाय ! जब मैंने तुम सबोंपर दया न की तो तुम मुझ अबोध पर क्यों दया करोगी ? बस। अब मुझे इस संसारमें अपना कलंकित मुँह दिखलानेके बदले आत्महत्याकर लेनाही उचित है। "न रहेगा बाँस न बाजेगी बाँसुरी"। (कटार निकालकर) आ ! मेरे जीवन को अस्त करने वाली ज्योति, आ और इस दुराचारी, पापी मनुष्यका रक्त पानकर अपना कलेजा ठण्डा कर।

न होगा प्राण यह मेरा, जो बारम्बार खायगा।
अन्त होजानेसे इसका, शूल ही मिट जायगा ॥

(हीरालाल छुरा मारना चाहता है,रामदास आकर रोकता है)

राम—ठहरो ! (देखकर) स्वामी ! दास आपके चरणोंमें प्रणाम करता है।

हीरा—(चौंककर) कौन रामदास ? क्षमा कर भाई मुझे क्षमा कर।

राम—(व्याकुलतासे) स्वामी ! यह आप क्या कह रहे हैं,इस तरह क्यों विलाप कर रहे है ?

हीरा—रामदास ! मैं बड़ा पापी हूँ, बड़ा हत्यारा हू ,और बड़ा दुराचारी हूँ। और तुम एक महात्मा हो, इसलिये मेरे पाससे हट जाओ। नहीं तो मेरी परछाईं तुमपर भी पड़ जायगी और तुम भी पापके भागी बनोगे।

मैं नारकी हूँ इस जगतका, थूँकना हो थूँक दो।
मैं पापमें अब तक रहा, तुम आग में ही फूँकदो ॥

बताओ ! बताओ !! तुम ऐसे व्यभिचारी मालिकको आदरसे क्यों प्रणाम करते हो ?

राम—स्वामी ! रामदास अपने जीवन दाताको हमेशासे ही द्वितीय ईश्वर मानता आया है और जब तक उसके नमक का कणमात्र भी अंश रहेगा अपने मालिककी सेवासे कभी वञ्चित न होगा।

फिर क्यों न करूँ प्रणाम मैं, मालिकको ईश्वर मानकर।
क्यों न ऋणसे उऋण होऊँ, अपना कर्तव्य जानकर ॥

हीरा—शाबाश ! भारतकी डगमागाती,हुई नैय्याके मल्लाह, शाबाश। तुम्हारे ही ऐसे महात्माओं पर भारत बसुन्धरा गर्वकर सकती है। न कि हमारे ऐसे दुराचारी और व्यभिचारी पर।

न सोचा कर्म जीवन का, लगाई आग अपने सर।
न सोचा स्वप्नमें मैंने, गिरेगी गाज अपने घर ॥

राम—स्वामी। इस सेवकको अधिक लज्जित न कीजिये, चलिये घरकी ओर चलिये, वे सब आपके वियोगसे दिन रात रोदन कर रही है, शीघ्र चल कर उनके हृदयको शान्त्वना दें।

हीरा—क्या कहा, रामदस घरको चलूँ ? कौनसा मुह लेकर ? वताओ ! वताओ !! अव वे इस अत्याचारीको अपने यहां क्यों कर आश्रय देंगी ?

राम—क्यों नहीं देंगी स्वामी ! वे भारतकी उज्वल सती देवियाँ हैं, उनके लिये तो सदा आप ही आराध्य देव हैं ।

हीरा—सत्य है रामदास, सत्य है ! मैं उस पापिनी वाज़ारू वेश्याके प्रेम जालमें फँसकर उनके असली रूपको न पहचान सका !

राम—स्वामी ! अव आप इन विचारोंको विश्राम दीजिये, और अपने चरण कमलको घरको ओर अग्रसर कीजिये ।

हीरा—नहीं रामदास ! अव मुझे घर लेजानेकी चेष्टाकी न करो । वस जाओ, मेरा उन देवियोंको आशीर्वाद कह देना । और मेरी स्त्रीसे कहना कि हीरालालनेकहा है, वे अपने दुराचारी पतिको क्षमा करें, एवं मेरी प्यारी वहन कमलासे भी यही वातें कह देना । वस जाओ, अव मैं घरकी ओर न जाऊँगा । इस संसारके किसी एकान्त स्थानमें रहकर शेष जीवन अपने पापोंका प्रायश्चित करूँगा, और कहीं न कहींसे भिक्षा माँगकर जीवन विताऊँगा !

राम—नहीं नाथ, नहीं ! रामदासके जीतेजी आपको भिक्षा माँगनेका कष्ट न करना पड़ेगा । कारण, अगर दिनभरका भूला भटका रात्रिको घर पर आजाय, तो वह भूला हुआ नहीं कहलाता । इसलिये मैं आपके चरण पकड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप घरकी ओर चलें,नहीं तो वे वेचारी आपके वियो-

गमें अपने प्राण त्याग देंगी। और इधर मैं भी आपहीके सन्मुख आपहीकी कटार द्वारा आत्म हत्या करूंगा! फिर उनके समक्ष आपका सन्देसा भी ले जाने वाला कोई न रहेगा।

हीरा—बस बस रामदास! आगे न कहो, मेरा हृदय फटा जाता है। चलो! अब मैं घर की ही ओर चलूंगा! (स्वतः)—देखो! ऐ दुनियांकी ऊँची ऊँची आट्टालिकाकी सुखमयी सेजोंपर आनन्द क्रीड़ा करने वाले अमीर उमराओ, इस प्रत्यक्ष देवता स्वरूप "स्वामि-भक्त" सेवक रामदासको देखो। इसके चरित्र और कर्तव्यसे कुछ शिक्षाग्रहण करो।

आँखें उठाकर देख लो, सेवकके इस कर्तव्यको।
और सुनलो भाइयो, इसके मधुर वक्तव्यका॥

(दोनोंका प्रस्थान, अभयचन्दका प्रवेश)

अभय—दगा! फरेब! झूठ! जाल! धोखा! झांसा! फाँसा घीसा! चकमा! और अन्तमें मेरे ही ऊपर वार! हाय! इन सबका मेरे साथ उपयोग किया गया! ठीक है, अब मुझे मालूम हुआ कि स्त्रियोंके चरित्रबिलकुल विचित्र होते हैं, उनके स्वभावको स्वयं ब्रम्हा भी नहीं जान सकते। इस मुन्नाको मैं जानता था कि यह मेरी है और भविष्यमें मेरीही बनकर रहेगी। परन्तु नहीं यह मेरा मिथ्या विचार था। ओ फहेशा औरत! सचमुच मेरा जीवन तूने ही वरबाद किया है, सिर्फ धनका लालच दे, न जाने मुझसे कितने पाप कराये! हाय! न जाने मेरे द्वारा संसारके कितने खिले हुए पुष्प मुरझा गये,

और न जाने कितनी सती साध्वी स्त्रियोंका जीवन बरबाद हुआ। हाय! अब मुझे नरकमें भी स्थान न मिलेगा। (सोचकर) न मिले न सही, किन्तु उस पापिनीको जिसने मेरा तथा मेरे द्वारा न जाने कितने भोले मनुष्योंका गला कटवाया, उसे अब दूसरोंका और गला काटनेके लिये जिन्दा न छोड़ूँगा, मैं अपने ही हाँथों उसकी हत्या करूँगा और पाजी हीरालालका लिखा हुआ रुक्का भी हड़पकर, बाकी जीवन आनन्दसे बिताऊँगा। (सोचकर) परन्तु मरनेके पश्चात मेरी क्या दशा होगी? (सोचकर) परवाह नहीं, जब इतना पाप कर चुका तो थोड़े औरके लिये चिन्ता करना मूर्खोंका काम है। बस अब मेरे चारों तरफ खूनही खून दिखलाई दे रहा है, बिना उस विष-धर सुन्दरीका खून किये मुझे कल न पड़ेगी।

गायन

भय नहीं खाया अभयचन्द, दिलमें तैं करतारका।
हीरेको पत्थर बनायो, करके वादा प्यारका॥
ऐसे ऐसे सैकड़ों रत्नोंको, गारद क्यों किया?
क्या नहीं है डर तुझे, उस मौतके सरदारका॥
खैर जी जो कुछ हुआ, सो होगया अब क्या करूँ।
अब है बदलेकी तमन्ना, सर उतारूँ नारका॥

(प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

स्थान-मुन्ना वेश्याका शयनागार ।

(सजे हुए कमरेमें एक सुन्दर कोच पर मुन्ना शयनकर
रही है, इधर बड़ी सावधानीके साथ दबेपाव
अभयचन्दका हाथमें कटार लिये हुए प्रवेश)

अभय—(दबी आवाजमें) ऐ ! अर्धरात्रिमें चन्द्रमाके समान चमकने वाली मेरी प्यारी कटार ! चल आगे बढ़, और अपने मालिकको भ्रष्ट करने वाले जीवको इस संसारसे विदा कर । (पासजाकर) ऐ । मखमलोंकी सुन्दर सेजपर आनन्द क्रीड़ा करने वाली रमणी ! ले अपने किये हुयेपापोंका फल भोग ॥

(अभयका कटार मारना मुन्नाका 'आह'की
आवाजके साथ मृत्युको प्राप्त होना)
तथा आवाजको सुनकर दासी
का प्रवेश)

दासी—कौन बाबू अभयचन्द ?

(अभयका लपककर दासीके हाँथ पकड़ना, दासीका डरना)

अभय—बस चुप हरामजादी ! अगर तूने जरा भी जुबान हिलाई तो तुझेभी इस संसारसे विदा कर दूंगा । (कटार दिखाकर) बोल ! बोल !! क्या तू अभी कुछ दिन और इस संसारमें जीना चाहती है ?

दासी—(गिड़गिड़ाकर) दया करो,बाबू अभयचन्दजी ! दया करो। मैं अभी कुछ दिन और जीना चाहती हूँ । मुझे न मारो, मैं तुम्हारी गाय हूँ ।

अभय—(अँगूठी निकाल कर देना) अच्छा चुप ! यह हीरेकी अँगूठी पुरस्कारमें ले और बाकी जीवन आनन्दसे बिता। जा, मैं तुझे न मारूँगा।

दासी—(स्वतः) तो अभयचन्द ! यही दासी एक दिन तुम्हारी काल होगी। (प्रगट) परन्तु बाबू साहब ! कल सुबह, जब यहां पुलिस आवेगी, तो मैं उसे क्या जवाब दूंगी ?

अभय—आह ! मैं सुबह पुलिस आनेके पहिलेही आकर सब काम बना लूंगा। अच्छा! अबमैं जाता हूँ । लेकिन देख अन्तमें विश्वास घात न करना, नहीं तो स्वप्नमें भी तेरे प्राण न बचेंगे !

दासी—नहीं बाबू साहब ! आप विश्वास करें, मैं ऐसा कभी न करूंगी।

(अभयका प्रस्थान)

ओ खूनी अभय ! क्या तूने यह विश्वास कर लिया है, कि मैं तेरी इस अँगूठी पर प्रसन्न होकर, अपनी मालकिनकी हत्या करनेवालेसे बदला न लूंगी ? ठहर जा !

फँसाऊंगी कभी तुझको, अगूंठीपर न जाऊंगी।
तुझे मैं "स्वामि-भक्ति" का, कभी परिचय दिखाऊँगी ॥

(प्रस्थान)

—o—

तृतीय दृश्य

स्थान-रायभड़चन्दका बागीचा।

(फटकचन्दका हँसते हुए प्रवेश)

फटक—भाई वाह ! जय मेरे भैरोनाथ बाबाकी, यह भी तुम्हारा ही प्रताप है कि अब मैं एक दम नगद लाख रुपया रखने वाला हो गया हूं। यारो ! मैं झूठ नहीं कहता, मेरी सात पुश्तोंने भी एक लाख रुपया स्वप्नमें नहीं देखा होगा। और देखते ही कहांसे ? जनम भर तो कलकत्तेके बड़े बाजारमें पापड़ बेंच कर अपना पेट पालते और मुझे पढ़ाते थे। किन्तु आज समय के उलट-फेरसे पापड़ बेचने वालेका बेटा "डाकृर फटकचन्द् बहादुर" अपने बाप, दादे, पड़दादे, सड़दादे इत्यादि सातों पुश्तको अपने यहाँ नौकर रख सकता है। वाहरे बाबा भैरो-नाथ ! हो तुमभी एकही दयावान। (हंसते हुए कूद फांदकर-ना तथा जेब से रुपयोंका झंझनाना) परन्तु यह क्या ! रुपये मेरी पाकेटमें उछल-कूद क्यों कर रहे हैं ? ठीक-ठीक याद आया, पहले बाबा भैरोनाथका ध्यान लगा कर देखूं कि यह रुपये मुझसे क्या कह रहे हैं। (बैठकर ध्यान लगाना, पश्चात हंसते हुए उठना) मालूम होगया, परन्तु आप लोग जानकर क्या करेंगे ? (हंसना) मुझे भी यह बात हजम

नहीं होती, इसलिये सावधान! किसीसे कहियेगा नहीं। अरे भाई! यह रुपये साफ़ कह रहे हैं, कि ऐसा मौका कभी हाथ न आयेगा। यदि अपना जीवन सुखमय बनाना चाहते हो तो मुझे लेकर जल्द नौ+दो=ग्यारह हो जाओ। किन्तु करूं तो क्या करूँ? इधर प्यारी लपेटीका चेहरा मेरी आंखोंके आगे मड़रा रहा है। उसका प्रेम मुझे उसको छोड़नेसे मना करता है और कहता है कि दिन रात उसे गलेसे लगाये रहो। (देख कर) लो मेरी आँखोंकी पुतली, मेरे ओंठोंकी लाली, मेरे कानों की बाली, अपने नाज़ नखरे और चटक मटकके साथ इधर ही आ रही है। हाय हाय रे मेरी प्यारी लपेटी......

(लपेटीका प्रवेश)

अररर! क्या आखिरकार तुम चली ही आई? देखो प्यारी! इस तरह बेधड़क तुम ऐसे भले आदमियोंके सामने मत आ जाया करो। तुम्हीं सोचो यह लोग अपने मनमें क्या कहेंगे?

लपेटी—कहेंगे क्या! यह तो सभी जानते हैं, कि जवान लड़की को घरमें रखनेसे बुरा ही परिणाम होता है।

फटक—प्यारी अच्छा! जैसी तुम्हारी इच्छा।

लपेटी—देखो प्यारे! हम लोगोंकी जोड़ी ईश्वरने न जाने कैसी अच्छी बनाई है, जैसे एक डालीमें दो फूल।

फटक—हां यही तो मैं भी कहता हूं कि यह भी बाबा भैरोनाथ का ही प्रताप है। (हँसना)

लपेटी—देखो प्यारे! तुम हमेशाही मेरे साथ हंसी किया करते हो, यह अच्छी बात नहीं। (रूठ जाना)

फटक—तो क्या मेरी हँसी अच्छी नहीं लगती? अच्छा लो, मैं चुप हुआ जाता हूं।

लपेटी—(गलेमें हाथ डालकर) प्यारे! इस तरह हम लोग कबतक अपनी जिन्दगी वितायेंगे? बागीचेसे जरा भी देरकरके जाती हूं तो पिताजी मुझ पर बिगड़ने लगते हैं। तुम्हीं बताओ यह कितनी बड़ी लज्जाकी बात है?

फटक—(इशारे से उत्तर देना)

लपेटी—क्यों जी! बोलते क्यों नहीं?

फटक—(इशारेसे उत्तर देना)

लपेटी—हां! हां! अब क्यों जवाब दोगे, अब तो मैं वह लपेटी ही नहीं रही। जाओ, अब मैं भी न पूछूंगी। आजही विष खाकर प्राण त्याग दूंगी!

फटक—(स्वगत) ऐं! यह क्या मेरे भैरोनाथ बाबा? क्या मेरे चुप होनेसेही मेरी प्यारी रुष्ट हो गई? मनाऊं-मनाऊं, नहीं तो यह जरूर कूंएमें गिर कर मर जायगी और आखिरकार मुझे भी इसके पीछे रण्डुआ होना पड़ेगा। (प्रगट) देखो प्यारी! इस तरह रुष्ट होने से हम दोनोंके प्रेममें खलल पड़ेगा। बताओ! क्या तुमने नहीं कहा था, कि ज्यादा हँसा न करो? फिर मैं तुम्हारी बात टालकर कैसे हंसता और बोलता?

लपेटी—हाँ! हाँ!! बातें बनानेमें तो शायद ही तुम्हारे समान कोई चतुर हो?

फटक—अरे! तो इसमें बातें बनानेकी कौनसी चतुरता है?

लपेटी—है क्यों नहीं! अच्छा पहिले जो मैं पूछती हूँ, उसका जवाब दो।

फटक—आखिर पूछो भी तो?

लपेटी—यही कि हम लोग इस तरह पराधीन रह कबतक जीवन बितायेंगे। इधर तुम मुझसे नित्य ही बहाना किया करते हो। तुम्हीं बताओ मेरे हृदयको किस तरह सन्तोष हो?

फटक—नहीं प्यारी! अब सन्तोष होजायगा। क्योंकि आज मेरा भी बहाना समाप्त हो गया। सुनो! और कान खोलकर सुनो!! पर देखो किसीसे भी जाहिर न करना, नहीं तो सारा बना बनाया खेल ही चौपट हो जायगा।

लपेटी—अजी! कहोगे भी या व्यर्थकी भूमिका ही बांधोगे?

फटक—घबड़ाने ही से तो सब चौपट हो जायगा। पहिले देख लू कोई सुनता तो नहीं। (चारों ओर देखकर) देखो! कलतक तो मेरे पास तुम्हारे बापका दिया हुआ एक लाखका चेक था, उसे आज तुड़ा लाया। बस! अब चारों ओर आनन्द ही आनन्द है। जाओ! घरमें जाकर खूब गहनोंसे लदा-लद्द सन्ध्या ६ बजेसे पहिले ही तैय्यार रहना। इधर मैं भी मोटर लेकर ठीक समय पर तुम्हारे घरके पिछवाड़े पहुंचकर सीटी बजाऊंगा, उसी समय तुम नीचे उतर आना। (हंसना)

फिरतो हमलोग एक दम चम्पत हो जायेंगे और सारी जिन्दगी आनन्दसे बितायेंगे। कहो प्यारी! अब तो खुश हुई?

लपेटी—प्यारे। मैं तुमसे नाराजही कब रहती हू। अच्छा अब मैं जाती हूं और इस घरको छोड़ स्वर्गमें चलनेकी तैय्यारी करतीं हूं। (लपेटीका प्रस्थान)

फटक—वाहरे मेरे भैरो नाथ बाबा! तुम्हाराही प्रताप है कि मैं अपने प्रत्येक कामोंमें सफली भूत हुआ चला आ रहा हूँ। परन्तु देखो! गुस्से न होना, क्योंकि मैंने अभी तक तुम्हें मदिरा नहीं चढ़ायी। अगर जिन्दा रहूँगा तो जरूर चढ़ाऊँगा। और यदि किसी कारणसे मदिरा न भी चढ़ा सका तो रण्डी, सण्डी नामक लेमोनेड तो जरूर चढ़ाऊँगा। आखिर सोडा और लेमोनेड भी तो मदिराके भाई बहन हैं। दूसरे आपको ज्यादो प्यास भी शायद न लगती होगी? फिर तो यदि न भी चढ़ाऊँ तो कोई हरजा नहीं। आप क्षमा तो जरूर ही कर देंगे। भला आप ही विचार कर देखिये, क्या मुझे एक पलके लिये भी फुरसत मिलती है? फिर मदिरा चढ़ाऊँ तो कैसे चढ़ाऊँ? आप चिन्ता न करें यदि इस जन्ममें न हो सका तो दूसरे जन्ममें अवश्य ही चढ़ाऊंगा।

(फटकचन्दका हँसते हुए जयजयकार करते प्रस्थान, इधर मुसाहिबोंके साथ हँसते हुए भड़चन्दका प्रवेश)

भड़—क्यों भाइयो! हम दाता हैं या नहीं? देखो! हमने बातकी बातमें लाख रुपये गिन दिये।

प० मु०—तो क्या आपने सचमुच लाख रुपये गिन दिये ?

भड़—नहीं तो क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? (हँसते हुए) आज तीन दिन होगये "दी कङ्गाल बैंक औफ इण्डिया लिमिटेड" के नाम एक दम लाख रुपये का चेक काट चुका हूँ ।

दू० मु०—हुजूर ! पहिले पूरी तरह महाराजा बन जाते तभी रुपया चुकाते तो अच्छा होता ।

भड़—(चौंकते हुए) तो क्या मैं अभी तक महाराजा नहीं हुआ हूँ ? लेकिन तुमही लोगोंने तो मुझे अभयचन्दको झट-पट रुपया गिन देनेको कहा था ?

चौ० मु०—हां हुजूर ! कहा तो था किन्तु क्या इतनी जल्दी देने को कहा था ?

दू० मु०—जरूर ! आपको चाहिये था, उन्हें कुछ दिन और रोक रखते । विना महाराजा बने रुपया चुका देना महामूर्खता का काम है ।

भड़ —(चौंकते हुए) क्या मैंने मूर्खता की, और वह भी लाख रुपये देकर ? (रोना)

प० मु० —हुजूर ! अब रोनेसे फायदा ही क्या निकलेगा ? रामकी तरह राजा बनकर बनवास भोगना ही पड़ेगा । हम लोगों को आज मालूम हुआ है, कि वे सब महा धूर्त थे । सिर्फ रुपयाही ठगनेके लिये आपको महाराजा बनाये थे ।

भड़—तो मैं धूर्तोंका महाराजा हूं, आजही सबोंको फाँसीकी सजा दे दूँगा । मेरा रुपया कोई भी हजम नहीं कर सकता ।

(सुन्दरीका हाथमें झाड़ू लिये प्रवेश)

सुन्दरी—अरे निगोड़ो! क्या तुम सब फिर यहां आगये! ठीक है! तुम लोग ऐसे न मानोगे।

भड़—अररर! यह नई आफत कहाँसे कूद पड़ी? अब क्या करूँ?

(कहकर एक कोनेमें लेट जाना, इधर सुन्दरीका सबोंको झाड़ू मारकर निकालना, बाद भड़चन्दके पास आ उनके कान पकड़कर उठाना)

भड़—अरे! तो क्या तू मुझे अन्तमें मारही डालेगो? इधर मेरा चेहरा भी तो देख मैं महाराजा हूं। अगर तू ज्यादा सतायेगी तो अभी फाँसीका हुक्म दे दूँगा।

सुन्दरी—अच्छा! फांसी का हुक्म तो पीछे देना पहिले यह बताओ कुछ घरका भी ख्याल है?

भड़—(चौंकते हुए) तो क्या घरमें आग लग गई, क्या घर गिर गया, या उसमें चूहे मरने लग गये?

सुन्दरी—अरे! यह कुछ भी नहीं, वल्कि पाजी फटकचन्द मेरी बच्ची लपेटीको मय गहनोंके लेकर चम्पत होगया।

भड़—तो होजाने दो, मेरे चेकका रुपया तो अभयचन्दके पास है।

सुन्दरी—रुपये जायें चूल्हेमें, घरके सारे जेवर भी ले गया। हाय! अब मैं किसी तरफकी न रही। (रोना)

भड़—रोती क्यों हो! आखिरकार मैं महाराजा तो हूं। अभी दोनों को गिरफतार करवाता हूँ। हाँ! नौकर भेजकर पाजी अभयचन्दको तो बुलाओ ताकि उसे चटपट फाँसीका हुक्म दे दूं।

सुन्दरी—परन्तु अब तो उस निगोड़ेका भी पता नहीं।

भड़—तो क्या वह भी चम्पत होगया? क्या मेरा बना बनाया घर भी चौपट होगया?

सुन्दरी—(कान पकड़कर) क्यों अब और महाराजा बनोगे? अभी और लाख रुपया दोगे?

भड़—(हाथ जोड़कर) ना, ना; मेरे बापकी दादी, अब कभी रुपये देकर महाराजा न बनूँगा।

सुन्दरी—(छोड़कर) घरमें एक बच्ची थी उसे भी अपनी करनी से खो बैठे। अब न जाने उस बेचारीका आखिरमें क्या नतीजा हो।

भड़—कुछ नहीं! तुम घरमें बैठकर उसके नतीजेको शहद लगाकर चाटो। इधर मैं अभी जाकर अदालतसे उन दोनोंके नाम वारण्ट निकलवा पकड़ मंगाता हूँ, और दोनोंको फाँसीका हुक्म सुनाता हूँ, आखिर मैं हूँ तो महाराजा!

सुन्दरी—दुर निगोड़े निर्लज्ज [illegible] करनेमें भी पाप लगता है। (प्रस्थान)

भड़—अरे सुनो भी तो! मैं भूल गया, मुझे माफ कर, चली तो आओ। क्या नहीं आई? मेरी बात नहीं मानी? एक महाराजाकी इतनी गहरी बेइज्जती? अदालतमें इसका भी फैसला कराऊंगा, क्योंकि मैं महाराजा हूं।

(हंसते हुए दूसरी तरफ अदालतको प्रस्थान)

चतुर्थ दृश्य

स्थान—हीरालालका मकान।

(सरस्वती और कमलाका शोकातुर भेषमें प्रवेश)

सर—हाय, कमला! अब मैं कबतक इस तरह जीवन विताऊँगी, देख-देख, वसन्त ऋतुकी निर्मल वायुसे पुष्पोद्यान किस तरह महक रहा है। वृक्षोंकी लतायें झूम-झूमकर पुष्प बरसा रही हैं, भवरोंकी गूंज, कोयलोंकी कूक, और पपीहेकी बोली इस समय इस ऋतुकी क्याही शोभा बढ़ा रही है। किन्तु शोक सागरमें डूबे हुए व्यक्तिको इससे क्या सुख? एक अन्धे और बहरे व्यक्तिको इससे क्या लाभ? हाय! मुझ भाग्यहीनाको अपने पतिसे कोई भी सुख नहीं। मेरे लिये यह आनन्दमय संसार नरकके समान है।

कर दया इतनी प्रभो, इनोंके मुझको मेरा भरतार दो।
बुद्धिमें उनकी प्रभो, तुम भक्तिका सञ्चार दो॥
और सह सकती नहीं, मैं पति विरहकी पीरको।
या तो दो मृत्यू मुझे, या ले चलो तुम क्षीरको॥

कमला—शान्त! भाभीजी! शान्त! इतनी अधीर न बनो, अन्तमें ईश्वर हम लोगोंका बेड़ा जरूर पार करेगा। देखो! रामदास आज भइयाके पास उन्हें समझाने गया है। विश्वास

करो ! रामदास सच्चा "स्वामि-भक्त" देवता पुरुष है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपने कार्य्यमें अवश्य सफल होगा।

(रामदासके साथ नीची गर्दन किये
हीरालालका प्रवेश)

सर—(देखकर) अहा ! मेरे प्राणनाथ ! यह दासी आपके चरण-कमलोंमें प्रणाम करती है, और अपने पूर्व अपराधोंकी क्षमा माँगती है।

कमला—भइया ! मेरे प्यारे भइया !! इधर देखो, तुम्हारी छोटी वहन तुम्हारे सामने घुटने टेककर प्रार्थना करती है, कि अब तो हमलोगोंपर तर्स खाओ। देखो ! रोते-रोते हम लोगोंकी आँखें खराब होगईं। बताओ ! बताओ !! क्या उसी प्रकार अब भी निष्ठुर बने रहोगे ?

हीरा— प्यारी वहन ! अब मैं इस तरह कभी न निष्ठुर बनूँगा। क्षमा करो ! मैंने बड़ा पाप किया जो तुम्हारे जैसी स्वर्गकी देवियोंको कष्ट पहुँचाया।

सर—(चौंककर) नाथ ! तो क्या मेरा अस्त हुआ भाग्य आज उदय होगया ?

हीरा—(आलिंगन करते हुए) हां प्यारी ! उदय होगया। आज तक मैं उस राक्षसीके प्रेम-जालमें फँसे रहनेके कारण तुम लोगोंकी असली सूरत न पहचान सका। देवी ! तुम अपने व्यभिचारी पतिको क्षमा करो। मैंने तुम सबोंको बहुत कष्ट पहुँचाया।

(हीरालालका स्त्री और बहन दोनोंको अगल-बगल
सटाकर प्यार करना)

राम—अहा !

जो कभी बद्कार था, वह आज बेहतर होगया।
राई भी पर्वत होगयी, और मोम पत्थर होगया॥
जो बाग था उजड़ा हुआ, वह आज गुल्शन होगया।
था जो रूठा प्रेम इनका, वह आज प्रेमान्धन होगया॥

(अभयचन्दके साथ अमीन और प्यादों-
का प्रवेश)

अमीन—(हीरालालसे) महाशय! क्या हीरालाल आपहीका नाम है ?

हीरा—(चौंककर) हाँ! हीरालाल तो मेराही नाम है, कहिये कौनसा काम है ?

अमीन—(अभयको दिखाकर) बाबू साहबने आपके नाम अदालतसे साढ़े सात सौकी कुर्की करायी है। इसलिये या तो आप रुपये दीजिये, अन्यथा आपके घरकी सारी चीजें नीलाम करायी जायंगी।

राम—क्या कहा ! इस घरकी सारी चीजें नीलाम करायी जायँगी ?

अभय—हाँ! हाँ !! रुपये न मिलनेसे सारी चीजें नीलाम करायी जायंगी।

हीरा—प्यारी! मैं बड़ा पापी हूँ। देख! देख!! मेरे आतेही दुर्दैवने

तुम सबोंपर भी अपना अधिकार जमा लिया। बताओ! अब तुम सब कहाँ मारी-मारी फिरोगी? (अभयसे) अरे नालायक अभय! क्या तू इतना करके भी शान्त न हुआ? क्या अन्तमें मेरे प्राणही लेना चाहता है? अरे जालिम! इधर देख! हीरालाल तेरे आगे हाथ जोड़कर इन तीन प्राणियोंके लिये दयाकी भिक्षा माँगता है। अरे! तेरी इस निर्दयतासे मित्रमय संसार काँप उठेगा। और भविष्यके लिये दुनियाँ से मित्रताका नामो-निशान हवा हो जायगा।

(हीरालालका माथेपर हाथ मारकर रोना)

अभय—(तानेसे) ओ बढ़-बढ़कर बातें मारनेवाले! क्या तू इतनेहीसे घबडा गया? ठहर! अभी दूसरा भी इल्जाम तेरे ऊपर आयाही चाहता है। उससे बचना तेरे लिये असम्भव हो जायगा। बस! अब मैं कुछ भी सुनना नहीं चाहता। (कुर्क अमीनसे) हाँ अमीन साहब! समय होगया, आप अपना काम कीजिये।

अमीन—हीरालाल! अब मुझे अदालतके हुक्म मुताबिक तुम्हारे घरकी सब चीजें निकलवानी पड़ती हैं।

हीरा—(नीची गर्दन करके) जैसी तुम सबोंकी मर्जी।

अमीन—बहुत अच्छा! (प्यादोंसे) जाओ! घरकी सारी चीजें बाहर निकाल लाओ।

(प्यादोंका आगे बढ़ना, रामदासका रोकना)

राम—ठहरो! रामदासके रहते, मेरे मालिक तथा इस घरका

कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। लो! यह साढ़े सात हजारके नोट तो अभी ले जाओ। किन्तु स्मरण रखना! यदि मैंने इसका सूद भी वसूल न कर लिया, तो मेरा भी नाम "रामदास" नहीं। (देना)

हीरा—(आलिंगन करते हुए) धन्य! रामदास धन्य! बताओ, बताओ; तुम्हारे पास इतने रुपये कहाँसे आये?

राम—स्वामी! यह सब आपहीके रुपये हैं, जिनको मैंने वेतन और अपने क्षुद्र कामोंके पुरस्कार स्वरूपमें श्रीमतीजीसे पाया था। किन्तु आज अपने स्वामीपरही संकट आया देख उसे और हिफाजतसे न रख सका।

हीरा—अहा! संसार इस स्वर्गके देवताका दर्शन कर ले। (अभयसे) अरे पापात्मा! इस रामदासको देख और एकबार आइनेमें अपना चेहरा देख। तब तुझे अच्छी तरह मालूम होजायगा कि तू नरकका कीड़ा और यह स्वर्गका देवता है। अरे नीच! अब भी तू इस महान आत्मासे कुछ सबक सीख ले।

अभय—बस! बस!! कलही मेरे सामने एक एक रोटीके टुकड़ेका सवाल करता था। आज कुछ रुपया होजानेसे बड़ा महात्मा होगया है। हीरालाल तुम्हीं बैठकर इससे उपदेश ग्रहण करो, मैं ऐसे दरिद्रोंसे बात नहीं करना चाहता (अमीन से) आइये अमीन साहब चलें! क्योंकि हम लोगोंका काम पूराही होगया, व्यर्थ यहां ठहरनेसे लाभही क्या है?

अमीन—हां ! हां !! चलिये ।

राम—ओ नारकी कुत्ते ! जानेके पहिले अपने जीवनका भविष्य सुनता जा ।

अभय—वह क्या ?

राम—यही कि आज तू यहां से हंसता हुआ जाता है, पर याद रख एकही दो दिनमें तुझे भरपूर रोना पड़ेगा । वह रोना एक दिनका नहीं बल्कि सारी जिन्दगीके लिये तेरे सरपर होगा ।

अभय—चल हट भिखमंगा कहीं का ! आया है हम अमीरोंके लिये भविष्य वाणी सुनाने ।

(प्यादोंके साथ अमीन और अभयचन्दका प्रस्थान)

हीरा—रामदास ! रामदास !! बताओ ! मैं किन शब्दोंसे तुम्हारा गुणानुवाद करूं ?

किस तरह बदला चुकाऊं, मैं तेरे उपकारका ।
तू तो है भाई मेरा, सेवक कहूं किस कारका ॥

राम—स्वामी ! इन शब्दों द्वारा आप मुझे लज्जित न कीजिये, इस शरीरका एक-एक रुआं भी यदि आपके किसी काम आ सका तो मैं अपनेको भाग्यशाली समझूँगा ।

हीरा—धन्य, रामदास ! तुम्हारा जीवन इस संसारमें धन्य है ।

धन्य तेरे वह पिता, जिनने तुझे पैदा किया ।
धन्य वह माता तेरी, जो कोषमें धारण किया ॥
धन्य है यह वसुन्धरा, जिसने तुझे गोदी लिया ।
धन्य मैं भी हो गया, जो तुझे आश्रय दिया ॥

(कान्स्टेबलोंके साथ सार्जेण्टका प्रवेश)

सार्जेण्ट—वेल ! हीरालाल किसका नाम है ?

हीरा—क्यों ? हीरालाल तो मेरा ही नाम है ।

सार्जेण्ट—(वारण्ट निकालकर) इधर देखिये ! यह आपके नाम का वारण्ट है ।

राम—(चौंककर) वारण्ट किस बातका ?

सार्जेण्ट—देखो ! इसने मुन्ना नामकी एक वेश्याका कल रात्रिमें खून किया है । इसीके अपराधमें इसके नाम वारण्ट निकाला गया है ।

राम—किसकी साक्षी पर आदालतने इनके नाम वारण्ट प्रकाशित किया है ।

सार्जेण्ट—वेल ! अभयचन्द्की साक्षीपर ऐसा वारण्ट निकला है ।

हीरा—क्या कहा ? क्या उसी मित्रघाती, पापी, दुराचारी, अत्याचारीकी साक्षी पर अदालतने मेरे नाम वारण्ट निकाला है । हाय ! उस अधम नीचात्माको अभी तक चेत न हुआ ।

(दुःखी होना)

राम—स्वामी ! आप चिन्ता न करें । यदि आपको बचानेके प्रमाण इस अखिल ब्रह्माण्डके किसी भी केन्द्रमें होंगे तो, मैं अपनी "स्वामि-भक्ति"के प्रतापसे उन्हें एकत्र कर आपको निरपराध साबित करता हुआ, उस पापीको उसके पापोंका उचित दण्ड दिलाऊंगा ।

सार्जेण्ट—वेल ! तुम लोग इसको अब कैद कर लो ।

(सिपाहियोंका हीरालालको गिरफ्तार करना)

सर.—(रोती हुई) नाथ ! बताओ ! बताओ !! अब हम लोग क्या करें ? किस प्रकार अपने हृदयको सान्त्वना दें ? देखो ! देखो !! इस बिचारी कमलाकी ओर देखो ! तुम्हारे पश्चात् अब इसकी कौन परवरिश करेगा ? (रोना)

राम—माता जी ! आप क्यों रुदन करती हैं ? रामदास अपने कार्य्य में हमेशा ही सफली-भूत हुआ है। इस बार भी परमेश्वर की इच्छा और आपके आशीर्वादसे इस विकट समस्या में भी विजयी होगा।

हीरा—हां प्यारी ! अब रोना बन्द करो, और प्रसन्नता पूर्वक मुझे आज्ञा दो। मैंने ठीक अपने पापोंका फल पाया, मेरे ऐसे व्यभिचारियोंके लिये यह दण्ड सर्वथा योग्य है।

कमला—(लिपटकर रोती हुई) भइया ! तुमने ऐसा पाप क्यों अपने सिर पर लिया ? बताओ :—

जिनके कर कमलोंसे भइया, वस्त्र भी उठता न था।
जो रहे आनन्द सागर, मन कभी फटता न था॥
फिर क्यों अचानक इस तरह, मनमें तुम्हारे गठगया।
स्त्री हत्याके लिये, यह हाथ क्यों कर उठ गया॥

हीरा—प्यारी बहन ! विश्वासकर, यह हत्या मैंने नहीं की। यह भी उसी चाण्डाल अभयचन्दकाही काम है।

सार्जेण्ट—वेल हीरालाल ! अब मैं नहीं ठहर सकता, हमको देरी होता है।

हीरा—बहुत अच्छा ! (सरस्वती और कमलासे) प्यारी बहन कमला और प्रिये प्राणेश्वरी ! अब मैं तुम सबोंसे विदा होता हूँ । हाय ! मेरे द्वारा तुम दोनों को किसी प्रकार का सुख न प्राप्त हुआ । बस मुझे आनन्दपूर्वक आज्ञा दो, कि मैं अपने प्राण यमराज की भेंट कर सकूं । बस जाओ, मेरे लिये किसी प्रकारकी चिन्ता न करना ।

सर—(रोती हुई) प्राणनाथ......

हीरा—बस करो । अगर मेरी बात मानती हो तो ज्यादा रुदनकर मेरे हृदयको खिन्न न करो ।

सार्जेण्ट—वेल ! बहुत देर होगई । (सिपाहियोंसे) इसे ले चलो ।

हीरा—देवियों ! मेरा अन्तिम आशीर्वाद ग्रहण करो । प्यारे रामदास,तुम मेरे लिये व्यर्थ कष्ट न उठाना । हां, यदि तुम्हारा मुझसे कुछ भी प्रेम है तो जहाँ तक हो सके इन देवियोंकी रक्षा करना, इन्हें किसी प्रकारका कष्ट न होने पावे । अब तुम भी मेरा अन्तिम आशीर्वाद ग्रहण करो ।

राम—स्वामी ! आप निश्चिन्त होकर जेलकी ओर प्रस्थान करें । संसार में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है, जो रामदासके रहते इन देवियोंकी ओर आंख उठाकर भी देख सके । दूसरे यदि इस शरीरमें आपके नमकका कण मात्र भी अंश होगा, तो विना आपको मुक्त किये रामदास स्वप्नमें भी चैन न लेगा ।

सार्जेण्ट—वेल ! इसे ले चलो ।

हीरा—अच्छा विदा । वि...दा.।

(मार्जेंगट और पुलिसका हीरालालको गिरफ्तार कर ले जाना, इधर सरस्वती और कमलाका विलाप करना)

सर०—(रोती हुई) प्राणनाथ ! क्या आखिरकार मुझ अभागिनीको रोती बिलखती छोड़ कर चले ही गये। हाय ! जब तुम ही न रहे तो मैं किसके भरोसे इस संसारमें जीऊँगी ?

राम—माता जी ! आप ज्यादा अधीर न हों, मेरा हृदय फटा जाता है। आपके रुदन करनेसे देवी कमलावतीको भी अत्यन्त कष्ट हो रहा है। एक बार किसी तरह हृदयको शान्त कर विश्वास पूर्वक मेरे कथन पर ध्यान दें।

सर—नहीं रामदास ! अब विश्वास नहीं होता। बस जाओ ! जाकर मेरे लिये चिता तैयार करो, मैं स्वर्गमें जाकर अपने स्वामीकी अगवानी करूंगी।

कमला—भाभी जी ! तुम यह क्या कर रही हो ? विश्वास करो ! यदि सरकार मेरे निर्दोष भइयाको अन्याय पूर्वक प्राणदण्ड की आज्ञा देगी, तो मैं भी प्रतिज्ञा पूर्वक कहती हूं, कि अपने "आह रूपी" श्रापसे इस सरकारका सत्यानाश कर दूंगी। एक आर्य्यावर्तकी कन्याका श्राप विश्वपतिके सिंहासनको भी डांवाडोल कर देगा।

शक्ति नहीं वह विश्वमें, जो तोड़ दे मम श्रापको।
स्थान क्यों देतीहो भाभी, दुःख दर्द और सन्तापको॥
मुक्त वे होंगे अवश्य, तुम बात तो मानो मेरी।
पांव नंगे धायगें, जब टेर पहुंचेगी मेरी॥

राम—शान्त देवी ! शान्त !! रामदासके तनमें प्राण रहते आपको श्राप देनेके लिये भी कष्ट न करना पड़ेगा। आज्ञा दीजिये, मैं कहीं-न-कहींसे अपने मालिकको मुक्त करनेके प्रमाण लेही आऊंगा।

सर—बहुत अच्छा रामदास जाओ ! अब तुम्हारे सिवा हम लोगों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। बस, तुम जानो और तुम्हारा कर्तव्य जाने।

(प्रणाम करते हुए रामदासका प्रस्थान)

कमला—भाभी जी ! रामदासको अपने कार्य्यमें सफली-भूत होने के लिये सृष्टिकर्त्ता, जगत्-पिता, अनाथोंके आश्रय, दीनोंके बल, असहायोंके सम्बल उन अचिन्त्य, अव्यय, सृष्टि-स्थिति लयकारी, दीन बन्धु भगवानके पाद-पद्मोंका ध्यान करें।

प्रार्थना

हे जगदीश तुम्हीं हो रक्षक, इस नौकाके खेवन हार।
नाव भवंर में चक्कर खाती, तुमहीं पार लगांवन हार॥
रामदास अब गया यहांसे, उसका खेओ तुम पतवार।
सफली भूत कार्य्यमें होवे, बच जावें मम प्राणाधार॥

(प्रस्थान)

———०———

पञ्चम दृश्य

स्थान—न्यायालय।

इन्स्पेक्टर, सिपाही, सरकारी वकील, चपरासी, अयभचन्द, अमीन तथा प्यादोंका अपने-अपने स्थानपर एवं हीरालालका बन्दी रूपमें कठघड़ेमें दिखाई देना। मजिस्ट्रेटका प्रवेश, सबका उठकर उनका स्वागत करना, मजिस्ट्रेटका आसन ग्रहण करने पश्चात् सबका बैठना।

मजि०—क्या यही शख्स हीरालाल है, जिसने कल रात्रिमें मुन्ना वेश्याका खून किया है?

इन्स्पे०—जी हाँ हुजूर! यह वही शख्स है।

मजि०—तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ, कि हीरालालही मुन्ना वेश्या का खूनी है? इसका सबूत पेश करो।

इन्स्पे०—सबूतमें मैं बाबू अभयचन्दको पेश करता हूं।

मजि०—अच्छा! अभयचन्दको हाजिर करो।

चपरासी—अभयचन्द हाजिर है?

अभय—जी हुजूर! हाजिर है।

मजि०—तुम जो-कुछ इस खूनके बारेमें जानते हो, उसे बयान कर जाओ?

अभय—हुजूर! कल रात्रिमें करीब बारह बजे, मैं किसी कार्य्य-

वश बाहर निकला, देखा कि हीरालाल बेतहाश भागा जा रहा है। मैंने कई बार पुकारा, किन्तु उसने फिरकर देखनेका नाम तक न लिया। बाद सुबह जब मुझे यह मालूम हुआ कि मुन्ना वेश्याका खून होगया है, मैं उसी समय घटना स्थलपर पहुंचाही था कि सिपाहियोंके साथ इन्स्पेक्टर साहब भी पहुँच गये। इनके पूछनेपर मैंने जो कुछ रात्रिमें देखा था, उसे कह सुनाया।

स० व०—अच्छा! तुम हीरालालको कबसे जानते हो? क्या तुम्हारी और इसकी पहले भी कुछ मित्रता थी?

अभय—हुजूर! मित्रता तो नहीं थी, किन्तु थोड़ी बहुत जान-पहचान जरूर थी।

स० व०—तुम्हारी और हीरालालकी जान-पहचान कैसे हुई?

अभय—हुजूर! मुन्ना वेश्याके यहाँ यह भी जाते थे, और कभी-कभी मैं भी जाया करता था।

स० व०—जब तुम सुबह मुन्नाके घरपर गये, तुमने वहाँ कितने मनुष्योंको देखा?

अभय—धर्मावतार! मैंने घरमें घुसतेही, रोती हुई मुन्नाकी दासीको देखा।

मजि०—अच्छा! मुन्नाकी दासीको हाजिर करो।

इन्स्पे०—हुजूर! वह इस समय यहाँ हाजिर नहीं है।

मजि०—तब जल्द उसे बुलानेके लिये सिपाही भेजो।

स० व०—बहुत अच्छा हुजूर!

(इन्स्पेक्टरका एक सिपाहीको इशारा
करना, उसका जाना)

मजि०—हीरालाल ! जो-जो तुम्हारे ऊपर इल्जाम लगाये गये हैं, क्या तुम उसके विपरीत कुछ कहना चाहते हो ? किसीसे कुछ जिरह करना मांगते हो ? परन्तु खूब सोच विचारकर बातें करना, क्योंकि तुम्हारे ऊपर बहुत भारी अपराध साबित किया गया है।

हीरा—(स्वगत) हे ईश्वर ! अब मैं मजिस्ट्रेट साहबको क्या जवाब दूँ ? किससे जिरह करूँ ? कारण मेरे छुटकारा पानेके लिये मेरे पास कोई भी प्रमाण नहीं। बस ! अब तो अपने किये हुए पापोंका मृत्यु दण्डही यथेष्ट है।

मजि०—हीरालाल ! उत्तर क्यों नहीं देते, क्या इस विषयमें कुछ बोलना नहीं चाहते ?

हीरा—नहीं हुजूर ! मैं कुछ भी नहीं बोलना चाहता, क्योंकि मेरे बचनेके लिये मेरे पास यथेष्ट प्रमाण नहीं। परन्तु अन्तमें यही कहूँगा, कि मैं पूर्णतः निर्दोष हूँ।

मजि०—शोक है कि सिर्फ तुम्हारेही कहनेपर कि मैं निर्दोष हूँ, अदालत तुम्हें मुक्त नहीं कर सकती।

(रामदासका प्रवेश)

राम—अगर सिर्फ इनके कहनेपर मुक्त नहीं कर सकती, तो अदालत मेरे प्रमाण देनेपर तो इन्हें मुक्त कर सकती है।

(सारी अदालतका चौंकना)

मजि०—तुम कौन ?

राम—हुजूर ! इन्हींका एक "स्वामि-भक्त" सेवक "रामदास" ।

मजि०—यहाँ क्यों आये ?

राम—इनके विरुद्ध लगाये गये अपराधोंको झूठा साबित करने।

मजि०—तब क्या तुम भी इस विषयमें कुछ जानते हो ?

राम—हुजूर ! जानता क्यों नहीं ? अपने स्वामीपर संकट आया देखकर, क्या सच्चा सेवक उस सकटका पूरा पता लगाये बिना चैन ले सकता है ?

मजि०—क्या तुम्हारे पास तुम्हारे स्वामीके मुक्त होनेका पूरा प्रमाण है ?

राम—हुजूर ! एकही नहीं, अपने स्वामीको मुक्त करनेके लिये मेरे पास हजारों प्रमाण मौजूद हैं।

मजि०—अच्छा ! पहिले प्रमाणमें तुम किसे पेश करते हो ?

राम—पहिले प्रमाणमें मैं मुन्नाकी दासीको पेश करता हूँ ।

मजि०—अच्छा, उसे हाज़िर करो ।

(रामदासका जाना और दासीको लेकर आना,
अभयचन्दका चौंकना)

स० व०—तुम्हारा नाम ?

यमुना—हुजूर ! यमुना दाई ।

स० व०—क्या तू हीरालाल, अभयचन्द और इस रामदासको जानती है ?

यमुना—हां हुजूर ! मैं इस रामदासको छोड़ बाकी दोनों सज्जनों

को अच्छी तरह जानती हूँ । कारण यह दोनोंही सज्जन प्रायः नित्यप्रति मेरी मालकिनके पास आया-जाया करते थे ।

स० व०—क्या तू यह जानती है कि मुन्नाका खून करनेवाला कौन शख्स है ?

यमुना—हां हुजूर ! इस खूनके करनेवाले बाबू अभयचन्द हैं ।

अभय—(घबड़ाकर गुस्सेसे) क्या कहा हरामजादी ! मैं खूनी हूँ ? और वह भी मुन्ना वेश्या का ?

मजि०—अभयचन्द ! दूसरेके इजहारमें बोलनेका तुम्हें कोई भी अधिकार नहीं । (यमुनासे) तुमने किस प्रकार जाना, कि मुन्नाका खून अभयचन्दनेही किया है ?

यमुना—हुजूर ! मैं उसी रात्रिमें बाहर सोई हुई थी कि अचानक मेरे कानोंमें "आह"की आवाज पहुँची । मैं उठकर घबड़ायी हुई अन्दर गई, देखा कि हाथमें नग्न छुरा लिये हुए अभयचन्द खड़ा है । मैंने डरते हुए पूछा "अभयचन्द ! तुम यहाँ क्यों ?" इतना सुनतेही ये मेरा हाथ पकड़ कटार दिखलाकर बोले, "अगर तूने चूँ भी किया तो तुझे भी यमलोक भेज दूंगा।" मैं डरके मारे इनके पैरोंमें गिर गई और प्राण भिक्षा माँगी, तब इन्होंने मुझे एक हीरेकी अंगूठी दी और बोले "अगर सुबह पुलिस आवे तो तू कुछ भी न बोलना । मैं प्रातःकाल स्वयंही आकर सब काम बना लूंगा ।" मैंने डरसे उस समय तो इनकी सारी बातें स्वीकार कर ली, किन्तु इनके चले जानेपर मैंने निश्चय किया कि एक अंगूठीके लालचसे नमक-

हरामिन न बनूंगी, बल्कि इस पापीको समयपर उचित दण्ड दिलाऊँगी।

स० व०—हां ! इसके बाद क्या हुआ ?

यमुना—सुबह होते ही, खूनकी खबर चारों ओर पहुंच गई। यह पापी भी वहाँ उपस्थित हुआ ही था कि सिपाहियों के साथ सार्जेण्ट साहब भी पहुंच गये। अभयचन्दने सबसे आगे बढ़कर अपना झूठा बयान लिखाया और खूनी बाबू हीरालालको बताया।

मजि०—अच्छा ! पहले उस अंगूठीको हाजिर करो।

यमुना—बहुत अच्छा हुजूर ! यह लीजिये।

स० व०—अब यह बताओ, कि तुम्हारी और इस रामदासकी कहां भेंट हुई, और इसके साथ तुम यहां क्यों आई ?

यमुना—हुजूर ! आज सुबह दश बजे, यह मेरे मकानपर गये, और अपना परिचय दे मुझसे सारी बातें पूछीं। मैंने भी इन पर विश्वासकर सारी घटना जो-जो हुई थी सुना गई और अच्छा मौका देख, इनके साथ यहां आई।

स० व०—इस घटनाके पूर्व, क्या मुन्ना और अभयचन्दमें कभी कुछ झगड़ा हुआ था ?

यमुना—हां हुजूर ! खूनके एकदिन पूर्वही बाबू हीरालालके लिखे हुए ७५००) रुपयेके रुक्के पर झगड़ा उठा था, किन्तु मेरी मालकिनने इन्हें नहीं दिया।

मजि०—साढ़े सात हजारका रुक्का कैसा ?

हीरा—हुजूर! बीचमें बोलनेका अपराध क्षमा हो, इस विषयमें यह कुछ भी नहीं जानती। इस रुक्केको भी इसी पापीने मुझे धोखा देकर लिखाया था।

स० व०—हाँ यमुना! क्या खून होने पश्चात तुमने उस रुक्के को कहीं देखा?

राम—हुजूर! यह देखती कहांसे? कल खूनी वारण्टके पहिलेही अमीन साहब को साथ लिये मेरे मालिकके घर पर पहुंचा और अदालतकी कुर्कीका हुक्म सुनाया। अस्तु, रुपये तो मैंने किसी प्रकार इसे देकर उस समय अपने मालिक और उस घरकी लाज बचाई। किन्तु अब इनकी रक्षाका भार, आपही पर है।

मजि—ओफ! अब मुझे मालूम हुआ कि मामला बहुत ही पेचीदा है। क्यों अभयचन्द! क्या तुमने कल हीरालालसे साढ़े सात हजार रुपये पा लिये?

अभय—हां हुजर! पाता क्यों नहीं, जब कि मैंने इन्हें बड़े संकट के समय दिये थे।

मजि०—अच्छा! क्या यह अंगूठी तुम्हारी है?

अभय—(स्वगत) हाय! हाय!! अब क्या करूं? मेरा पाप मेरे सामने आया। (प्रगट) नहीं हुजूर! यह मेरी अंगूठी नहीं है।

मजि०—(अंगूठीको चारों तरफसे देखकर) झूठ! बिलकुल झूठ!! इस पर साफ तुम्हारा नाम खुदा हुआ है।

अभय—(लड़खड़ाकर) हाँ हुजूर ! मे...री...है।

मजि०— बस ! अब मैं अधिक नहीं सुनना चाहता, अदालत अभयचन्दको दोषी ठहराती है।

राम—ठहरिये, मजिस्ट्रेट साहब ! अभी इसके अत्याचारोंका और भी दर्शन कीजिये।

मजि०—वह कौन सा ?

राम—रायभड़चन्द बहादुर।

स० व०—भड़चन्द बहादुर तो इस शहरका एक प्रतिष्ठित मनुष्य है।

राम—हाँ हुजूर ! इस दुष्ट ने उस भोले मनुष्य पर भी अपना हाथ साफ किया है !

स० व०—अच्छा ! उसे हाजिर करो।

चपरासी—भड़चन्द बहादुर हाजिर है ?

(भड़चन्दका प्रवेश)

भड़—हाँ हुजूर ! हाजिर है।

स० व०—राय साहब ! क्या आप इस अभयचन्दको पहचानते हैं ?

भड़—इसको ! अरे सरकार ! इसने तो मुझे बिलकुलही चौपटकर दिया। दोहाई सरकार की, इसने मेरी सारी कमाई छीन ली, और मैं महाराजा भी न बन सका। (रोना)

स० व०—क्या इसने तुम्हें झूठा महाराजा बना कुछ रुपये भी ठग लिये हैं ?

भड़—हां हुजूर। इसने मुझे महाराजा वना मुझसे एक लाख रुपया झांस लिया और मेरी प्यारी नन्ही वच्ची लपेटीको भी एक दुष्टके साथ भगा दिया। दोहाई सरकारकी, मैंने राज मुकुट वननेका भी वयाना दे दिया है, वे वन भी गये होंगे।

स०व०—तुम्हारी वच्ची लपेटीको भगाने वालेका नाम क्या था?

भड़—हुजूर! नाम तो वहुत अच्छा था, किन्तु उसका काम ही खराव था। दोहाई सरकारकी! वह तमाम जेवर भी साथमें ले गई। मेरी जोरू रोज मेरे कान पकड़ कर उठ वैठ करवाती है। मैं हुजूरके हाथ जोड़ता हूँ, मुझे जरूर महाराजा वना दें, ताकि आज ही जाकर उसे फांसीका हुक्म सुना दूं।

स० व०—रायसाहव! जो मैं पूछता हूँ पहिले उसका जवाव दो?

भड़—दोहाई हुजूरकी! मैं सवका जवाव देता हूँ लेकिन मुझे पहिले महाराजा वना दीजिये, जिससे जव चाहूँ तभी हरएक आदमीको फांसी पर चढ़ा दूँ।

राम—हुजूर! इसकी जिरह यहीं समाप्त कीजिये और इतनेही से समझ लीजिये कि लाख रुपये और घरकी प्यारी वच्ची लपेटीके चले जाने कारण यह पागल होगया है। लपेटीको मय जेवर भगाने वाला इसीका पुराना दोस्त फटिकचन्द था। इसी दुष्टने इनके यहां उसको डाक्टर वनाकर रक्खा था किन्तु दुष्ट कव अपनी दुष्टतासे वाज आता है, मौका पाते ही वह लपेटीको जेवर सहित लेकर चम्पत होगया।

मजि—यह मामिला इतनी दूर तक वढ़ेगा, इसकी मुझे स्वप्न

में भी आशा न थी। अच्छा रायसाहब ! आप बैठ जाइये, मैं अभी सब विचार करता हू।

भड़—हाँ हुजूर ! विचार कर लीजिये और जल्द मुझे महाराजा बना दीजिये। दोहाई सरकारकी ! मेरी जोरू रोज मुझे तंग करती है, आखिर मैं उसे फांसी तो दे दूँ।

(बैठ जाना)

मजि०—अभयचन्द ! तुम्हारी बातों और तुम्हारे बयानसे मुझे पहिले यह आशा न थी कि इस षड़यन्त्रके खास कर तुम्हीं मुखिया हो। परन्तु अब अच्छी तरह मालूम होगया कि सरकारके राज्यमें तुम एक भीषण षड़यन्त्रकारी और प्रसिद्ध हत्यारे हो।

राम—हुजूर ! घबड़ाइये नहीं, हृदयको कुछ देर और शान्त कर इसके साथियों तथा इसकी करतूतोंका अभी और भी सबूत लीजिये।

मजि०—अच्छा कहो, रामदास ! तुम क्या कहना चाहते हो ?

राम—हुजूर ! मैं अपना बयान देनेके पहले अपने मालिककी बहन देवी कमलावतीका बयान दिलाया चाहता हूँ। जिसके विषयमें गिरफ्तार हुए इसके तीन साथी आपकी जेलमें अभी हवा खा रहे है। तथा जिनके मुकद्दमोंका अभीतक फैसला नहीं हुआ। आशा है, उसका भी आजही निर्णय हो जायगा। कारण वह मुकद्दमा इस मुकद्दमेंसे घनिष्ट सम्बन्ध रखता है।

मजि०—उस मुकद्दमेका नम्बर क्या है ?

इन्स्पे०—हुजूर! उस मुकद्दमेका नम्बर २०१ है।

(मजिस्ट्रेटका देखना)

मजि०—अच्छा! देवी कमलावतीके साथही उन सबोंको भी हाजिर करो।

(इन्स्पेक्टरका जाना)

मजि०—रामदास! इस मुकद्दमेके अन्दर इतनी जटिलता होगी, इसकी मुझे स्वप्नमें भी आशा न थी।

(सिपाहियोंके साथ वन्दी रूपमें वैसाखनन्दन आदिका तथा स्वतन्त्र कमलावतीका प्रवेश)

देवी कमलावती! क्या तुम इन तीनोंको पहचानती हो?

कमला—हुजूर! इन तीनोंके साथ-ही-साथ इस पापीको भी अच्छी तरह पहचानती हूं।

स० व०—किस प्रकार?

कमला—धर्मावतार! यह चारों दुष्ट मेरे भाईके मित्र थे, और प्रायः प्रतिदिन मेरे मकानपर आया करते और संध्या होतेही मेरे भाईको सैर करानेका वहाना वता अपने साथ ले जाया करते थे। एकदिन मेरे भाई जब सुबहतक मकानपर नहीं आये, मैं इस वैसाखके घर अपने भाईको बुलाने गई। वहाँ इस दुष्टने मुझे गिरफ्तार कर लिया और अपनी स्त्री बननेको कहा। मैंने उस समय इसे इस प्रकार धिक्कारा कि यह क्रोधकी ज्वालासे भभक, बलात्कार करनेकी इच्छासे मेरे ऊपर लपकाही था कि मेरे सेवक रामदासने पहुँचकर मेरी रक्षा की।

वैसाख—झूठ, बिल्कुल झूठ ।

कमला—यदि हुजूरको विश्वास न हो, तो मैं पूरा प्रमाण दे सकती हूं ।

मजि०—नहीं देवी ! प्रमाणकी कोई भी जरूरत नहीं, अब दूसरी घटनाका बयान करो ?

कमला—हुजूर ! घटनावाली रात्रिमें मैं अपने मकानमें सोयी हुई थी । कुछ दुष्टोंने मुझे उठाया और झट मेरे मुँहमें कपड़ा ठूंस दिया । मैं उसी वक्त मूर्च्छित होगई । जब मुझे चेत हुआ, तो मैंने अपनेको एक बन्द कमरेके अन्दर पाया, जिसमें यह चारों दुष्ट अपने अपने मुंहपर नकाब डाले कुर्सियोंपर बैठे थे ।

स० व०—इसके बाद ?

कमला—जब मैं उठी, इन सबोंने वहां भी मुझे चारोंकी वेश्या बननेको कहा । किन्तु जब मैंने स्वीकार न किया तो यह पाजी अभयचन्द्र इस वैसाखको यह हुक्म देकर चला गया कि चाहे जैसे हो इसका धर्म भ्रष्ट करो । इसके बाद इन दोनों दुष्टोंने मेरे हाथ पकड़ लिये तथा इस निर्लज्ज वैसाखने मेरे ऊपर वार करना ही चाहा था कि रामदासने सिपाहियोंके साथ पहुँचकर मेरे धर्मकी रक्षा की और इन तीनोंको बन्दी किया । इसके बाद......

मजि०—देवी ! इसके बादकी अब कोई जरूरत नहीं । अदालतको यह अच्छी तरह मालूम होगया कि यह चारों दुष्ट इस राज्यमें बड़े ज़ालिम आदमी हैं ।

राम—हुजूर ! अब शायद मेरे इजहारकी कोई जरूरत न होगी ? कारण मेरे स्वामीको मुक्त करनेके लिये अदालतके सामने कई प्रमाण उपस्थित हैं।

मजि०— हां, राम दास ! (सार्जेण्टसे) हीरालालको मुक्तकर इस दुष्ट अभयको जल्द गिरफ्तार करो। मैं इस मुकद्दमेका फैसला पीछे सुनाता हू ।

(फैसला लिखनेके पश्चात सुनाना)

१—बाबू हीरालालके "स्वामि-भक्त" सेवक "रामदास"के कथन से, यमुना दाई, देवी कमलावती, और रायभड़चन्द बहादुर का बयान लिया गया। जिससे यह स्पष्ट मालूम हुआ कि इस राज्यमें अभयचन्द एक भीषण हत्यारा, पापी, ठग, विश्वासघाती, और षड्यन्त्रकारियोंके दलका मुखिया है। अदालत ऐसे दुराचारी मनुष्यके प्रति घृणा प्रगट करती हुई, अभयचन्द को आजन्म कठोर कारावास का दण्ड देती है।

(अभयका अपने कर्मपर पछताना)

२—रामदास, और देवी कमलावतीके बयान तथा पुलिसकी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि २०१ नम्बर मुकद्दमेंके अभियुक्त इस राज्यमें अत्यन्त पापी, दुराचारी, और षड्यन्त्रकारी हैं। विशेषकर एक नम्बर अभियुक्त अन्य दोनों अभियुक्तोंसे ज्यादा दोषी है। अतः अदालत वैसाखनन्दनको बारह वर्षका और बाकी दोनों अभियुक्तोंको ८-८ वर्षके कठोर कारावासका दण्ड देती है। (तीनोंका अपने कर्मपर पछताना)

३—राय भड़चन्द बहादुरके बयान तथा उनके विशेष अनुरोध और रामदासकी साक्षीपर दुष्ट फटकचन्द और लपेटीके नाम अदालत वारण्ट निकालती है, और पुलिसको सख्त ताकीद करती है, कि वह इन दोनोंकी खोजमें अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करे।

४—राय भड़चन्द बहादुर को धोखा दिये जानेके लिये अदालत दुःख प्रगट करती है, और सर्वसाधारणको सूचित करती है कि वह जल्द किसीपर इस तरह विश्वास न करे।

५—अदालत इन चारों अभियुक्तोंकी जायदादको नीलाम करनेको आज्ञा देती है, और नीलामसे आई हुई रकमसे साढ़े-सात हजार रुपया बाबू हीरालालको वापस दिलाती है।

६—दुष्ट अभयचन्द द्वारा हीरालाल जैसे सज्जन व्यक्तिको व्यर्थ कष्ट और अपमानित होना पड़ा, अदालत उसके लिये शोक प्रगट करतो है।

७—देवी कमलावतीको अभियुक्तों द्वारा जो कष्ट पहुंचा, उसके लिये भी अदालत खेद प्रगट करती हुई उसे उसकी धर्म पालन और दृढ़तापर प्रसन्न हो अनेकानेक बधाई देती है।

८—अदालत जमुनादाईको सरकारी गवाह बनने औरउसकी "स्वामि-भक्ति"के पुरस्कारमें मुन्नाकी सारी जायदादका हकदार बनाती है।

९—अदालत, पुलिसको भविष्यमें ऐसे बदमाशोंपर कड़ी नजर रखने तथा उन्हें खोज निकालनेकी सख्त आज्ञा देती है।

१०—अन्तमें अदालत रामदासको उसकी "स्वामि-भक्ति" तथा ऐसे भीषण मुकद्दमोंकी भीतरी कार्रवाइयोंको खोज निकालनेके लिये अनेकानेक धन्यवाद देती है।

(धीरे २ सबका प्रस्थान)
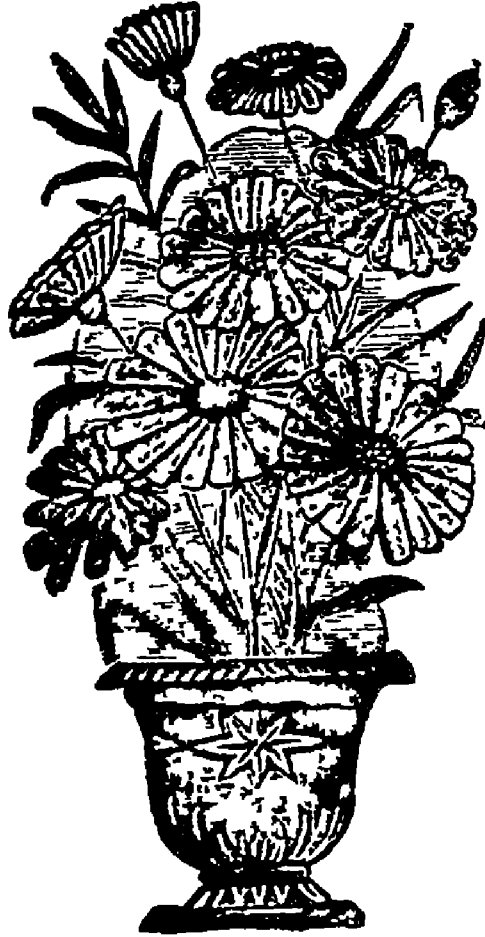
षष्ठ दृश्य

स्थान—मार्ग

(फटकचन्द और लपेटीका दीन भेषमें प्रवेश)

फटक—धत्तरे भैरोनाथ बाबाकी, आखिर मुझे कंगालही बनाकर छोड़ा ? तुम्हारे जैसा काइयां, भिखमंगा, भूखा, प्यासा इस दुनियांमें शायदही कोई हो। परन्तु याद रक्खो "बिन मांगे मोती मिलै, मांगे मिलै न भीख" अब चाहे तुम मेरे आगे सिर भी पटककर मर जाओ, परन्तु फटकचन्द मदिरा तो क्या अब जल भी न पिलायगा।

लपेटी—प्यारे ! भैरोनाथपर क्यों रुष्ट होते हो, उन्हें दोष मत दो, इसमें उनका कुछ भी अपराध नहीं।

फटक—अपराध ! अरे उसने मेरी सारी आशाओंपर एक दमसे पानी फेर दिया। एकबार अमीर बनाकर ऐसा धम्मसे पटका कि मैं फिर पहले सा भिखारी होगया।

लपेटी—किन्तु बाबाजीने तो तुम्हारे साथ अच्छाही वर्ताव किया था। पर यह तुम्हारा दोष है, जो अमीर बनकर अपने आपको बुरे मार्गसे न बचा सके।

फटक—तो तुम भी आखिरकार मुझेही दोषी ठहराती हो ?

लपेटी—हां, जरूर ! इसमें बाबाजीका कोई भी दोष नहीं, यह

सब दोष हमही लोगोंका है। अगर हमलोग घर न छोड़ते, और पिता, माताजीको राजी करके शादी कर लेते तो आज ऐसी दशाको कदापि न पहुँचते।

फटक—तब प्यारी! अब बाकी जिन्दगी हमलोग किस तरह बितायेंगे? क्योंकि अब तो फटकचन्द बिलकुल ही कंगाल है। तेरे पास भी अब कोई जेवर बाकी नहीं बचा, दूसरे अब कहीं दाल भी नहीं गल सकती, कारण हमलोगों-के पीछे पुलिस आँधीकी तरह मड़रा रही है। हाय! अब तो इस संसारमें जीवित रहनेका कोई भी उपाय नहीं।

लपेटी—प्यारे! अधीर न बनो, अब सिवा जगतपिता परमेश्वरके हम पापियोंको किसीका भी सहारा नहीं है।

फटक—ना, ना, अब मैं भूलकर भी देवताओंका सहारा स्वीकार न करूँगा। एकने तो चौपट करही दिया, अब क्या मेरे प्रांण फालतू नहीं जो दूसरेका भी सहारा करूँ?

(दो सिपाहियोंका प्रवेश)

प० सि०—(देखकर) यार! देखते क्या हो? जल्दी इसे गिरफ्तार कर लो। यही फटकचन्द और लपेटी है, जिसके पीछे हमलोग अबतक हैरान थे।

दू० पु०—हाँ! बांधो इस पाजी, नमकहरामको। न जाने इसने हमलोगोंको कितना हैरान किया?

फटक—हां! हां!! खुशीसे बाँध लो, मैंने तुम सबको बहुत कष्ट पहुँचाया। हांय! अभीतक मुझे अपने पापोंपर

विश्वास न था, परन्तु नहीं, अब वह सब सामने आगया। (चौंककर) आह! यह क्या, मेरा शरीर क्यों टूट रहा है? भीतरसे कलेजा क्यों निकला आ रहा है?

प० सि०—अबे! यह सब तेरे पापोंका फल है।

लपेटी—हां भाई! तुम लोग सत्य कहते हो। मुझे जल्द ले चलो, और न्यायालयसे दण्ड दिला संसारसे विदा कर दो।

दू० सि०—अब जन्मभर जेलमें चक्की पीसो, और पेट पालो (साथीसे) चलो जी इन पाजियोंको ले चलो, और सरकारसे गहरा इनाम लूटो।

(सिपाहियोंका दोनोंको धक्का देते हुए ले जाना)

———

सप्तम दृश्य

स्थान—उपवन।

(हीरालाल और सरस्वतीका एक कोचपर बातें
करते नजर आना)

हीरा—प्रिये! प्राणेश्वरी !! प्राणवल्लभे !! मुझे क्षमा करना। हाय! मेरे द्वारा तुम लोगोंको न जाने कितने कष्टोंका सामना करना पड़ा। किन्तु मैंने स्वप्नमें भी इस विचारको हृदयमें स्थान न दिया।

सर—स्वामी! मेरे कष्टोंके लिये आप कुछ भी शोक प्रकाश न करें, मुझे तो आपकेही कष्टोंका शोक हो रहा है। नाथ! मैं आपकी अर्द्धाङ्गिनी और सहचरी हूँ।

पड़े लाखों मुसीबत जो, कभी उफ तक न लाऊँगी।
तुम्हें मैं "स्वामि-भक्ति"का, चरित-चित्रण दिखाऊँगी॥

हीरा—प्रिये! यदि तुम मेरे जैसे हतभाग्य और व्यभिचारीके हाथ न पड़ती, तो तुम्हारी जैसी स्थल-कमलिनीको आज अर्द्ध-विकसितावस्थामेंही दारिद्र्यके तापसे इस तरह कष्टोंका सामना स्वप्नमें भी न करना पड़ता।

सर—नहीं स्वामी! मुझ जैसी दुःखिनीकेही आगमनसे तुम्हारा मन बुरे मार्गकी ओर अग्रसर हुआ। नाथ! यह मेरेही भाग्यका दोष है।

हीरा—सरस्वती! सरस्वती!! तुम मेरे सुख दुःखमय जीवनकी एकमात्र सहचरी हो। तुम्हारे जैसी परम पति-परायन ललना-वृन्दकेही स्पर्शसे भारतवासियोंको रोग-शोक-पूर्ण अन्न-क्लिष्ट हाहाकारमय संसारमें सुख शान्ति प्राप्त होती है। नहीं तो भारतवासी अति सामान्य अर्थोपार्जन कर कभी स्त्री, पुत्र, कन्यादिसे परिपूर्ण हो इतनी थोड़ी उमरमें गृहस्थ आश्रमका पूर्ण सुख प्राप्त न कर सकते।

(कमलावतीका प्रवेश)

कमला—भइया! मैंने एक बहुत आनन्दप्रद समाचार सुना है।

हीरा—कहो, प्यारी बहन! वह कौन सा समाचार है?

कमला—यही कि दुष्ट अभयचन्द और बैसाख कठोर कारावास से पीड़ित हो इस दुनियांसे कूच कर गये।

हीरा—कमला! कमला!! तूने यह बहुतही आनन्दमय खबर सुनाई। पापीको उसके पापका फल मिला, यह बहुतही अच्छा हुआ।

(रामदासका प्रवेश)

राम—नहीं नाथ! नहीं!! यह बहुतही बुरा हुआ।

हीरा—रामदास! रामदास!! तुमने आज यह कैसी बात मुखसे निकाली?

राम—ऐसे कि आखिर वे हमारे भाई थे। पापीको प्राण दण्ड देनेसे बेहतर है, कि अपने एहसानोंसे उसके जीवनको अन्तमें आदर्श बना दे। ताकि देशके एतिहास लेखक और नाट्य

कारोंको उसका नाम लिखकर अपनी पवित्र लेखनीको कलुषित न करना पड़े ।

हीरा—रामदास! रामदास!! तुम सत्यही स्वर्गके देवता हो, तुम्हारे उपकारोंको मैं किसी प्रकार भी न चुका सकूँगा। संसारके सन्मुख तुमने "स्वामि-भक्ति"का आदर्श चरित-चित्रण किया है। कहो! भारतमाताके अमूल्य रत्न!! मैं किस वस्तुसे तुम्हारी सेवा करूँ ?

सर—स्वामी! वास्तवमें रामदास अपना सेवक नहीं, बल्कि सुख-दुःखमय जीवनका आदर्श बन्धु है। अच्छा होता यदि आप की बहन कमलावतीका पाणि-ग्रहण यही करते। आशा है हमलोग इनकी इतनीही सेवा कर अपनेको धन्य समझेंगे।

हीरा—हाँ प्रिये! मेरी भी हार्दिक इच्छा यही है कि प्राणोंसे प्यारी बहन कमलावतीका पाणि-ग्रहण हमारे आदर्श बन्धु रामदासही ग्रहण करें। (दोनोंको लक्षकर) आओ प्रिय बन्धु रामदास और बहन कमलावती! मैं भी विश्व-मण्डलके सन्मुख "स्वामि-भक्ति"का यथोचित पुरस्कार रख दूं।

(हीरालालका दोनोंके हाथ मिलाना)

रहो हिल मिल सदा दोनों मुबारिक हो, मुबारिक हो।
रहे घर प्रेमका जलसा, चिरञ्जीवि मुबारिक हो॥

(दोनों तरफसे सहेलियाँ हाथमें फूल और माला लिये आती हैं, रामदास और कमलावतीको माला पहनाती हुई बधायीका गाना गाती हैं)

गायन

मुबारिक बादी, गाओ शादो, दूल्हा दूल्हन की।
वाह! वाह!! शुभ मंगल दिन है।
क्या प्यारी जोड़ी खूब मिली है, दूल्हा दूल्हन की॥
किया न्याय जगदीश्वर ने,
पापी को पाप का दण्ड मिला।
पुरस्कार मिला रामदास को,
"स्वामि-भक्ति" सम्मेलन की।

शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!

।समाप्त।
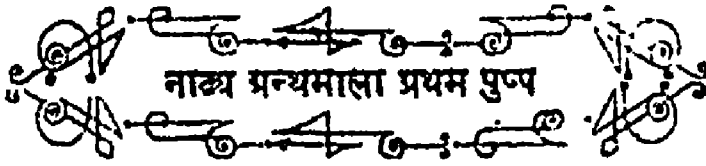
नाट्य जगतमें हलचल मचानेवाला ।

अपूर्व सामयिक नाटक ।

लेखक—जमुनादास मेहरा ।

पाप रेखायें दुःखोंके, अश्रु ओंसे धुल गईं ।
बन्द थी आँखें अभीतक, हिन्दकी वह खुल गईं ॥

नाटक क्या है ! आजकलका सच्चा चित्र है । इसकी प्रत्येक घटनायें विचित्र हैं । यह नाटक अन्धेरेमें भटकते हुए देशवासियोंको पवित्र मार्ग दिखानेके लिये एक जलती मसाल है । इसके प्रत्येक दृश्य आपको चकित कर देगा और आपके हृदयमें देशानुराग कूट-कूटकर भर देंगे । इसके हास्य रस युक्त शिक्षाप्रद दृश्य हँसाते हँसाते आपकी नस नसमें देशाभिमानकी बिजली दौड़ा देंगे । इसमें नाट्यकला कौशलकी भरमार है, यानी रंगमंचका शृङ्गार है । नाट्य संस्थाओंके लिये यह नाटक बहुतही लाभप्रद है । बढ़िया एन्टिक कागजपर छपी हुई कई सुन्दर चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य १) ।

छप गया! छप गया!! छप गया!!!

संसार चक्रका अद्भुत चमत्कार।

रूसमें युगान्तर

अर्थात्

बोल्शेविक रूस।

लेखक—विश्वम्भरनाथ जिज्जा।

यदि आप रूस सरीखे महाशक्तिशाली राज्यका पतन, जर्मनीके सम्राट कैसर और रूसके सम्राट जारकी चालें, रूसके भिन्न-भिन्न क्रान्तिकारी दलोंके उपद्रव और महात्मा लेनिन तथा ट्रोजकीके नेतृत्वमें भयानक बोल्शेविक क्रान्तिकी झलक देखना चाहते हैं तो "रूसमें युगान्तर" एकबार अवश्य पढ़िये।

इस पुस्तकमें बोल्शेविक मत क्या है, बोल्शेविजमकी उत्पत्ति कब, कैसे और किस उद्देश्यसे हुई। यदि आप यूरोपीय महायुद्धके वास्तविक कारण, रूस जापान युद्धका आनन्द, यूरोपका वर्त्तमान इतिहास जानना चाहते हैं तो एकबार इस पुस्तकको मँगाकर अवश्य अवलोकन कीजिये। लेखकने बड़े परिश्रमसे ऐसी रोचक और सरल भाषामें लिखा है कि जबतक आप शुरूसे अन्ततक न पढ़ लेंगे, पुस्तक छोड़नेकी इच्छा न होगी। सुन्दर कई हाफ टोन चित्रोंसे सुशोभित पुस्तकका मूल्य २)।
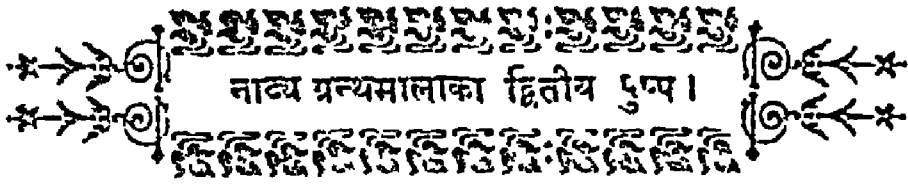
नाट्य जगतका सचित्र सामयिक शृङ्गार।
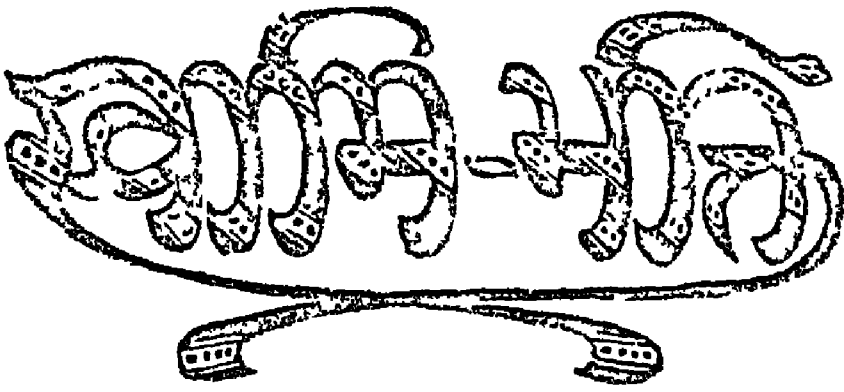
लेखक—रामसिंह वर्म्मा।

होरही जब वृद्धि वेश्यागामियोंकी इस तरह।
क्यों न फिर तब वृद्धि होगी, वेश्याओंकी हर तरह॥
छोड़कर जो घरकी स्त्री निज कर्मका मारण करे।
फिर क्यों न उनकी नारियां, वेश्या वृत्ति धारण करें॥

नाटक क्या है? वर्त्तमान समयका चित्र दिखानेवाला अद्भुत चमत्कारिक आइना है। इसके हरएक दृश्य आपका चित्त-कंपित करेंगे और समयानुकूल बिना रुलाये और हँसाये न रहेंगे। यह नाटक बड़ीही सरल और मधुर भाषामें लिखा गया है। प्रत्येक नाटक प्रेमी एवं संस्थाको इसकी एक एक प्रति अवश्य रखनी चाहिये। यदि आप सरस्वतीकी पति-परायणता और स्वामिभक्ति, कमलावतीका धर्म पालन तथा भ्रातृ स्नेह, हीरालाल के वेश्या गमनका नतीजा, दुष्ट अभयचन्द तथा उसके साथियोंका

भीषण अत्याचार और अन्त परिणाम, मुन्ना वेश्याके प्रेम जाल तथा उसके गुप्त विचार, राय भड़चन्दके ग्रहकी विचित्र कहानी एवं नाटकके नायक रामदासकी कर्त्तव्य परायणता तथा महान आदर्श स्वामि-भक्ति और उसका पुरस्कार देखना चाहते हैं, तो समस्त कार्य्योंको विश्राम दे एकबार इस पुस्तकको अवश्य अवलोकन करें। अनेक रंग विरंगे चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य १।) रेशमी जिल्द १॥)।
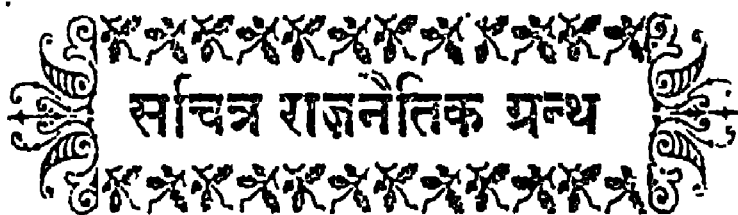
स्वराज्यकी मांग।

इस ग्रन्थमें स्वराज्यके विषयमें देशके बड़े बड़े नेताओंका मत व्यक्त किया गया है। बड़ी बड़ी दलीलों द्वारा सिद्ध किया गया है कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और साथही युक्तियों द्वारा बताया गया है कि हमको स्वराज्य संग्राम किस प्रकार चलाना चाहिये। पुस्तक प्रत्येक देशाभिमानीको अवश्य पढ़नी चाहिये, इस में ८ हाफटोन सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥)।

उपन्यास जगतका अमूल्य रत्न।

लेखक—पं० चन्द्रशेखर पाठक।

भारती उपन्यास-जगतका शृंगार, घटनाओंका आगार और सामयिक तथा राजनैतिक उलझनोंको प्रत्यक्ष देखानेवाला बायस्कोप है। भारतीमें पद-पदपर घटनाओंकी जैसी विचित्रता दिखाई देती है, चरित्र-चित्रणका जैसा आदर्श दिखाई देता है, उसी तरह उपदेश भी प्राप्त होता है। यदि राय साहबका गर्व भरा व्यवहार, दिग्विजयकी देशरक्षक पुकार और भारतीकी सेवाभाव भरी मधुर झंकार सुनना चाहते हों, यदि कपटियोंकी कपट नीति, दुराचारियोंकी स्वार्थ भरी भयानक चालें, अधिकारियोंका मान-मद-मर्दन करनेवाले षड़यन्त्रका नमूना देखना चाहते हों अथवा यह जानना चाहते हों कि नारी जीवनका आदर्श क्या है, तो भारती पढ़िये। इसमें आपको सुन्दर निधि दिखाई देगी। इसलिये कहते हैं कि समस्त कार्य्योंको छोड़ प्रथम भारती पढ़िये। सुन्दर एण्टिक कागजपर छपी हुई अनेक [illegible] बहुरंगे चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य ३) मात्र।

छप गया! छप गया!! छप गया!!!

हिन्दी भाषाका नवीन तथा अमूल्य ग्रन्थ
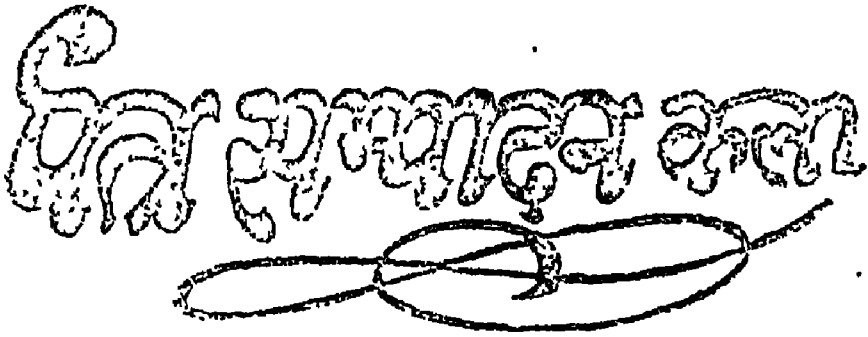
(लेखक—नन्दकुमारदेव शर्म्मा)

यह बेजोड़ ग्रन्थ अभी अभी छपकर तैयार हुआ है। यह वही ग्रन्थ है, जिसके प्रकाशित करानेके लिये हिन्दी साहित्य सम्मेलनके "अधिकारीगण" सिर तोड़ चेष्टा कर रहे थे और जिस के लिये हमारे पास सैंकड़ों आर्डर आकर पड़े हुए थे और लोगोंके तगादेपर तगादे सहन करने पड़ते थे। हिन्दी प्रेमियों तथा अपने सहृदय ग्राहकोंकी आशा पूर्ण करनेके लियेही हमने बहुतसा धन व्ययकर इस पुस्तकको प्रकाशित किया है। इस पुस्तकके निकालनेसे हमारा एकमात्र उद्देश्य यही है कि हिन्दी भाषामें अच्छे सम्पादकों तथा लेखकोंकी संख्या बढ़े। समाचारपत्रोंके सम्पादकोंका क्या कर्त्तव्य है, उन्हें किन किन बातोंपर ध्यान देना चाहिये और किन किन पुस्तकोंको किस प्रकारसे पढ़ना चाहिये। अच्छे लेखों तथा अच्छी पुस्तकोंको कैसे लिखना तथा चित्ताकर्षक और मनोरञ्जन बनाना चाहिये। यह सब बातें इस पुस्तकमें सरल तथा रोचक भाषामें लिखी गई हैं। पत्रों तथा पुस्तकोंने किस

प्रकार जन्म लिया और अपना वर्तमाण रूप किस तरह धारण किया, यह सब बातें भी अच्छी तरहसे दर्शाई गई हैं। इस पुस्तकके पढ़नेसे थोड़ी सी हिन्दी जाननेवाला मनुष्य भी पत्र-सम्पादन कार्य तथा पुस्तकें लिखना और पुस्तकों तथा लेखोंका मर्म पहचानना सीख सकता है। जिन लोगोंको सम्पादक अथवा लेखक बननेका शौक या साहित्य प्रेम हो, वे इस पुस्तकको मंगा कर अवश्य पढ़ें, और बारबार पढ़ें। भाषा इतनी सरल तथा रोचक है, कि कमसे कम हिन्दी जाननेवाले भी इसे समझ सकते हैं। हम दावेके साथ कह सकते हैं, कि हिन्दीमें इस जोड़की पुस्तक दूसरी नहीं है। बढ़िया एन्टिक कागजपर छपी हुई बड़ी पुस्तक-का दाम सर्व साधारणके सुभीतेके लिये केवल १) रखा गया है।

लेखक

आज भी जिन तुलसीदासके ग्रन्थसे हिन्दी साहित्यका मस्तक ऊँचा हो रहा है। जिनकी रामायण आज भी यह घोषणा कर रही है, कि भारतवर्ष आदर्शकी खान है। गोस्वामी तुलसीदासकी समताका विद्वान आजतक भी किसी साहित्यमें नहीं पाया गया। प्रस्तुत पुस्तकमें उन्हीं महापुरुषका चरित-चित्रण किया गया है। गोस्वामीसे श्रद्धा रखनेवाले प्रत्येक व्यक्तिको इसकी एक एक प्रति अवश्य मंगाकर रखनी चाहिये। घटिया कागजकी पुस्तकका मूल्य ॥=) और बढ़ियाका ॥।)

पंजाब हरण

यह सिक्खोंके पतनका इतिहास है। १६ वीं सदीके आरम्भमें सिक्ख साम्राज्य महाराज रणजीतसिंहके प्रतापसे समृद्धशाली होगया था। उनके मरतेही आपसके फूट, वैर, कुचक्र, षड्यन्त्र, अंग्रेज़ोंके विश्वासघातसे उसका किस प्रकार पतन हुआ। जो अंग्रेज़ जाति सभ्यताकी हामी भरती है, मैत्रीकी डींग हाँकती है, उसने अपने परम प्रिय मित्र महाराज रणजीतसिंहके परिवारके साथ किस घातक नीतिका व्यवहार किया इसका वास्तविक दिग्दर्शन इस पुस्तकसे होता है। इससे अंग्रेज़ोंके सच्चे पराक्रमका भी पूरा पता चलता है। जो अंग्रेज जाति आज गली गली ढिंढोरे पीट रही है कि "हमने भारतको तलवारके बल जीता है" उसके सारे पराक्रम चिलियानवालाके युद्धमें लुप्त होगये थे और यदि सिक्खोंने मिलकर एकबार उसी प्रकार और हराया होता तो शायद ये लोग डेराडण्डा लेकर कूचही कर गये होते। पुस्तक बड़े खोजसे लिखी गई है। सुन्दर मोटे एण्टिक कागजपर सचित्र २५० पृष्ठोंकी पुस्तकका मूल्य केवल २)

लव-कुश

इस ग्रन्थमें भगवान् रामचन्द्रके दोनों विश्व-विजयी पुत्र लव और कुशका पवित्र वृत्तान्त दिया गया है। साथही रंग बिरंगे १२ चित्र देकर पुस्तककी शोभा बढ़ा दी गई है। मूल्य १॥) रंगीन जिल्द २) रेशमी जिल्द २।)।

डाकुकी लीला

(एक अद्भुत जासूसी उपन्यास)

यदि आपको जासूसी पुस्तकें पढ़नेका कुछ भी शौक हो तो यह उपन्यास मंगाकर अवश्य पढ़िये। इस उपन्यासमें चरित्र चित्रणका अच्छा फोटो खींचा गया है। इसमें जासूसोंकी चालाकी तथा हुनर देखकर आप चकित होंगे और किस्सेकी गढ़न्त तथा दिलचस्पीकी आप प्रशंसा करेंगे। इस ढङ्गका जासूसी उपन्यास आजतक कोई नहीं छपा। दाम भी सर्व साधारणके सुभीतेके लिये केवल १।) रखा गया है।

कृष्णावसना सुन्दरी

यह जासूसी उपन्यास ऐतिहासिक घटनाको लेकर लिखा गया है। अगर आपको जासूसोंकी चालाकी फुरती और गम्भीरपन देखना हो तो इसमें देखिये। जासूस रणधीरसिंहकी काररवाई देखकर आपको चकित होना पड़ेगा, कृष्णवसना सुन्दरीकी चालाकी पढ़कर वाह वाह करने लग जायगे। किस्सा बड़ा ही दिलचस्प है। दाम केवल १)।

सत्यनारायण

भगवान् सत्यनारायणकी पूरी कथा इस पुस्तकमें नाटकके रूपमें बड़ी खूबीके साथ दर्शाई गई है। साथ ही साथ सामयिक और राजनैतिक दृश्य भी खूबीके साथ दिखाये गये हैं। सचित्र पुस्तकका मूल्य १।) रेशमी जिल्द १॥)।

मारवाड़ी राष्ट्रीय गीत

अर्थात् गांधीजीको गीत

जिस पुस्तकके लिये मारवाड़ी महिलायें सालोंसे लालायित थीं, जिस पुस्तकके लिये स्त्रियोंका पतियोंसे, मातायोंका पुत्रोंसे तथा बहिनोंका भ्राताओंसे सख्त तगादा था, वही मशहूर मारवाड़ी राष्ट्रीय गीत, जिसमें चर्खा, स्वदेशी आदि राष्ट्रीय गीतोंके अलावा सीता जीका वणना, सुदामाजीका गीत, श्रावणका गीत आदि धार्मिक गाने भी हैं, जिन्हें पढ़ और सुन महिलाओंका मन आनन्दसे नाच उठेगा। मूल्य दो भागोंका ।)

हेमलता

यह भी ऐय्यारी और तिलिस्मका बहुत बढ़िया उपन्यास है। इसकी लिखावट बड़ी ही लच्छेदार है। ज्यों ज्यों पढ़ते जाइये त्यों त्यों ताज्जुबके समुद्रमें गोते लगाने पड़ते हैं। पुस्तक पढ़नी शुरू करके बीचमें छोड़ देना मनुष्यकी शक्तिके बाहर हो जाता है। दाम दो भागोंका १॥) रेशमी जिल्द २)।

भक्त चंद्रहास

यह नाटक पौराणिक, राजनैतिक, धार्मिक और सामयिक घटनाओंसे भरा हुआ है। जिस समय यह रङ्गमञ्च पर अभिनीत होता है जनता चित्रवत हो जाती है। सचित्र पुस्तकका मूल्य १) रङ्गीन १॥) और रेशमी जिल्द १॥)।

सत्याग्रही प्रहलाद

यह नाटक सत्याग्रहका जीता जागता चित्र है। भक्त प्रह्लादने किस तरह सत्याग्रह द्वारा दमन नीति पर विजय प्राप्त की थी। यह बात इस नाटकके पढ़नेसे भली भांति विदित हो जायगी। इसकी सफलता पर लेखकको ५००) रु० पुरस्कार भी मिल चुका है। सचित्र पुस्तकका मूल्य १) रेशमी जिल्द १॥)।

सम्राट् परीक्षित

इस नाटकमें सम्राट् परीक्षितके जन्म होनेका कारण और जन्मके समयकी धारणा, बड़े ही आकर्षक और हृदय विदारक दृश्य, कलियुगका धर्म और पृथ्वीको सताना, परीक्षितका उनकी सहायता कर कलियुगके साथ घोर युद्ध करना, इसके अतिरिक्त सभी घटनायें बड़ी खूबीके साथ लिखी गई हैं। सचित्र पुस्तकका मूल्य १) रेशमी जिल्द १॥)।

पंजाबका

भीषण हत्याकाण्ड

इस ग्रन्थमें पंजाबके मार्शललाका पूरा हाल लिखा गया है। पंजाबमें जनरल डायरने कैसे पैशाचिक काम किये थे और हमारे भाइयोंको किस प्रकार विपदका सामना करना पड़ा था यह सब बात आपको इस ग्रन्थके पढ़नेसे मालूम होंगी। इसमें २५ चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥) रंगीन जिल्द २) रेशमी जिल्द २॥)।

सती शर्मिष्ठा

यदि आप जीवन चरित्रके साथही साथ उपन्यासका भी आनन्द लूटना चाहते हैं तो शीघ्र हमारे यहाँसे शर्मिष्ठा मंगाकर पढ़िये। पुस्तक क्या है! राज-भक्ति और पितृ-भक्तिका नगीना है। शर्मिष्ठाकी कर्त्तव्य परायणता, देवयानीका गर्वभरा व्यो-हार, वृहस्पतिके पुत्र "अज"की कार्य्य कुशलता तथा दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य्यकी "मृत सञ्जीवनी"का अद्भुत चमत्कार देखना चाहते हैं तो विना कुछ सोचे विचारे इसे जल्द मँगाकर पढ़नेका कष्ट करें। अनेक रंग बिरंगे चित्रोंसे सुसज्जित पुस्तकका मूल्य केवल ॥)।

अंग्रेजी शिक्षक।

इस पुस्तकके सहारे हिन्दी पढ़ा हुआ आदमी विना उस्तादकी सहायताके अङ्गरेजी सीख सकता है। हर एक आदमीको इस समय अङ्गरेजी भाषा सीखनेकी सख्त दरकार है। विना अङ्गरेजी पढ़ा आदमी बहुत जगह अपमानित तक होजाता है। इसके अलावा अपने छोटे छोटे कामोंके लिये (जैसे चिट्ठी लिखना, रजिस्टरी लिखना, मनीआर्डर लिखना, चिट्ठीपर सरनामा करना आदिमें) दूसरोंकी खुशामद करनी पड़ती हैं। इन्हीं सब दिक्कतोंको देखकर हम लोगोंने अङ्गरेजी सीखनेकी यह सरल पुस्तक तैयार की है। यह पुस्तक व्यापारियोंके बड़े कामकी है। इसे पढ़कर आप अङ्गरेजीका सब काम अपने हाथसे कर सकेंगे। दाम पहला भाग ॥)

मारवाड़ी गीत

इस पुस्तकमें मारवाड़ीं वोलीके हर समय तथा हर मोसिममें गाने योग्य अच्छे अच्छे गीत लिखे गये हैं। मारवाड़ी स्त्रियां इस पुस्तकको वहुतही पसन्द करती हैं और इसमेंके गीतोंको बहुतही लटक तथा प्रसन्नतासे गाती हैं। विवाह शादीके समय के जेसे गीत इस पुस्तकमें हैं वेसे किसी दूसरी पुस्तकमें नहीं मिलते। इस पुस्तकको पढ़नेसे मनुष्य कितनीही चिन्तामें क्यों न हो एकवार अवश्यही हँस देगा। यह पुस्तक छः भागोंमें समाप्त हुई है। दाम प्रति भाग ।) छः भागोंकी सुन्दर जिल्ददार पुस्तकका मूल्य १॥)

आदर्श महिला।

यह पुस्तक भी अपने ढङ्गकी एकही है। इसके पढ़नेसे पुरुष बच्चे सभी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसमें ठाकुर रामनाथका कुसङ्गतमें पड़कर वेश्याके प्रेम जालमें फँस जाना ओर शराव आदि दूषित पदार्थोंका सेवन करना तथा अपनी सव सम्पत्ति नष्ट कर के खून एवं जालके मुकद्दमेमें फँस जाना, अपनी पतिव्रता स्त्रीके प्रभावसे सव दूषित कर्मोंको छोड़कर सुमार्गमें आ जाना, अपने कामोंमें मन लगाना तथा अगाध सम्पत्ति पैदा करना आदि वातें ऐसी खूबीके साथ लिखी गई हैं कि इस पुस्तकको पढ़नेवाला कोई भी विना तारीफ किये नहीं रह सकता। इसके पढ़नेसे आप जान सकेंगे कि अच्छी शिक्षा पाई हुई स्त्रियां अपने पतिको किस प्रकार वशमें कर सकती हैं और वह परिवार कैसा सुखी जिसमेंहोता हैअच्छो समझदार स्त्रियां होती हैं। दाम १)।

पृथ्वीराज

भारतके अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराजका शहाबुद्दीन गोरीसे अनेकों बार युद्ध, मेवाड़ विजय, सारुण्डाका भीषण समर, आबू पर्वतका भयानक युद्ध, प्रथाकुमारी तथा समरसिंहका विलक्षण प्रेम, जयचन्दका हठ, राजसूययज्ञसे संयोगिताका गायब हो जाना, आल्हा, उदलकी विलक्षण वीरता आदि कितनीही घटनायें सप्रमाण लिखी गई हैं। इसमें तीन चित्र भी दिये गये हैं। दाम १।)।

नैपोलियन-बोनापार्ट

ऐसा कौन पढ़ा लिखा मनुष्य होगा जो यूरोपके साक्षात रण देवता सर्व मान्य महावीर नैपोलियन बोनापार्टका नाम न जानता है? इसकी वीरताका दबदबा उस समय सारे यूरोपमें था। इस महान पराक्रमशाली वीरने जर्मनी, प्रशिया, आस्ट्रिया, रूस, इटाली आदि महान राज्योंको जीत, अपनी अपूर्व प्रतिभाका परिचय दिया था। इसके डरसे यूरोपके अत्याचारी राष्ट्र थर थर काँपा करते थे। यदि आप इस महान वीरका सम्पूर्ण जीवन वृत्तान्त जानना चाहते है तो शीघ्रही इस ग्रन्थको मंगाकर पढ़िये। इस ग्रन्थमें नैपोलियन बोनापार्टका पूरा वृत्तान्त बड़ीही रोचक और मधुर भाषामें लिखा गया है। साथही ११ मन-हरण चित्र लगा ग्रन्थकी शोभा हद दर्जे तक पहुंचा देनेकी चेष्टा की गई है। इसकी उत्तमता इसीसे जानी जा सकती है कि, अल्पही समयमें इसके दो संस्करण बिक चुके हैं। मूल्य २।) रेशमी जिल्द २॥)।

वारांगना रहस्य

वेश्याओंके समस्त भेद, उनकी पुरुषोंके फँसानेकी सब चाल, हाव भाव कटाक्षका पूरा पूरा मतलब, कितने प्रकारकी वेश्यायें होती हैं, सती साध्वी स्त्रियाँ और वेश्याओंके चरित्रमें कितना अन्तर रहता है, वृद्ध वेश्यायें कौन कौनसे भयानक कार्य्य करती हैं। आदि घटनायें सप्रमाण लिखी गई हैं। मूल्य ६ भागका ४॥)।

आदर्श नाता।

यह एक समायिक उपन्यास है। पतित सुधार का अनोखा अन्त्र, हिन्दू समाज की कुरीतियां, दुष्टों की दुष्टता और उसका परिणाम तथा समाजिक त्रुटियोंका ऐसे मजेदार भाव और भाषामें चित्र खींचा गया है, कि आप पढ़कर चकित हो जांयेगे। पुस्त क्या है वर्तमान दशा का सच्चा चित्र है।

पुस्तक एक बार हाथमें लेने पश्चात् छोड़नेको जी नहीं चाहता, कहना व्यर्थ न होगा कि हिन्दी संसारमें यह पुस्तक अपने ढंगकी निराली ही है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ ॥|) है। साथ ही अनेक रंग बिरंगे चित्रोंसे पुस्तककी शोभा अत्याधिक बढ़ा दी गई हैं।

जिस वीर श्रेष्ठ धनुर्धारी अर्जुनने अपने अपूर्व शौर्य्य वीर्य्य से समस्त संसारको चकित कर दिया था, जिसके प्रसिद्ध गांडीव धनुषकी टंकारने महाभारतके युद्धमें बड़े बड़े वीरोंका हृदय दहला दिया था, उसी वीर श्रेष्ठ कुन्ती पुत्र अर्जुनका यह सचित्र और सर्व्वांग सुन्दर जीवन चरित्र प्रत्येक स्त्री पुरुषके देखने योग्य है।

यदि आप अपने बालक बालिकाओंको वीर, साहसी और उद्यमी बनाना चाहते हैं तो आजही इसे मंगाकर पढ़ाइये। मूल्य ॥=)।

"श्रीहरि प्रेस"

हमारे छापेखानेमें सर्व प्रकारका काम बड़ी सफाईके साथ छापा जाता है। हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, आदि भाषाओंके सुन्दर सुन्दर टाइप मौजूद है। परीक्षा करके देखिये।

मैनेजर—

श्रीहरि प्रेस

२०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।

रूसमें युगान्तर।

बोल्शेविक रूसका फड़कता हुआ और जीता जागता चित्र दिखानेवाला सचित्र ऐतिहासिक ग्रन्थ मूल्य २) ।

पता—एस० आर० बेरी एण्ड कम्पनी,
२०१ हरीसन रोड, कलकत्ता ।